भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 344 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज गुरूवार 30 दिसम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

नए साल पर महाराष्ट्र ने जारी कीं गाइडलाइंस

मुंबई। देश में कोरोना वायरस के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। महाराष्ट्र सरकार ने 31 दिसंबर को नए साल के जश्न के लिए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। बंद सभागारों में कार्यक्रमों को 50 प्रतिशत क्षमता भरने की अनुमति दी गई है। वहीं खुले स्थानों में कार्यक्रमों के लिए 25 प्रतिशत क्षमता रखने की अनुमति है। सरकार में मंत्री आदित्य ठाकरे ने कोरोना मामलों पर चिंता जताई और कहा कि पिछले सप्ताह 150 दैनिक केस सामने आ रहे थे अब यह आंकड़ा दो हजार पार कर रहा है। अब प्रदेश की जनता को सतर्क और सावधानी बरतने की जरुरत है। महाराष्ट्र में बढ़ते कोरोना केस उद्धव ठाकरे के लिए चिंता का कारण बने हुए हैं। सरकार ने लोगों से कोविड प्रोटोकॉल का पालन करने का आग्रह किया है। सरकार ने लोगों से नए साल के लिए घर पर ही जश्न मनाने की सलाह दी है। उन्हें समुद्र तट और पार्कों में इकट्ठा होने से बचने के लिए कहा गया है।

दुनिया भर में बुरा गुजरा क्रिसमस वीक, 11% बढ़े कोरोना केस

भारत में तीसरी लहर का खतरा

नई दिल्ली, बर्लिन। कोरोना वायरस के केसों में दुनिया भर में तेजी से इजाफा देखने को मिला है। रविवार को समाप्त हुए वीक में पहले वाले सप्ताह के मुकाबले 11 फीसदी ज्यादा नए केस पाए गए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने बताया कि 20 से 26 दिसंबर के दौरान दुनिया भर में 49 लाख नए कोरोना केस पाए गए हैं। सबसे ज्यादा केस अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस जैसे देशों में मिले हैं। हल्लड ने कहा कि दुनिया भर में अक्टूबर के बाद से ही नए केसों में इजाफा देखने को मिल रहा है। दुनिया भर में बीते एक सप्ताह में जो नए केस मिले हैं, उनके आधे मामले अकेले यूरोप के ही देशों में पाए गए हैं। 2,84 मिलियन मामले मिले हैं। फ्रांस और ब्रिटेन में हालात लगातार बिगड़ रहे हैं। एक तरफ यूके में 1.29 लाख मामले मंगलवार को मिले तो वहीं फ्रांस में 1.80 लाख के करीब नए केस पाए गए हैं। इसके अलावा अफ्रीका में भी नए केसों में 7 फीसदी का इजाफा हुआ है। अफ्रीकी देशों में बीते सप्ताह 275,000 नए केस पाए गए हैं कई देशों में डेल्टा वैरिएंट

से ज्यादा ओमिक्रॉन के मामले बढ़ने के संकेत हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ओमिक्रॉन को लेकर कहा है कि यह गहरी चिंता का विषय है। इस बीच संयुक्त राष्ट्र अमीरात में भी 2,000 नए केस पाए गए हैं। बीते 6 महीनों में पहली बार ऐसा हुआ है, जब मामले 2,000 के पार पहुंचे हैं। भारत में भी लगातार संकट बढ़ता दिख रहा है। ओमिक्रॉन के मामले तेजी से बढ़ते हुए 800 के पार पहुंच गए हैं। राजस्थान में बुधवार को एक साथ 23 नए केस ओमिक्रॉन वैरिएंट के मिले हैं। यही नहीं कोरोना के कुल केस भी बुधवार को 9,000 से ज्यादा सामने आए हैं। इसके चलते एक्टिव केसों की संख्या बढ़ते हुए 77 हजार के पार पहुंच गई है। एक्सपर्ट्स का कहना है कि भारत में यह तीसरी लहर का संकेत हो सकता है, जिसका फरवरी में पीक देखने को मिल सकता है। नए केसों में इजाफे को देखते हुए ही दिल्ली से लेकर महाराष्ट्र और गोवा तक में कई प्रतिबंध लगाए गए हैं। दिल्ली सरकार ने स्कूल, कॉलेज, जिम समेत कई चीजों को बंद कर दिया है। वहीं बसों और मेट्रो में कुल क्षमता के 50 फीसदी के बराबर ही लोग यात्रा कर सकेंगे।

क्रिसमस और नए साल के मौके पर दुनिया भर में कोरोना केसों में इजाफे ने वर्ल्ड इकॉनमी के सामने भी संकट खड़ा किया है। बमुश्किल उबर रही अर्थव्यवस्थाएं एक बार फिर से मंदी के दौर में जा सकती हैं। हालांकि ब्रिटेन, फ्रांस समेत कई देशों ने फिलहाल कड़े प्रतिबंध लगाने से इनकार किया है।

पीएम मोदी की रैली के दौरान कार में तोड़फोड़ करने वालों पर सपा का एक्शन, पार्टी से निष्कासित

कानपुर। कानपुर में पीएम के कार्यक्रम के दौरान पुतला जलाने और बीजेपी का बैनकर लगी कार में तोड़फोड़ करने वाले सपा कार्यकताओं की मुसीबत बढ़ती जा रही है। मामले को बढ़ते देख समाजवादी पार्टी ने अखिलेश यादव के निर्देश पर पांच कार्यकताओं को पार्टी से निष्कासित कर दिया है। यह पांचों कार्यकर्ता चिन केसरवानी, अंकर पटेल, अंकेश यादव, सुकान्त शर्मा तथा सुशील राजपूत हैं। इससे पहले इन सबके करतूतों का वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने इनको गिरफ्तार किया।पुलिस ने बताया कि वायरल वीडियो के आधार पर इन पांच लोगों को गिरफ्तार किया गया है और अन्य की तलाश की जा रही है। पुलिस की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि पीएम मोदी के कार्यक्रम के दौरान हमीरपुर सागर रोड पर समाजवादी पार्टी के कार्यकताओं ने पीएम के कार्यक्रम का विरोध करते हुए पुतला दहन किया। इसके बाद भाजपा के बैनर लगी ऑल्टो कार (यूपी85एके6774) पर पत्थरबाजी की। इसका वीडियो वायरल होने पर पुलिस ने एक्शन लिया और आरोपियों की पहचान करके उन्हें गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ आईपीसी की विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया है। पुलिस ने कहा है कि अन्य आरोपियों की पहचान और गिरफ्तारी की कोशिश की जा रही है। पुलिस ने यह भी कहा है कि जिस कार में तोड़फोड़ की गई है वह अंकुर पटेल की है। नौबस्ता थाना प्रभारी ने मुकदमा कराया है। पुलिस आयुक्त असीम अरुण ने कहा कि कमिश्नरेट पुलिस शांतिपूर्ण चुनाव कराने के लिए प्रतिबद्ध है। ऐसे अपराधी तत्वों पर कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। अभियुक्तों को कानपुर लाकर पूछताछ की जाएगी, जिसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। बीजेपी प्रवक्ता संबित पात्रा ने बुधवार को एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि इस घटना से यह साबित हो गया है कि लाल टोपी खतरे की निशानी है। उन्होंने कहा कि इसके पीछे की सच्चाई अत्यंत गंभीर है।

कांग्रेस को कब तक मिल पाएगा पूर्णकालिक अध्यक्ष, पार्टी के चुनाव प्रमुख मधुसूदन मिस्त्री ने बताया

नई दिल्ली। देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस के एक वरिष्ठ सदस्य ने पार्टी के पूर्णकालिक अध्यक्ष को लेकर एक अहम जानकारी बतायी है। वरिष्ठ सदस्य का कहना है कि कांग्रेस को अगले साल सितंबर तक अपना पूर्णकालिक अध्यक्ष मिल जाएगा। मालूम हो कि पार्टी का नेतृत्व वर्तमान में अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी कर रही हैं, जिन्होंने लोकसभा में हार के बाद अपने बेटे और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के पद से इस्तीफा देने के बाद पदभार संभाला था। कांग्रेस के केंद्रीय चुनाव प्राधिकरण के अध्यक्ष मधुसूदन मिस्त्री ने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए चुनाव प्रक्रिया कांग्रेस कार्य समिति द्वारा तय कार्यक्रम के अनुसार सितंबर तक पूरी कर ली जाएगी। एक समाचार एजेंसी के हवाले से कहा कि कांग्रेस कार्य समिति द्वारा तय कार्यक्रम के अनुसार, कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए चुनाव प्रक्रिया सितंबर तक पूरी हो जाएगी। मालूम हो कि पार्टी को कई राज्यों में अंदरूनी कलह का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा पार्टी के कई वरिष्ठ नेता खुले तौर पर व्यापक बदलाव और एक संगठनात्मक पुनर्गठन की मांग कर रहे हैं। पिछली सीडब्ल्यूसी बैठकों में सोनिया ने कहा था कि कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए आत्म-नियंत्रण, अनुशासन, एकता और पार्टी के हितों को सर्वोपरि रखने की आवश्यकता है। उन्होंने आगे कहा था कि पार्टी ने आगामी चुनावों की तैयारी शुरू कर दी है, लेकिन ₹निस्संदेह, हम कई चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।₹ उन्होंने यह भी कहा था कि यदि ₹हम एकजुट हैं, यदि हम अनुशासित हैं और यदि हम केवल पार्टी के हितों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो मुझे विश्वास है कि हम अच्छा करेंगे।

ओमिक्रॉन संकट के बीच पीएम मोदी का यूएई दौरा स्थगित

नई दिल्ली। दुनियाभर में ओमिक्रॉन का संकट गहराता जा रहा है। इस बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की संयुक्त अरब अमीरात और कुवैत की यात्रा को स्थगित कर दिया गया है। बता दें कि यह दौरा 6 जनवरी को था। साउथ ब्लॉक के सूत्रों के मुताबिक ओमिक्रॉन मामलों की बढ़ती संख्या के कारण इस यात्रा को पुनर्निर्धारित करना होगा और संभवतः फरवरी में आयोजित किया जा सकता है। कोरोनावायरस का ओमिक्रॉन वेरिएंट दुनियाभर में फैला है और यह खतरनाक वेरिएंट संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। अमेरिका में, ओमिक्रॉन अब डेल्टा की जगह लेने वाला प्रमुख वायरस है। यूके में, ओमिक्रॉन के तेजी से प्रसार के कारण कोविड - 19 मामले प्रतिदिन रिकॉर्ड तोड़ रहे हैं।

हसनपुर से आरजेडी विधायक तेज प्रताप यादव के खिलाफ एफआईआर दर्ज

विधानसभा चुनाव में दायर शपथ पत्र में संपत्ति छिपाने का आरोप

रोसड़ा। हसनपुर से आरजेडी विधायक और लालू प्रसाद यादव के बड़े बेटे तेज प्रताप यादव के खिलाफ बुधवार को रोसड़ा थाना में एफआईआर दर्ज कराई गई है। बिहार के पूर्व स्वास्थ्य मंत्री पर बिहार विधानसभा चुनाव 2020 में गलत शपथ पत्र दाखिल कर संपत्ति का ब्योरा छिपाने का आरोप है। हसनपुर विधानसभा के निवार्ची पदाधिकारी सह प्रभारी भूमि सुधार उप समाहर्ता एसडीओ ब्रजेश कुमार के आवेदन पर लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 125 क के अधीन रोसड़ा थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई है। प्राथमिकी के लिए दिए गए आवेदन में कहा गया है कि बिहार विधानसभा निर्वाचन 2020 के द्वितीय चरण की अधिसूचना के अंतर्गत 140 हसनपुर विधानसभा क्षेत्र के लिए 13 अक्टूबर 2020 को तेज प्रताप यादव ने राष्ट्रीय जनता दल अभ्यर्थी के रूप में नामांकन पत्र दाखिल किया था। नामांकन के दौरान तेज प्रताप द्वारा दाखिल किए गए शपथ पत्र में अचल संपत्ति के संबंध में सूचना छिपाने की शिकायत बिहार प्रदेश जनता दल यू ने मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, बिहार से की थी।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, बिहार ने 04 नवंबर 2020 को उक्त शिकायत की प्रति भारतीय निर्वाचन आयोग को भेजी थी। जिस पर भारतीय निर्वाचन आयोग ने इसके जांच के लिए केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) को लिखा। सीबीडीटी ने इस मामले की जांच कर अपने तीन पत्रों के माध्यम से बताया कि बिहार विधानसभा निर्वाचन 2015 और 2020 के लिए तेज प्रताप यादव की ओर से दाखिल किए गए शपथ पत्रों के बीच परिसंपत्तियों (चल व अचल) में 82,40867 रुपए की वृद्धि हुई, जबकि वित्तीय वर्ष 2015-16 से 2016-20 तक आयकर विवरणियों हिसाब से कुल आय 22,76220 रुपए बनती है।

जदयू की ओर से दर्ज कराई गई शिकायत में जिन परिसंपत्तियों का जिक्र किया गया है, जांच के क्रम में उसे गोपालगंज जिले में होना बताया गया है। उक्त संपत्ति सब-रजिस्ट्रार के रिकॉर्ड में तेज प्रताप यादव के नाम पंजीकृत है। जो तेज प्रताप यादव के द्वारा चुनाव दाखिल शपथ पत्र में उल्लिखित परिसंपत्तियों से मेल नहीं खाती है। सीबीडीटी के जांच प्रतिवेदन के आधार पर निर्वाचन आयोग की ओर से आरजेडी नेता को कारण बताओ नोटिस भी जारी किया गया और नोटिस प्राप्ति के तीन सप्ताह के अंदर उन्हें अपना जबाब देने को कहा गया।

पंजाब में कोई रिस्क नहीं लेना चाहती आप, हर सीट पर विधायक और सीनियर नेता होंगे तैनात

नई दिल्ली। पंजाब में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी कोई भी रिस्क नहीं लेना चाहती है। यही वजह है कि आप पंजाब के 117 विधानसभा सीट में से हर एक सीट के प्रबंधन के लिए विधायक और पार्टी के सीनियर नेताओं के हाथों

में सौंपेगी। प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र के लिए कम से कम एक नेता की प्रतिनियुक्ति की जाएगी। हालांकि कुछ निर्वाचन क्षेत्रों को नेताओं को सौंपा दिया गया है, शेष सीटों के प्रबंधन के लिए इस वर्ष के अंत से पहले अंतिम रूप दिया जाएगा।

हाल ही में केंद्रीय स्तर पर वरिष्ठ नेताओं की बैठक में निर्वाचन क्षेत्रों के प्रबंधन की रणनीति तैयार की गई थी। दिल्ली आप विधायक और पंजाब मामलों के सह-प्रभारी राघव चड्ढा राज्य के प्रमुख वरिष्ठ नेताओं के समर्थन से रणनीतियों को लागू करने की अगुवाई में हैं। द ट्रिब्यून में छपी एक रिपोर्ट के मुताबिक आप के राज्यसभा सांसद सुशील गुप्ता ने कहा, ₹आप कोई कसर नहीं छोड़ेगी। पंजाब के लोग आप के राष्ट्रीय संयोजक और दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर पहले ही प्यार और स्नेह बरसा चुके हैं। उन्होंने उनके प्रशासनिक कौशल की सराहना की है। केजरीवाल के करीबी सूत्रों ने कहा कि कांग्रेस द्वारा दलित सिख चरणजीत सिंह चन्नी को मुख्यमंत्री बनाए जाने के बाद शुरू में पार्टी अस्थायी रूप से बैकफुट पर थी। पार्टी ड्राइंग बोर्ड में गई और चुनाव के लिए नए सिरे से योजना बनाई। रिपोर्ट्स के मुताबिक गुप्ता ने कहा, ₹पंजाब के लोग आप सरकार चाहते हैं। इसलिए पार्टी चुनावी लड़ाई के लिए एक प्रभावी रणनीति की कमी नहीं पाएगी। प्रत्येक निर्वाचन क्षेत्र को एक नेता के प्रभार में रखने के अलावा आप के केंद्रीय नेतृत्व ने स्थानीय नेतृत्व को सबसे आगे रहने और पार्टी के चुनावी अभियान का नेतृत्व करने की अनुमति देने का फैसला किया है। चुनाव प्रचार तेज होने के साथ ही इस रणनीति पर बीच में ही समीक्षा की जाएगी। आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने अब तक दिल्ली की पार्टी चुनावी प्रयोगशाला से चुनावी रणनीति तैयार कर ली है। पार्टी चंडीगढ़ में हाल के स्थानीय चुनावों में अपने बेहतरीन प्रदर्शन से उत्साहित है।

लुधियाना बम ब्लास्ट: जर्मनी से भारत तक कनेक्शन, जेल से मिले 7 मोबाइल, आरोपी ने भी किया था इस्तेमाल

लुधियाना। पंजाब के लुधियाना कोर्ट में हुए बम ब्लास्ट का कनेक्शन जर्मनी से भारत तक नजर आ रहा है। पुलिस सूत्रों ने बुधवार को कहा कि लुधियाना अदालत परिसर विस्फोट की घटना की जांच कर रही जांच एजेंसियों ने शहर की केंद्रीय जेल से सात मोबाइल फोन बरामद किए हैं, जिनमें से कुछ आरोपी द्वारा इस्तेमाल किए गए थे। उन्होंने कहा कि फोन को आगे की जांच के लिए फोरेंसिक लैब भेज दिया गया है। 23 दिसंबर को हुए विस्फोट में बर्खास्त पंजाब पुलिस के सिपाही गगनदीप सिंह की मौत हो गई थी। इस घटना में छह अन्य घायल हुए थे। पुलिस के मुताबिक गगनदीप बम असेंबल करने के लिए कोर्ट परिसर के वॉशरूम में गया था। 2019 में सेवा से बर्खास्त किए गए गगनदीप ने ड्रग से जुड़े एक मामले में लुधियाना की जेल में दो साल बिताए थे। सूत्रों ने बताया कि इसी जेल में बंद गगनदीप के साथ दो अन्य रंजीत सिंह और सुखविंदर सिंह भी कथित तौर पर इन फोन का इस्तेमाल करते थे।

उन्होंने बताया कि रंजीत और सुखविंदर को पूछताछ के लिए प्रोडक्शन वारंट पर लाया गया है। जांच के दौरान पता चला है कि इन मोबाइल फोनों से कुछ अंतरराष्ट्रीय कॉल भी किए गए थे। पुलिस सूत्रों ने कहा कि इनमें से दो फोन का इस्तेमाल गगनदीप ने जेल में रहने के दौरान बड़े पैमाने पर किया था। गगनदीप सितंबर में जमानत पर छूट कर आया था। लुधियाना बस स्टैंड और सड़क किनारे लगे कैमरों से मिले सीसीटीवी फुटेज के मुताबिक, गगनदीप ने 23 दिसंबर को खन्ना से लुधियाना पहुंचने के लिए बस का इस्तेमाल किया था। जांच एजेंसियों ने गगनदीप की पत्नी से भी पूछताछ की है। उन्होंने पुलिस में सेवारत उसकी प्रेमिका से भी पूछताछ की। लुधियाना जाने से पहले गगनदीप उसके साथ एक होटल में रुका था। पुलिस पुलिस विभाग में गगनदीप के दोस्तों से भी पूछताछ कर रही है, जिनसे वह सेवा से बर्खास्त होने के बाद अक्सर मिलता था। अधिकारियों ने मंगलवार को कहा था कि विशेष रूप से, जर्मन अधिकारियों ने भारत से खुफिया सूचनाओं के आधार पर कथित तौर पर सिख फॉर जस्टिस (एसएफजे) से संबंधित एक व्यक्ति को हिरासत में लिया है, जो लुधियाना में बम विस्फोट के पीछे संदिग्ध संगठन है। उन्होंने कहा कि जसविंदर सिंह मुल्तानी के रूप में पहचाने जाने वाले व्यक्ति को जर्मनी के एक शहर में हिरासत में लिया गया था। भारत ने इसको लेकर बर्लिन में अधिकारियों के साथ खुफिया जानकारी साझा की थी, जिसमें भारत में आतंकी हमलों की योजना बनाने में उसकी कथित भूमिका के बारे में भी बात कही गई थी। मुल्तानी के खिलाफ पंजाब में दो प्राथमिकी दर्ज की गई हैं।

पहले येदियुरप्पा को हटाया, अब तीन बार मंत्री बन चुके नेताओं को भी हटाने के संकेत

नई दिल्ली। कर्नाटक के भाजपा विधायक एम पी रेणुकाचार्य ने बुधवार को कहा कि भाजपा सरकार (2004, 2008, 2018) में तीन बार मंत्री बने सीनियर्स को स्वेच्छा से इस्तीफा दे देना चाहिए और बसवराज बोम्मई के नेतृत्व वाली सरकार में नए चेहरों को शामिल किया जाना चाहिए। कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई के राजनीतिक सचिव एम पी रेणुकाचार्य ने नेताओं से स्वेच्छापूर्वक इस्तीफा देने और पार्टी के लिए समर्पित होने को कहा। उन्होंने कहा, ₹हमारे ज्यादातर विधायक गुजरात मॉडल की तर्ज पर कैबिनेट गठन चाहते हैं। जो अभी मंत्री बने हैं उनको छोड़कर, जो भाजपा के सत्ता में रहते हुए तीनों कार्यकालों में मंत्री रहे हैं, उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए। नए चेहरे और नए विचार सरकार और पार्टी की छवि को निखारेंगे। रेणुकाचार्य ने कहा कि मैं तीन बार मंत्री रहे (2004, 2008, 2018) नेताओं से अनुरोध करता हूँ कि वे स्वेच्छा से मंत्री पद से इस्तीफा दें और चुनाव के काम में संगठन के लिए अपना समय दें। इससे नये नेताओं को मंत्री बनने का मौका मिलेगा और यह पार्टी तथा सरकार दोनों के लिए बेहतर होगा। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे पर विधायकों से

बातचीत की गयी है और वे लोग इस संबंध में पार्टी के वरिष्ठ नेताओं सहित पार्टी अध्यक्ष तथा मुख्यमंत्री से मुलाकात करेंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई अपने पद पर बने रहेंगे। पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं वरिष्ठ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता बासनगौड़ा पाटिल यत्नाल ने मंगलवार को कहा कि मंत्रिमंडल में सुधार होने वाला है और बोम्मई को मुख्यमंत्री पद से बदलने को लेकर सार्वजनिक बयान देने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जायेगी।

खबर संक्षेप

18 प्रशिक्षित छात्रों को मिला मेले में रोजगार

सहसों। सहसों स्थित छत्रपति प्राइवेट आई टी आई कॉलेज में प्रबंधक अनिरुद्ध सिंह पटेल की देखरेख में रोजगार मेले का आयोजन किया गया। जिसमें छात्र छात्राओं का साक्षात्कार विभिन्न कंपनियों ने लिया। जिसमें 18 प्रशिक्षित छात्रों को रोजगार मिला। बुधवार को विद्यालय परिसर में हरियाणा की तीन कंपनियों द्वारा 100 छात्र छात्राओं का साक्षात्कार लिया गया। जिसमें 18 प्रशिक्षित छात्रों को कंपनी ने योग्यता के आधार पर रोजगार प्रदान किया। इस अवसर पर प्रधानाचार्या मंजू सिंह ने रोजगार प्राप्त छात्रों को बधाई दी तथा अन्य प्रशिक्षित छात्र छात्राओं को रोजगार के लिए रोजगार मेला आयोजित करने का आश्वासन दिया।

बार एसोसिएशन बारा चुनाव में विजयशंकर सिंह अध्यक्ष व जय शुक्ला बने महामंत्री

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़/बारा। बार एसोसिएशन बारा का चुनाव बुधवार को कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच करवाया गया। चुनाव अधिकारी ने बताया कि इस चुनाव में 156 मतदाताओं के सापेक्ष 154 मतदाताओं ने अपने अधिकार का प्रयोग किया। चुनाव के उपरांत परिणाम घोषित किया गया, जिसमें अध्यक्ष पद पर विजयशंकर सिंह और महामंत्री के पद पर जय शुक्ला ने जीत दर्ज की।

बारा तहसील परिसर में हुए चुनाव में चुनाव अधिकारी की भूमिका गया प्रसाद त्रिपाठी, सुनीत कुमार श्रीवास्तव और समर जीत सिंह ने निभाई। चुनाव अधिकारी गया प्रसाद त्रिपाठी ने बताया कि चुनाव पूरी निष्पक्षता से शांतिपूर्ण माहौल में करवाया गया। मतगणना में अध्यक्ष पद पर 105 मत पाकर विजयशंकर सिंह निर्वाचित घोषित किए गए। जबकि अध्यक्ष पद पर दूसरे स्थान पर कृष्णकांत मिश्र रहे। इसी तरह महामंत्री पद के लिए जय शुक्ला ने 62 मत पाकर जीत दर्ज कराई। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी प्रदीप कुमार मिश्र को 13 मतों से हराया। तीसरे प्रत्याशी रत्नाकर सिंह को 42 मतों से संतोष करना पड़ा। इसी क्रम में कोषाध्यक्ष पद पर दिनेश चंद्र यादव ने 84 मत पाकर जीत दर्ज की। दिनेशचंद्र ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी अनिल कुमार द्विवेदी को 14 मत के अंतर से पराजित किया। सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने के लिए इंस्पेक्टर बारा कमलेश कुमार पुलिस फोर्स के साथ चुनाव प्रक्रिया संपन्न होने तक मौजूद रहे।

बार एसोसिएशन बारा के चुनाव में विजयी अधिवक्ता गण

दिव्यांगजनों को मिला सहारा, बांटे गए सहायक उपकरण

दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग की ओर से ब्लाक मुख्यालय शंकरगढ़ पर बांटी गई ट्राईसाइकिल

शंकरगढ़। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के बैनर तले बुधवार को सहायक उपकरणों का वितरण किया गया। ब्लाक मुख्यालय शंकरगढ़ पर आयोजित कार्यक्रम में ट्राईसाइकिल, व्हील चेयर, स्मार्ट केन समेत अन्य उपकरण जरूरतमंदों को दिए गए। दिव्यांगों को समाज की मुख्य धारा से जोड ?, उनका जीवन सरल बनाने और कठिनाइयों को कम करने के उद्देश्य से दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा संचालित कृत्रिम अंग-सहायक उपकरण योजना के तहत सहायक उपकरणों का वितरण किया गया। क्षेत्र पंचायत प्रमुख निर्मला देवी और जिला दिव्यांजन सशक्तिकरण अधिकारी नंद किशोर ने 50 ट्राईसाइकिल, दो व्हील चेयर और दो स्मार्ट केन का वितरण किया। जिला दिव्यांगजन अधिकारी ने बताया कि इस तरह का आयोजन आगे भी किया जाएगा। कार्यक्रम में एडीओ (पंचायत) रवींद्रनाथ कुशवाहा, भाजपा मंडल अध्यक्ष कुलदीप सिंह पटेल आदि मौजूद रहे। अंत में जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी नंद किशोर याज्ञिक ने सभी के प्रति आभार जताया।

दिव्यांगजनों को वितरित करते ट्राईसाइकिल

न्यूज झरोखा

प्रतापपुर भाजपा महिला मोर्चा ने किया संपर्क कार्यशाला का आयोजन

प्रतापपुर। भाजपा मंडल प्रतापपुर महिला मोर्चा की विधानसभा महिला संपर्क कार्यशाला ब्लॉक सभागार में आयोजित की गयी। कार्यशाला की मुख्य अतिथि प्रदेश मंत्री कविता यादव त्रिपाठी व विशिष्ट अतिथि जिलाध्यक्ष महिला मोर्चा गंगापार आरती अग्रवाल रही तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष दीपिका सिंह ने किया।बैठक का संचालन भाजपा प्रतापपुर के मंडल अध्यक्ष पं. आशुतोष त्रिपाठी ने किया कार्यक्रम में ब्लाक प्रमुख शैलेश यादव, जिला उपाध्यक्ष महिला मोर्चा रीताराज, रागिनी सिंह, मंडल महामंत्री भाजपा पंडित श्यामधर शर्मा, मंडल मंत्री विनय दुबे, युवा मोर्चा महामंत्री वैभव सिंह, ममता देवी, फूला देवी, कुसुम देवी, शिवानी केशरवानी सहित तमाम भाजपा व महिला मोर्चा के पदाधिकारी कार्यकर्ता उपस्थित रहे उक्त जानकारी प्रतापपुर मंडल के मीडिया प्रभारी आचार्य मयंक मिश्र ने दिया।

विधायक बारा डॉ अजय ने गांवों में जन सम्पर्क कर सरकार की योजनाएं बताई

घूरपुर। बारा विधायक डॉ अजय कुमार ने क्षेत्र के दर्जनों गांवों में सामाजिक संपर्क अभियान के तहत भ्रमण करते हुए लोगों को सरकार की उपलब्धियों व योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी ।बारा विधायक डॉ अजय कुमार बुधवार के दिन बीकर ,मोहिनीकापूरा ,कंजासा,जगदीशपुर,कचरा, बरहुला ओझपट्टी, गोझवार,बेलामुण्डी, मझियारी ,पचवर आदि गांवो में जनसंपर्क कर सरकार की नीतियों व योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी ।इस मौके शिवयस पांडेय,मोहन यादव,वंदना सिंह,तीरथ कपुरिहा,जितेंद्र शुक्ल,हरीराम त्रिपाठी आदि कई लोग साथ रहे।

वृक्ष जीवन का अटूट हिस्सा : राम चरण बिन्द

जसरा। पेड़ केवल पर्यावरण सुधार ही नहीं बल्कि हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। बिना वृक्षों के स्वस्थ एवम सुखमय जीवन की कल्पना करना संभव नहीं हैं। आज दुर्भाग्य हैं विकास के नाम पर अंधाधुंध पेड़ काटें जा रहें हैं किन्तु उनके स्थान पर न तों वृक्ष लगाये जा रहें हैं और न ही पौधों कों संरक्षित किया जा रहा हैं जिसका परिणाम निकट भविष्य मे काफी भयावह एवम कष्टकारी होंगें उक्त अनमोल उदगार कौधियारा स्थित एक इंटर कालेज के सेवानिवृत शिक्षक रामचरण बिन्द बुधवार कों वृक्षारोपण एवम मतदाता जागरूकता अभियान मे बतौर मुख्य अतिथि बोल रहें थे।अपने सम्बोधन मे उन्होंने लोगों से बिना किसी दबाव के भयमुक्त होकर मतदान करने का भी आवाहन करते हुए अधिक से अधिक लोगों कों मतदान करने के लिए भी प्रेरित किये। श्री रामचरण बिन्द कौधियारा लगभग डेढ़ से पौने दो बीघे मे फल, औषधि एवम छायादार पेड़ो कों लगाये हैं। कार्यक्रम संयोजक युवा समाजसेवी अभिषेक सिंह पटेल ने मतदान की अपील के साथ बोले कि समाज मे पूर्व सेवानिवृत शिक्षक रामचरण बिन्द युवाओं के प्रेरणास्त्रोत हैं जिन्होंने सदैव समाज के लिए नेक प्रयास भी किये हैं।उक्त अवसर पर चन्द्रभान बिंद,बिब्बो, सिब्बो,दीक्षमान समेत अन्य ग्रामीण उपस्थित रहें।

कोरोना वैरीयर्स आशाओं ने सीएम को भेजा अपनी मांगों के लिए पोस्ट कार्ड

अखंड भारत संदेश

आशाओं को राज्य स्वास्थ्य कर्मचारी का दर्जा देने की मांग

आशाएं 4 जनवरी 2022 को प्रयागराज जिला मुख्यालय पर करेंगी विशाल धरना प्रदर्शन

कोरांव। बुधवार को कोरांव सीएचसी के विभिन्न गांवों की आशाओं ने मुख्यमंत्री योगी जी को सामुहिक रूप से अपनी मांगों के लिए पत्र/पोस्ट कार्ड भेजा, उत्तर प्रदेश आशा वर्कर्स यूनियन सम्बद्ध ऐक्टू द्वारा राज्यव्यापी आह्वान पर विगत 15 दिसम्बर से जारी मुख्यमंत्री को भेजो एक लाख पत्र/ पोस्ट कार्ड के भेजने के लक्ष्य के तहत कोरांव डाकघर से सैकड़ों पोस्ट कार्ड भेजा गया।

ऐक्टू राष्ट्रीय सचिव डॉ कमल उसरी ने कहा* कि आशाओ ने कोरोना वैरीयर्स के रूप में कोविड जैसी वैश्विक महामारी के समय अपने जान की परवाह किए बगैर देश हित में, समाज हित में काम किया, लेकिन सरकार उन पर कोई ध्यान नहीं दे रही है, अभी सरकार ने अमोक्रिन वेरियंट यानी कोरोना की तीसरी लहर के नाम पर नाइट कर्फ़्यू शुरू कर दिया है, यदि कोई अनहोनी की स्थिति बनेगी तो यही आशाएं पुनः अपना जीवन दाव पर लगा काम करेगी। सरकार को कठिन परिश्रम करने वाली कोरोना वैरीयर्स आशाओं को राज्य स्वास्थ्य कर्मचारी का दर्जा देना चाहिए, उन्हें न्यूनतम 21 हजार वेतनमान देना चाहिए, आशाओं का 50 लाख का जीवन बीमा और 10 लाख का स्वास्थ्य बीमा करना चाहिए। आशाओं ने संयुक्त रूप से कहा यदि सरकार द्वारा हमारी मांगो को नही माना जायेगा, तो हम सभी आशाओं की त?फ से शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक तरीके से 4 जनवरी 2022 को प्रयागराज जिला मुख्यालय पर स्थिति धरना स्थल, पत्थर गिरजा, सिविल लाइंस में विशाल धरना प्रदर्शन किया जायेगा,पोस्ट कार्ड भेजने में मुख्य रूप से आशा रेखा सिंह पटेल, सीता देवी, श्यामकली, चन्द्रावती आदि शामिल रहीं।

मेजा ऊर्जा निगम के आंदोलनरत कर्मियों के बीच पहुंचे समाजवादी नेता नरेन्द्र सिंह

अखंड भारत संदेश

बोले हर कमजोर और जरूरतमंद के लिए खड़ी है सपा

धरना प्रर्दशन की अगुवाई करते सपा नेता नरेन्द्र सिंह

मेजा। मेजा ऊर्जा निगम के अन्तर्गत काम कर रही आकालोजिस्टिक कम्पनी मे कार्यरत संविदा कर्मियों का धरना.प्रर्दशन बुधवार को अपने चरम पर तब पहुँच गया जब क्षेत्र के वरिष्ठ समाजवादी नेता व सपा के प्रदेश सचिव नरेन्द्र सिंह धरना स्थल पर पहुंचे। आंदोलनरत संविदा कर्मियों की समस्याओं को जान वह खुद धरना स्थल पर बैठे और धरनारत कर्मचारियों का साथ देते हुए भरोसा दिया कि समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव जी हमेशा कमजोर वर्ग और हर जरूरतमंद के लिये फिक्रमंद रहकर हम जैसे कार्यकताओं को संघर्ष के लिए मुस्तैद रहने के लिये सचेत करते रहते हैं। नरेन्द्र सिंह ने धरनारत कर्मचारियों का हौसलाअफजाई करते हुए कहा कि आप की प्रत्येक समस्याओं के समाधान तक समाजवादी पार्टी आपसबके साथ है। सपा प्रदेश सचिव नरेन्द्र सिंह ने यनटीपीसी के सीईओ राजेश कुमार से तथा उपश्रमायुक्त राकेश द्विवेदी से फोन पर बात भी किया और शीघ्र कर्मचारियों की समस्याओं को सुलझाने का आग्रह किया। सपा नेता श्री सिंह को मेजा ऊर्जा निगम के सीईओ ने सकारात्मक पहल करने का आश्वासन दिया। इस मौके पर लाल पुष्प राज सिंहए प्रदीप सिंहए सूर्य यादवए शिव राम पटेलए अखंड प्रताप यादवए रिंकू यादवएअजय वीर यादवए संजय कुमारए अरविंद पटेलए शशांक मिश्राए जितेंद्र यादवए विक्रांतएराजेंद्र कुमारए निर्मल कुमार यादवए अरविंदए विजुलीए अनूपए अमित कुमार सहित सैकड़ों कर्मचारी मौजूद रहे।

ग्राम प्रधानों का शोषण बर्दाश्त नहीं : शहजादे

अखिल भारतीय प्रधान संगठन उत्तर प्रदेश प्रयागराज मंडल के मंत्री ने प्रधानों के सहयोग के लिए कसी कमर

अखंड भारत संदेश

कोरांव। अखिल भारतीय ग्राम प्रधान संगठन उत्तर प्रदेश प्रयागराज मंडल अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे ग्राम पंचायत प्रधान अल्हवा ब्लॉक कोराव ने ग्राम प्रधानों की ब्लाकों थाना पुलिस और तहसीलों में हो रही अनदेखी तथा शोषण एवम कुछ ग्राम विकास अधिकारियों द्वारा की जा रही मनमानी,धोखाधड़ी,अनदेखी आदि समस्याओं पर निंदा करते हुए कहा कि ग्राम प्रधानों का शोषण बर्दाश्त नहीं किए जायेगा।

उक्त बातें श्री शहजादे मंत्री प्रधान संगठन ने कोरांव ब्लॉक के कई ग्राम प्रधानों के साथ कुछ ग्राम विकास एवं ग्राम पंचायत विकास अधिकारियों द्वारा मनमानी शोषण अनदेखी तथा बिना सहमति जानकारी के डोंगल द्वारा धनराशि निकाल लिए जाने और राज्य पंद्रहवां केंद्रीय वित्त की धनराशि से कराए गए कार्यों सामग्रियों का भुगतान न कराए जाने आधा कमीशन लिए बिना भुगतान आदि कार्यवाही न किए जाने की शिकायतों को गंभीरता से लिया है। श्री शहजादे ने प्रदेश उपाध्यक्ष सत्येंद्र त्रिपाठी के निर्देश पर समस्या ग्रस्त उपेक्षित ग्राम पंचायत गणिया मुरलीपुर, छापर हरदौन, पैंतिहा, पियरी, महुली, देवघाट आदि ग्राम प्रधानों क्रमशः से बातचीत की,और सर्व प्रथम ब्लॉक के बी डी ओ से वार्ता कर तीन दिन के अंदर समस्या का समाधान न किए जाने पर ब्लॉक में ताला बंदी की घोषणा की। श्री शहजादे ने कहा कि ग्राम पंचायत प्रधान और सचिव के जो रिश्ते हैं उसका उल्लंघन नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि कुछ सचिव ऐसे हैं जो निरीह,अनपढ़,और महिला जैसे कुछ ग्राम प्रधानों की अज्ञानता का बेंजा लाभ उठा रहे हैं। जो अनुचित है। संगठन के मंत्री ने कहा कि ग्राम पंचायत सचिव और प्रधान गांव के विकास की मुख्य धुरी हैं। हर प्रधान सोंचता है कि अपने कार्यकाल को जनता से किए गए वायदों का निर्वहन समुचित ढंग से विकास करके पूरा करा सकें। उन्होंने कहा कि संगठन ऐसे सोषित प्रधानों के साथ खड़ा रहेगा। शहजादे ग्राम प्रधान अल्हवा संगठन के इलाहाबाद मंडल के मंत्री एवं मिस्कीन सेवा संस्थान ट्रस्ट के प्रबंधक सचिव तथा ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन के जिला उपाध्यक्ष ने कहा कि जिस तरह से ग्राम्य विकास कार्यों में अनुचित कमीशन खोरी चल रही है वह बहुत ही दुर्भाग्य पूर्ण है।

अहद अहमद सिद्दीकी उर्फ शहजादे

प्रभाकर वर्मा प्रधान मुरलीपुर

डा. लाला सिद्दीकी प्रधान संसारपुर

विमल चंद्र मौर्य प्रधान पियरी

सद्दाम प्रधान पैंतिहां

मुरारी लाल मौर्य प्रधान प्रतिनिधि महुली

क्या बोले ग्राम प्रधान गण...

ग्राम प्रधान महुली मुरारी मौर्य,पियरी विम चंद्र मौर्य, गणिया मुरलीपुर प्रभाकर वर्मा, देवघाटशिवलाल भारतीय, पैंतीहा सद्दाम,छापर हरदौन राजेश कुमार आदि, ग्राम प्रधानों का कथन है कि यदि पंचायतीराज ऐक्ट में प्रधानों का कोई विकास कार्य ग्राम के संचालन क्रियान्वयन में रोल नहीं है तो ब्लॉक और जिले के विकास और पंचायतीराज विभाग के अधिकारी उक्त ग्रामों के सचिव को ही पूरा चार्ज दे दें। क्योंकि उक्त ग्राम पंचायतों के श्रमिक मजदूरी भुगतान से ले कर सप्लायर तक परेशान हैं। क्या वो सचिव बी डी ओ और जिला पंचायत अधिकारी से बढ़ कर पावर फुल है? प्रधानों का कथन है कि यदि अधिकारी नहीं हटाते उक्त सचिव को तो हम लोग ब्लॉक के अफसरों को ही दाइत्व दे देंगें। वही गांव का विकास करें।

शिवलाल भारतीय प्रधान देवघाट

राजेश कुमार प्रधान छापर हरदौन

बोले खंड विकास अधिकारी

में आगरा में हूं,आते ही उक्त समस्या का समाधान करूंगा,इसके बावजूद यदि मनमानी करेगा कर्मचारी तो विभागीय कार्यवाही होगी,प्रधानों की समस्या हल करूंगा।

मुकेश कुमार सिंह
खंड विकास अधिकारी कोराव
प्रयागराज

महबूब उस्मानी राष्ट्रीय सचिव व किताब अली के प्रदेश सचिव बनाए जाने पर सपाइयों ने दी बधाई

कोरांव। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के दिशा निर्देश पर वरिष्ठ सपा नेता महबूब उस्मानी को राष्ट्रीय सचिव समाजवादी पार्टी अल्पसंख्यक सभा और किताब अली एडवोकेट को प्रदेश सचिव समाजवादी पार्टी अल्पसंख्यक सभा बनाए जाने पर सपाइयों ने बधाई दिया है। जैसे ही दोनों वरिष्ठ नेताओं के मनोनयन का खबर स्थानीय सपा पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं को हुआ वैसे ही दोनों नेताओं को बधाई देने का सिलसिला निकल पड़ा। इस मौके पर नवनियुक्त राष्ट्रीय सचिव महबूब उस्मानी ने कहा कि समाजवादी पार्टी सभी वर्ग और धर्म को मानने वाली प्रदेश की इकलौती पार्टी है और जिस तरह से पार्टी ने अल्पसंख्यक समाज से आने वाले एक आम कार्यकर्ता को राष्ट्रीय सचिव जैसे अहम पद पर नियुक्त करके प्रदेश ही नहीं देश में पहचान देने का कार्य किया है उसका सदैव आभारी रहूंगा।

इसी क्रम में नवनियुक्त प्रदेश सचिव समाजवादी पार्टी एडवोकेट किताब अली ने समाजवादी पार्टी के शीर्ष नेतृत्व को बधाई देते हुए कहा कि पार्टी ने जो जिम्मेदारी दिया है उसका पूरी निष्ठा और ईमानदारी से निर्वहन करुंगा और पार्टी कार्यकताओं के मान एवं सम्मान के लिए हर संभव लड़ाई लड़ने के लिए सदैव तत्पर रहूंगा। मेहताब खान नगर पंचायत अध्यक्ष कोरांव समाजवादी पार्टी ने कहा कि दोनों वरिष्ठ नेताओं को पार्टी द्वारा जिम्मेदार पदों पर नियुक्त किए जाने से आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है की पार्टी को मजबूती मिलेगी और कार्यकताओं में ऊर्जा का संचार होगा। बधाई देने वालो में मुख्य रूप से सोमदत्त सिंह पटेल जिला पंचायत सदस्य राजेश पांडे जिला सचिव ओमप्रकाश केसरी पूर्व चेयरमैन प्रतिनिधि ओम सहाय रामदेव निडर रामकृपाल कोल पूर्व विधायक लालजी पाल निराला प्रमोद मिश्र पयासी दिनेश पटेल सुमन कोल जिला पंचायत सदस्य शहादत अली शफात अली नौशाद अंसारी एड.हारुन अंसारी आशीष मिश्रा विधानसभा उपाध्यक्ष आशीष मिश्रा जिला महासचिव प्रबुद्ध सभा इसराइल अली विजय भारतीय प्रदेश सचिव लोहिया वाहिनी हरे कृष्ण यादव उर्फ ओझा रामानुज यादव प्रधान संघ अध्यक्ष यादवेंद्र अहीर आदि रहे।

जसरा ब्लाक के सचिव ग्राम प्रधान से लेते हैं अतिरिक्त सुविधा शुल्क

अखंड भारत संदेश

ना देने में फंसा देने की करते हैं बात ग्राम प्रधान ने लगाया आरोप

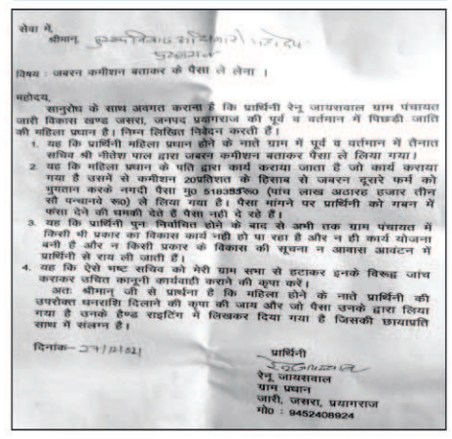

जारी। विकासखंड जसरा के अंतर्गत ग्राम सभा जारी की वर्तमान ग्राम प्रधान रेनू जयसवाल ने आरोप लगाया कि सचिव नितेश पाल द्वारा जबरन कमीशन बता कर पैसा ले लिया गया उसमें से कमीशन 20% के हिसाब से जबरन दूसरे फर्म को भुगतान करके नगदी पैसा पांच लाख अट्ठारह हजार 395 रुपए ले लिया उक्त प्रधान द्वारा पैसा मांगने पर सचिव द्वारा फंसा देने की धमकी देते हैं ग्राम प्रधान पुनः निर्वाचित होने के बाद से अभी तक ग्राम पंचायत में किसी भी प्रकार के विकास कार्य नहीं हो पा रहा है और ना ही कार्य योजना बनी है और ना किसी भी प्रकार के विकास की सूचना आवास आवंटन में राय ली जाती है ऐसे भ्रष्ट सचिव को मेरी ग्राम सभा से हटाकर इन के विरुद्ध जांच कराई जाए मेरे द्वारा पत्र के माध्यम से मुख्य विकास अधिकारी जनपद प्रयागराज जिला पंचायत राज अधिकारी जनपद प्रयागराज खंड विकास अधिकारी जसरा सहायक विकास अधिकारी पंचायत जसरा को लिखित पत्र के माध्यम से अवगत किया गया है और जब पत्रकारों ने सचिव से फोन में बात कर जानकारी लेनी चाही तो उनका कहना है कि आप लोग इनके चक्कर में ना पड़े उल्टा तुम्हारे ऊपर दिक्कत आ जाएगी सचिव का यह भी कहना है कि कई को ट्रांसफर करा चुके हैं हम को हटाने के लिए धूल पैंतरा कर रहे हैं आरोप-प्रत्यारोप अनावश्यक लगाया जा रहा है और कोई बात नहीं है तो वही ग्राम प्रधान ने कहा कि इस संबंध में यह तो जांच का विषय है।

नामदेव दर्जी समाज का गठन का विस्तार एवं जनसंपर्क दौरा संपन्न

अखंड भारत संदेश

जारी। दिन सोमवार को राधेश्याम नामदेव संरक्षक नामदेव दर्जी समाज राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग सदस्य ने यमुनापार अपने समाज के बिरादरीयो से जनसंपर्क के माध्यम से बैठक कर सभी समाज के लोगों को जागरूक किया और जगह जगह माल्यार्पण का कार्यक्रम रखा गया जिसमें उनका स्वागत और अभिनंदन समाज के लोगों ने किया।

मंत्री जी के साथ सर्किट हाउस से संगठन के कार्यकर्ता राज किशोर नामदेव प्रदेश कार्यवाहक, अध्यक्ष भाई लाल नामदेव, प्रयागराज मंडल संरक्षक मंत्री प्रतिनिधि ज्ञानेंद्र प्रकाश, प्रयागराज मंडल अध्यक्ष संजीव कुमार प्रयागराज अध्यक्ष एवं प्रयागराज मीडिया प्रभारी नीरज पत्रकार जारी बाजार ने सभी समाज बंधुओं से मिला उक्त जानकारी देते हुए जनप्रतिनिधियों से पहली बैठक प्रयागराज सिविल लाइन प्रदेश कार्य वाहक अध्यक्ष राज किशोर नामदेव के घर पर संपन्न हुआ दूसरा कार्यक्रम ग्राम मौहारि प्रयागराज मंडल संरक्षक भाईलाल नामदेव के गांव में समाज बंधुओं के सामने संपन्न हुआ तीसरा प्रोग्राम करछना तहसील के पीछे डॉ सुरेश जी के निवास पर समाज बंधुओं के द्वारा कार्यक्रम किया गया चौथा प्रोग्राम समाज उत्थान के संदर्भ में कोइलाहा गांव विष्णु दत्त नामदेव के यहां संपन्न हुआ पांचवा कार्यक्रम नामदेव दर्जी समाज बंधुओं के माध्यम से कोहड़ार घाट मेजा तहसील में हुआ छठा कार्यक्रम ग्राम सुजनी कोराव तहसील में समाज बंधुओं के द्वारा स्वागत समारोह किया गया साथ में भोजन भी किया सातवां कार्यक्रम जारी बाजार समाज बंधुओं के द्वारा भव्य स्वागत रामलखन नामदेव , रजनीश नामदेव, नीरज नामदेव ,मंत्री जी को माल्यार्पण कर उनका स्वागत और अभिनंदन किया गया । आठवां कार्यक्रम कोटवारन का पुरवा समाज का मीटिंग रखा गया नवा प्रोग्राम लाल साहब ठेकेदार साहब की कोठी में हुआ यह सब भी जगह समाज को संगठित शिक्षित विकसित करने के मंत्र दिया गया और मीडिया प्रभारी ने बताया कि 2 जनवरी को होने वाले प्रांतीय बैठक कैलाश धाम मंदिर जसरा प्रयागराज में बैठक संपन्न सुनिश्चित किया गया है क्षेत्र के लोगों से पहुंचने का आग्रह किया है मंत्री जी द्वारा छोटे छोटे उनके रुके हुए काम को मौके पर हल किया गया जैसे विधवा पेंशन वृद्धा पेंशन आवास लोन दिव्यांग ई साइकिल दिलाना एवं उनकी पेंसिल बनवाना एवं ब्लॉक से संबंधित काम सचिव के माध्यम से करवाना प्रधान के माध्यम से ग्राम के सड़क नाली बिजली की व्यवस्था सुधार करवाना माननीय मंत्री जी संबंधित व्यक्ति को बुलाकर कार्य करवाने का पूरा विश्वास समाज बंधुओं को दिलवाया ग्राम समाज के हमारे सभी समाज बंधुओं ने मंत्री जी के हाथ जोड़कर कहा बेटा आज से पहले ना हमारे समाज का कोई सम्मानित व्यक्ति यहां आया ना कोई हालचाल और हमारे दरवाजे पर आज मंत्री जी अपने स्कॉट पुलिस पर्सनल बॉडीगार्ड एवं सचिव एवं अपना प्रतिनिधि समाज के प्रतिनिधि को लेकर आएं शायद मैं यह कभी सम्मान भूल पाऊंगा।

इसी कड़ी में राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग सदस्य राधेश्याम जी के प्रतिनिधि ज्ञानेंद्र प्रकाश चौक प्रयागराज ने बताया कि लगभग 10 वर्षों से समाज सेवा कर रहा हूं परंतु आज यह एहसास मुझे हुआ शायद अब हमारे समाज की उत्थान समाज विकास सही पट्टी पर चलेगी अब हमारे समाज को सम्मान मिलने का दिन आने वाला है मैं बहुत प्रसन्न हूं और जहां-जहां हम लोग गए वहां के सभी अपने समाज बंधुओं ने स्वागत किया एवं 2 जनवरी को कैलाश धाम जसरा में कार्यक्रम आने का वादा भी किया आप भी सभी समाज बंधुओं से निवेदन करते हैं कि अधिक से अधिक जनसंख्या में महासभा की बैठक कर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

खबर संक्षेप

प्रयागराज जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन शीघ्र

नैनी। पत्रकारिता मे नवागन्तुक पत्रकारों को समाचार लेखन मे पारंगत बनाने हेतु प्रयागराज जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा शीघ्र ही पत्रकार प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा। उक्त जानकारी देते हुए एसोसिएशन के महासचिव सतीश कुमार मिश्र ने बताया कि वर्तमान पत्रकारिता के गिरते स्तर को ध्यान मे रखते हुए उसके गौरव गरिमा को बनाये रखने के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन आवश्यक हो गया है, जिससे नवोदित पत्रकार समाचार लेखन की बारीकिया सीख सके। इसी को ध्यान मे रखते हुए प्रयागराज जर्नलिस्ट एसोसिएशन शीघ्र ही प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित करने का निर्णय लिया है।

सड़क हादसे में मारे गए थे कोरांव के तीनों युवक, पोस्टमार्टम से खुलासा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। कोरांव के बेलन नदी के पुल पर सोमवार की रात आकाश, विकास और संतोष सड़क हादसे में मारे गए थे। बुधवार को पोस्टमार्टम रिपोर्ट में इस बात का खुलासा हुआ है। बिसरा प्रिजर्व कर लिया गया है। तीनों का अंतिम संस्कार दारागंज में पुलिस सुरक्षा में किया गया। इस दौरान घर वाले रोते बिलखते रहे। मंगलवार को घर वालों और ग्रामीणों ने तीनों की हत्या का आरोप लगाते हुए जमकर बवाल मचाया था। कोरांव के गजाधरपुर गांव निवासी पप्पू केशरी के दो बेटे आकाश केशरी (26) व विकास केशरी (24) अपने पड़ोसी संतोष (16) पुत्र किंधर आदिवासी के साथ सोमवार को मध्य प्रदेश के हनुमना बाजार में व्यवसायी से धान का पैसा लेने गए थे। देर रात संदिग्ध परिस्थितियों में तीनों के शव बेलन नदी के पुल पर मिला तो परिजन स्तब्ध रह गए। तीनों के शरीर पर चोटों के निशान थे।

रात में दर्ज कराई गई थी गैर इरादतन हत्या की रिपोर्ट

घर वालों ने तीनों की हत्या का आरोप लगाते हुए मंगलवार सुबह घटनास्थल पर तीनों शवों को रखकर चक्काजाम कर दिया। एसपी और एडीएम के आश्वासन पर परिजनों ने शवों का पोस्टमार्टम कराने की सहमति दी। मौका मुआयना कर जांच करने वाली टीम इसे सड़क हादसा बता रही थी। रात में गैर इरादतन हत्या की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। तय हुआ कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के अनुसार ही आगे की कार्रवाई की जाएगी। बुधवार को तीनों के पोस्टमार्टम किए गए। रिपोर्ट के मुताबिक तीनों की मौत हादसे में हुई है। बिसरा प्रिजर्व कर लिया गया है। एसपी यमुनापार सौरभ दीक्षित ने बताया कि घर वालों को पूरी बात बता दी गई। घर वालों की सहमति से दारागंज घाट पर तीनों के शवों का अंतिम संस्कार करा दिया गया। इस दौरान तीनों युवकों के परिजनों और ग्रामीण मौजूद रहे। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक तीनों की मौत हादसे में हुई थी। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। जिस गाड़ी की टक्कर से तीनों की मौत हुई, उसकी खोजबीन की जा रही है।

- सौरभ दीक्षित, एसपी यमुनापार।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि का स्वागत करते

कार्यशाला में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते बच्चे।

विद्यालय प्रबंध समिति कार्यशाला का भव्य ढंग से हुआ आयोजन

बसही आदर्श विद्यालय कीं छात्रा अंजलि और सौम्या नें सास्कृतिक कार्यक्रम पेश कर धमाल मचाया

अखंड भारत संदेस

करछना। विकासखंड करछना में परिषदीय प्राथमिक उच्च प्राथमिक कम्पोजिट एवं कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय के अध्यक्ष सचिव एवं ग्राम प्रधानों का एक दिवसीय ब्लॉक स्तरीय संगोष्ठी एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन खंड विकास अधिकारी कार्यालय सभागार करछना प्रयागराज में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी के द्वारा मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पण के साथ हुआ। उसके बाद उच्च प्राथमिक विद्यालय बसही की छात्राओं अंजलि और सौम्या आदर्श पूर्व माध्यमिक विद्यालय के द्वारा मां सरस्वती वंदना और स्वागत गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात कार्यक्रम के आयोजक बीईओ संतोष कुमार श्रीवास्तव द्वारा मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि को बुके भेंट कर,बैज अलंकरण और स्वागत उद्बोधन के साथ साथ कार्यक्रम के उद्देश्य पर चर्चा किया गया। डीवीटी एवं विद्यालयों के बच्चों को प्रदान की जा रही सुविधाएं, ऑपरेशन कायाकल्प एवं स्वास्थ्य स्वच्छता पर प्रकाश डाला गया।विद्यालय प्रबंध समिति तथा ग्राम पंचायत में समन्वय पर चर्चा किया।कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि कमलेश द्विवेदी ने कहा कि गुरु का दर्जा ईश्वर से भी बढ़कर है। विद्यालय मंदिर से भी बड़ा पवित्र स्थल है जहां पर बच्चों को अच्छी शिक्षा और संस्कार दिए जाते हैं। जिससे अच्छे समाज का निर्माण होता है। सभी शिक्षक विद्यालय को अपने घर की तरह सुंदर बनाएं। विद्यालयों के विकास में धन की कमी नहीं होने दूंगा। अपने फंड से अच्छे विद्यालयों में सोलर लाइट लगवा दूंगा। बीआरसी करछना में अपने फंड से टाइल्स आदि कार्य पूर्ण करवा दूंगा।डायट प्राचार्य प्रदीप कुमार पांडेय ने कहा कि सभी शिक्षक समर्पित भाव से शिक्षण कार्य करें इस अवसर पर एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा ,एडीयो पंचायत रामेश्वर सिंह, हिमांशु सिंह प्रधान प्रतिनिधि ग्राम पंचायत बसही, प्रदीप कुमार पांडेय क्षेत्र पंचायत सदस्य खजुरी गोसाई का पूरा, संतोष पाण्डेय पूर्व प्रधान मेडरा, अतुल कुमार मिश्रा, दुष्यंत प्रताप सिंह, संजय यादव, समर सिंह, रवि विश्वकर्मा, अरविंद कुमार, मनीष शुक्ला, अल्प नारायण सिंह, आदि बड़ी संख्या में प्रधान, एवं स्कूल की शिक्षिकाऐं शामिल रही।

न्यूज झरोखा

अनियंत्रित वाहन ट्रेलर हाईवे के पास डिवाडर से टकराकर पलटी

थरवई। बीती रात को सुबह भोर में एक बकरे से लदी ट्रेलर वाहन एकाएक नसीरपुर हाईवे के पास डिवाडर से टकराकर पलट गयी जिससे ट्रेलर मे लदी 100 बकरियां बुरी तरह से घायल हो गई जानकारी होते ही गाँव की भीड़ एकत्रित हो गई जिसकी सूचना लोगों ने थरवई थाने की पुलिस को दी। पुलिस घटनास्थल पर पहुँची । बची हुई बकरियो को ट्रेलर वाहन से निकाल कर सुरक्षित स्थान पर लाया गया सूत्रों के मुताबिक ड्राइवर व खलासी को कोई चोट नहीं लगी । सुरक्षा की दृष्टि से थरवई थाने के हमराही सिपाही नीतीश कुमार तथा मोहम्मद इरशाद मौजूद रहे ।

मेजा ऊर्जा निगम ने दिव्यांगजनों को किया कृत्रिम अंग वितरण

मेजा। मेजा ऊर्जा निगम (प्रा.) लिमिटेड द्वारा मंगलवार को आर एंड आर के सामुदायिक विकास कार्यों के अंतर्गत दिव्यांग जनों के स्वावलंबन हेतु कृत्रिम अंग वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम द्वारा निर्मित उच्च गुणवत्ता के कृत्रिम अंगों की फिटिंग प्रोस्थेटिक एवं ओर्थोटिक ऑफिसर द्वारा की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य कार्यकारी अधिकारी राकेश कुमार जी ने कहा कि ऐसे पुनीत कार्य करके मेजा ऊर्जा निगम गौरवान्वित होता है। डॉ. अंजलि, अध्यक्षा, अपराजिता महिला समाज, ने आज के कार्यक्रम की सराहना की एवं इसी प्रकार दिव्यांग जनों के स्वावलंबन एवं रोजगार के लिए कार्य करने का प्रोत्साहन दिया। कार्यक्रम में मेजा ऊर्जा निगम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी राकेश कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (परियोजना एवं तकनीकी सेवाएँ) राजेश कुमार कन्नोजिया, अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) अखिल के पी पटनायक, उप महाप्रबंधक (आर एंड आर) सी पी एस निरंजन, अपराजिता महिला समाज की अध्यक्षा एवं उपाध्यक्षाएँ, कमिटी, हॉस्पिटल स्टाफ, अन्य वरिष्ठ अधिकारी गण, ग्रामवासी उपस्थित थे।

मोहम्मद असलेन ने किया नैनी का नाम रोशन, शुभचिंतकों ने दी बधाई

नैनी। माधव ज्ञान केंद्र इण्टर कॉलेज के मोहम्मद असलेन जो विद्यालय में कक्षा 9 के छात्र हैं। वह चौथी यूपी यूथ एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2021 में हैमर थ्रो में दूसरा स्थान प्राप्त कर रजत पदक पर कब्जा कर नैनी का नाम रोशन करते हुए उक्त विद्यालय को भी गर्वन्वित किया। शुभचिंतकों ने मोहम्मद असलेन को बधाई देते हुए उनके उज्जल भविष्य की कामना की। बता दें कि यह प्रतियोगिता का आयोजन बीते 26-27 दिसम्बर 2021 को मुजफ्फरनगर में सम्पन्न हुई। विद्यालय के प्रधनाचार्य डॉ विंध्यवासिनी प्रसाद त्रिपाठी, शारिरिक प्रमुख दिग्विजय ,विनोद कुमार सहित सभी शिक्षक ने अपनी शुभकामनाएं दी हैं।

दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल में प्रवेश तीन जनवरी से

सिरसा। मेजा क्षेत्र उरुवा विकास खंड अंतर्गत सोरांव-पाती (गोसौरा) गांव में नवनिर्मित दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल एंड कॉलेज में प्रवेश लेने हेतु प्रवेश फार्म 3 जनवरी 2022, सुबह 9:30 से वितरित किया जाएगा। पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर एवं विद्यालय की प्रबंधक श्रीमती स्वतंत्र मिश्रा ने बताया कि यह विद्यालय को-एंड होगा जहां छात्र-छात्राओं दोनों को शिक्षा प्रदान किया जाएगा। उक्त विद्यालय सीबीएसई बोर्ड से संचालित है तथा पूर्णरूपेण अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय है। विद्यालय में केरल एवं प्रयागराज शहर के अनुभवी व योग्य शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा उच्च शिक्षा प्रदान की जाएगी, जो कि बड़े-बड़े महानगरों के विद्यालयों में मिलती है। विद्यालय की प्रबंधक श्रीमती मिश्रा ने बताया कि विद्यालय अपने मानक से चलेगा। जिसमे किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं किया जाएगा।छात्र-छात्राओं का विद्यालय में प्रवेश हेतु प्रवेश फार्म 3 जनवरी से 20 जनवरी तक मिलेगा। उसके बाद प्रवेश परीक्षा आयोजित किया जाएगा। परिणाम घोषित होने के पश्चात प्रवेश प्रारंभ होगा। प्रथम 100 प्रवेश पर शुल्क पूर्णतया माफ रहेगा। छात्रों को अंग्रेजी माध्यम से सशक्त रूप से शिक्षा ग्रहण करने में कोई कठिनाई हो इसके लिए विद्यालय प्रबंधन द्वारा 1 मार्च से 30 मार्च तक ओरिऐंसन क्लास चलाया जाएगा। जिसमें अंग्रेजी का प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। 1 अप्रैल से नियमित कक्षा चलेगी। विद्यालय में प्रवेश आज से संबंधित सभी प्रकार की जानकारी 3 जनवरी से विद्यालय प्रांगण में आकर ली जा सकती है। वहीं विद्यालय के चेयरमैन सुशील मिश्रा ने बताया कि विद्यालय 1 मार्च से पहले पूर्ण रूप से छात्र-छात्राओं के स्वागत के लिए तैयार रहेगा। दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल खुलने से क्षेत्र वासियों में खुसी की लहर दौड़ पड़ी है।

दांदूपुर में उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन आज

नैनी। ग्राम प्रधान, अध्यक्ष और सचिव विद्यालय प्रबंध समिति की उपस्थिति में परिषदीय विद्यालय के लिए एक दिवसीय संगोष्ठी व उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 30 दिसंबर को राजकीय अभिनव विद्यालय चाका के प्रांगण में सुबह 10 बजे से आयोजित होगा। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि अनिल ब्लाक प्रमुख चाका अनिल पटेल तथा विशिष्ट अतिथि खंड विकास अधिकारी चाका चंद्रमणि होंगे। यह जानकारी खंड शिक्षा अधिकारी चाका कैलाश सिंह ने दी है।

हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव कार्यक्रम संपन्न

अखंड भारत संदेश

करछना। ब्लाक संसाधन केंद्र कौंधियारा में निपुण भारत के अंतर्गत पूर्व प्राथमिक शिक्षा पर आधारित प्रयासों से जन समुदाय को जागरूक करने हेतु ब्लाक स्तरीय ' हमारा आंगन हमारे बच्चे उत्सव एक दिवसीय का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसको बेसिक शिक्षा विभाग एवं बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग के ब्लाकस्तरीय अधिकारियों द्वारा संयुक्त रूप से संचालित किया गया। इस उत्सव का शुभारम्भ खण्ड शिक्षाधिकारी कौंधियारा अतुल दत्त तिवारी एवं नोडल ए आर पी शत्रुघ्न प्रसाद शुक्ल व सीडीपीओ कौंधियारा रमेश कुमार के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में किया गया। इस उत्सव में स्कूल रेडीनेस प्रशिक्षण प्राप्त नोडल शिक्षक व आंगनवाड़ी कार्यकर्ती सम्मिलित हुए।

खंड शिक्षा अधिकारी कौंधियारा अतुल दत्त तिवारी के द्वारा 'हमारा आंगन-हमारे बच्चे' उत्सव के बारे में संक्षिप्त रूप से मुख्य उद्देश्यों को बताया गया, तत्पश्चात कार्यक्रम की शुरूआत हिन्दी ए आर पी शत्रुघ्न प्रसाद शुक्ल के द्वारा 'हमारा आंगन-हमारे बच्चे' उत्सव के बारे में विस्तार रूप से चर्चा किया गया। शिक्षक संकुल सुरेश चन्द्र त्रिपाठी द्वारा निपुण भारत के अंतर्गत चयनित बुनियादी साक्षरता के अंतर्गत कक्षा 1,2 एवं 3 हेतु निर्धारित लक्ष्यों की संप्राप्ति के बारे में व राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बारे में विस्तार रूप से बताया गया। तत्पश्चात शिक्षक संकुल शंखधर द्विवेदी जी के द्वारा प्री प्राइमरी शिक्षा में राज्य के प्रयास एवं उत्तर प्रदेश आई.सी.डी.एस द्वारा आंगनवाड़ी केंद्रों पर दी गई सुविधाओं के बारे में विस्तार रूप से चर्चा किया गया। शिक्षक संकुल शबनम के द्वारा प्रोजेक्टर के माध्यम से वीडियो को दिखाकर उससे संबंधित बिंदुओं पर चर्चा किया गया एवं बच्चों को वातावरणीय परिवेश से जुड़ाव रखकर किस प्रकार भाषाई अंकित ज्ञान दिया जाए, उसके बारे में विस्तार रूप से चर्चा किया गया।

इस उत्सव में 3 से 6 वर्ष के बच्चों का आंगनवाड़ी केंद्रों में नामांकन एवं नियमित उपस्थित बढ़ोतरी, निपुण भारत के अंतर्गत चयनित बुनियादी साक्षरता के अंतर्गत कक्षा 1,2 एवं 3 हेतु निर्धारित लक्ष्यों की संप्राप्ति, राज्य की कार्ययोजना और प्री प्राइमरी हेतु किए जाने वाले प्रयासों से जन समुदाय को अवगत कराना, उत्तर प्रदेश आई.सी.डी.एस. द्वारा आंगनवाड़ी केंद्रों पर दी गई सुविधाओं के बारे में बताना मुख्य रूप से शामिल रहा। उक्त उत्सव का ए आर पी अनिल कुमार सिंह, विनोद कुमार मल्ल, अनुराग पाण्डेय नवीन कुमार पांण्डेय और सभी संदर्भदाता के रूप में सुरेश चन्द्र त्रिपाठी, शबनम, रिजवान अहमद, वन्दना श्रीवास्तव, नीतू सेंगर, स्वाती सिंह, धर्मेन्द्र सिंह एवं शंखधर द्विवेदी जी के द्वारा सुचारू रूप से संचालित किया गया। माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा कार्यरत अनुदेशकों एवं रसोइयों से हुए संवाद का सीधा प्रसारण भी प्रतिभागियों को सुनाया गया। अन्त में ए आर पी नवीन कुमार पांडेय के द्वारा शपथ दिलाते हुए उत्सव के समापन की घोषणा की गई।

ईडी ने बाहुबली विधायक विजय मिश्र के समधी से की पूछताछ

प्रयागराज। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की नजर ज्ञानपुर के बाहुबली विधायक विजय मिश्र के घरवालों के साथ ही उनके कुछ रिश्तेदारों पर भी है। इसी क्रम में उसने बाहुबली के मुंबई में रहने वाले समधी से लंबी पूछताछ की है। ईडी की टीम ने समन जारी कर उन्हें अपने कार्यालय बुलाया, जिसके बाद उनसे विधायक के कारोबारी मामलों के संबंध में कई सवाल दागे गए। फिलहाल इस कार्रवाई से हड़कंप मचा हुआ है। कैबिनेट मंत्री नंदी पर हमले का आरोपी विजय मिश्र मौजूदा समय में आगरा जेल में बंद है। ईडी की टीम ने उसके खिलाफ 10 महीने पहले फरवरी में प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट के तहत केस दर्ज किया था। मामले की जांच में जुटी टीम ने हाल ही में आगरा जेल जाकर उसकी संपत्तियों के बारे में पूछताछ करते हुए उसका बयान दर्ज किया था। इसकेबाद से टीम उसकी चल व अचल संपत्ति के बारे में जानकारी जुटाने में लगी हुई थी।सूत्रों का कहना है कि जांच पड़ताल में टीम को विधायक व उसके परिवारवालों की कंपनियों का पता चला। सबसे खास बात यह कि कुछ ऐसी कंपनियों के बारे में भी जानकारी मिली जिसमें उसके परिवारवालों के साथ करीबी रिश्तेदार भी हिस्सेदार हैं।

दिल्ली में है कंपनी का ऑफिस

विधायक से संबंधित कंपनियों की छानबीन में ईडी को दिल्ली स्थित वीएसपी स्टार रियलिटी प्राइवेट लिमिटेड के बारे में जानकारी मिली। सूत्रों का कहना है कि इस कंपनी में विधायक की पत्नी व बेटी के साथ ही उसके मुंबई में रहने वाले समधी डॉ. वीरेंद्र रामामूर्ति तिवारी भी डायरेक्टर हैं। इस कंपनी का ऑफिस दिल्ली में है और इसके जरिए रियल इस्टेट का काम होता है। मूलतः जौनपुर के रहने वाले वीरेंद्र के मुंबई में अस्पताल व डायग्नोसिस सेंटर हैं। इसके बाद ही ईडी ने समन जारी कर उन्हें पूछताछ के लिए बुलाया।

पूछा, बाहुबली के कारोबार से क्या है संबंध

सूत्रों के मुताबिक, विधायक के समधी से ईडी की टीम ने लंबी पूछताछ की। उनसे उस कंपनी कीबाबत जानकारी ली जिसमें वह विधायक की पत्नी और बेटी के साथ ही डायरेक्टर हैं। कंपनी के प्रोजेक्ट्स और उसके लेनदेन की बाबत भी सवाल किए। यह भी पूछा कि विधायक के कारोबार से उनका क्या संबंध है और विधायक की कंपनी में उनकी क्या भूमिका है।

प्री-प्राइमरी के बच्चों को खेल कविता और कहानी से जोड़ें

ब्लाक संसाधन केंद्र में ईसीसीई विषयक कार्यशाला का आयोजन

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। ब्लाक संसाधन केंद्र शंकरगढ़ में बुधवार को प्री-प्राइमरी शिक्षा के तहत ब्लाक स्तरीय ईसीसीई क्रियान्वयन कार्यशाला का आयोजन किया गया। बीईओ नरेन्द्र सिंह ,आंगनबाड़ी सुपरवाइजर सरिता देवी, सुषमा शुक्ला और सुषमा मिश्रा ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यशाला के आयोजन पर प्रकाश डालने के साथ-साथ ही विषय विशेषज्ञों ने नई शिक्षा नीति की जानकारी दी। वक्ताओं ने कहा कि विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा (कक्षा एक से पहले) के लिए विद्यालय अथवा आंगनवाड़ी केंद्र आने वाले बच्चों को खेल, कविता, कहानी, रोचक प्रहसन जैसी विधा से जोड़कर शिक्षित करना है। खेल, कविता, कहानी में भी विभिन्न प्रकार की श्रेणी का चुनाव किया जा सकता है। बीईओ ने इस कार्यशाला के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए सभी शिक्षक साथियों से नई शिक्षा नीति के तहत बच्चों को शिक्षा से जोड़ की अपील की। नोडल शिक्षक नीरज कुमार और शिक्षक संकुल ज्योति तिवारी ने नवाचारों पर विस्तार से रोशनी डाली। इसके अलावा बच्चों को विद्यालय लाने के लिए अभिभावकों को जागरुक करना, गांव भ्रमण, स्थानीय मानिंद लोगों का सहयोग लेना, जन सहभागिता बढ़ाने पर भी चर्चा की गई। इसके पूर्व कार्यक्रम में एआरपी मंगला प्रसाद सिंह, जय सिंह, मनोज केसरवानी, अमित सिंह, केके सिंह ने बीईओ नरेंद्र सिंह का माल्यार्पण कर स्वागत किया। आंगनवाड़ी कार्यकत्री किरन पांडेय ने स्वागत गीत गाया। इस कार्यक्रम में शुभांक पांडेय, सचिव कुमार, नृपेंद्र सिंह, विजय कुमार सिंह, डा. अनिल सिंह, रामसूरत आदि मौजूद रहे।

अखिल भारतीय ब्राह्मण एकता परिषद की बैठक संपन्न

करछना। रविवार को अखिल भारतीय ब्राह्मण एकता परिषद जिला प्रयागराज की एक आवश्यक बैठक श्री पंडित राममणि तिवारी के आवास पर आयोजित की गयी ।जिसमें सम्पूर्ण कार्य कारिणी का गठन किया गया ।बैठक की अध्यक्षता जिला प्रभारी श्री पंडित डाक्टर लाल जी तिवारी व बैठक का संचालन जिला महामंत्री पंडित जनार्दन प्रसाद पाण्डेय द्वारा किया गया ।माननीय प्रभारी जी द्वारा जिला अध्यक्ष का प्रस्ताव श्री पंडित डाक्टर अशोक कुमार पाण्डेय जी का किया गया ।जिसका सर्व सम्मति से समर्थन हुआ ।जनपद प्रयागराज कार्य कारिणी के समस्त पदाधिकारियों की सूची निम्नवत है ।जिला प्रभारी श्री पंडित डाक्टर लाल जी तिवारी, जिला अध्यक्ष श्री पंडित डाक्टर अशोक कुमार पाण्डेय, जिला महामंत्री श्री पंडित जनार्दन प्रसाद पाण्डेय,जिला संयोजक श्री पंडित कैप्टन विद्याधर उपाध्याय, जिला उपाध्यक्ष श्री पंडित विजय शंकर शुक्ला, जिला संगठन मंत्री श्री पंडित सुधीर कुमार द्विवेदी, जिला कोषाध्यक्ष श्री पंडित राम मणि तिवारी, जिला सह मंत्री श्री बृजेश कुमार त्रिपाठी, जिला सह संयोजक श्री पंडित रमेश मिश्रा आदि विप्र बन्धुवों को कार्य कारिणी में संलग्न किया गया ।सादर जय श्री परशुराम जी पंडित जनार्दन प्रसाद पाण्डेय महामंत्री अखिल भारतीय ब्राह्मण एकता परिषद शामिल रहे ।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा बीएससी तीनों वर्ष 2011,2012 व 2013 जिसका अनुक्रमांक :1010520027, 5141020026, 514121030026 व जीएनएम तीनों वर्ष 2015, 2016, 2017 जिसका अनुक्रमांक : जी1जे1522060, जी2जे1622057, जी3जे1710058, जीएनएम इंटर्नशिप एनरोलमेंट : 37102जीएनएम जे141121 कोर्स कम्पलीशन सर्टिफिकेट ,डिप्लोमा रजिस्ट्रेशन (यू.पी) -74351 डिप्लोमा रजिस्ट्रेशन (एम.पी)- बी-44634 वास्तव में खो गया है।

नाम : पूजा वर्मा
पुत्री :रामकिशोर वर्मा
पता : नरैनी,जिला-बाँदा

किसान, मजदूर, गरीब के उन्नति लिए सरकार सतत अग्रसर : सांसद

सहसों। केन्द्र व प्रदेश की भाजपा सरकार ने किसानों, मजदूरों व गरीबों की प्रगति व उन्नति के लिए सतत कृत संकल्पित एवं अग्रसर है। छत्रपति शिवाजी डिग्री कॉलेज सहसों में बुधवार को गंगापार-यमुनापार तथा महानगर के किसानों का महा सम्मेलन किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष लक्ष्मीकांत उपाध्याय की अध्यक्षता में आयोजित की गई। जिसमें विशाल किसान महासम्मेलन के मुख्य अतिथि बांदा के सांसद आरके पटेल ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा सरकार किसानों की प्रगति व उन्नति के लिए कृत संकल्प है। उन्होंने कहा सरकार ने अनाज का समर्थन मूल्य, किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना आदि बहुत सारी योजनाएं किसानों के विकास के लिए बहुत ही कारगर है। सरकार किसान, मजदूर तथा गरीब की मजबूती के लिए सतत प्रयत्नशील है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि फूलपुर विधायक प्रवीण पटेल, फाफामऊ विधायक विक्रमाजीत मौर्य ने कहा सरकार सदैव किसान के साथ है। सरकार द्वारा किसानों के लिए लाई गई योजनाएं निश्चित रूप से किसानों के लिए हितकर है। कार्यक्रम के प्रारंभ में जिला अध्यक्ष किसान मोर्चा लक्ष्मीकांत उपाध्याय द्वारा उपस्थित मुख्य अतिथि सहित अन्य अतिथियों को अंगवस्त्रम व माल्यार्पण कर स्वागत एवं अभिनंदन किया गया तथा मुख्य अतिथि को गणेश प्रतिमा भी भेंट की गई। कार्यक्रम का संचालन प्रभाकर द्विवेदी ने किया। इस मौके पर जिला अध्यक्ष गंगापार अश्वनी द्विवेदी, जिला अध्यक्ष गणेश केसरवानी, जिला महामंत्री जीतलाल त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष अनिरुद्ध सिंह पटेल, सुनील पटेल, कृष्णानंद राय , आशुतोष सिंह, मोहित कुमार, अरुण कुमार सिंह, राजेश सिंह,भूपेंद्र मिश्र, प्रभारी शिक्षक प्रकोष्ठ रमेश कुमार द्विवेदी, राकेश बहादुर सिंह, अनिल सरोज, पवन कुमार शुक्ला, आलोक गुप्ता, अच्छे लाल गुप्ता सहित भारी संख्या में किसान, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

किसान सम्मेलन में मुख्य अतिथि को गणेश प्रतिमा भेंट करते भाजपा नेता।

कार्यालय ग्राम पंचायत रैपुरा वि. ख. करछना प्रयागराज

टेण्डर/कोटेशन

मनरेगा/चतुर्थ राज्य वित्त/14वां/15वां वित्त योजनाअन्तर्गत ग्राम पंचायत रैपुरा विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यो के आगणन /प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर आपूर्ति भाड़ा सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 29–12–2021 से दिनांक 05–01–2022 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत रैपुरा में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 10–01–2022 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेन्डर/कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 10–01–2022 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा। जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्तें लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु यथोचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में) सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	शिव बहादुर के खेत से जवाहर के खेत तक पक्की नाली निर्माण कार्य	4.80 लाख	2 माह
2.	सरकारी नलकूप से लाल बहादुर के खेत तक सिंचाई पक्की नाली कार्य	6.80 लाख	2 माह
3.	सरकारी नलकूप से अर्जुन गुप्ता के खेत तक पक्की नाली निर्माण कार्य	2.45 लाख	1 माह
4.	राम किशुन के घर से पक्की सड़क तक पक्की नाली निर्माण कार्य	4.50 लाख	2 माह
5.	बृजमोहन के घर से लाल जी के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य	2.40 लाख	2 माह

शिव कुमारी
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत रैपुरा
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/ग्राम पं. वि. अ./टेण्डर/ कोटेशन/ 2020-21/ दिनांक

अब्दुल वारी
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत रैपुरा
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

ठंड से दिन भर दुबके रहे लोग, स्कूल-कालेज बंद

अखंड भारत संदेश

नगर पालिका ने संचालित किये दो रैन बसेरे

चौक घंटाघर के पास बैठकर अलाव तापते लोग।

प्रतापगढ़। बुधवार को दिन भर बादल छाये रहे। बूंदाबांदी भी हुई। इससे लोग ठंड से या तो घरों में दुबके रहे और जो निकले, वह अलाव व हीटर में अपने को ठंड से बचाव का उपाय ढूंढते रहे। कक्षा-1 से आठ तक के विद्यालय जिलाधिकारी के आदेश से 30 दिसम्बर तक बंद हैं। इन स्कूलों में 31 दिसम्बर से 14 जनवरी तक शीतकालीन अवकाश किये जाने का भी आदेश शासन से आ गया है। जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदानंद ने इंटर तक के विद्यालय को 30 व 31 दिसम्बर को अवकाश दिये जाने की संस्तुति जिलाधिकारी से की है। संभावना है कि इंटर तक के विद्यालय भी बंद होने का आदेश आ सकता है। उधर ठंड से बचने के लिये नगर पालिका ने 20 स्थानों पर अलाव जलवाये हैं तथा दो रैन बसेरे संचालित किये जा रहे हैं। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि अध्यक्ष प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने दो रैन बसेरा संचालित किया है जिसमें से एक रोडवेज के पास छह बेड का रैन बसेरा है और दूसरा हादीहाल में 20 बेड का रैन बसेरा बनाया गया है। इन रैन बसेरों में रहने, ठंडा व गर्म पानी, साबुन, लैट्रीन बाथरुम आदि के अलावा अलाव की भी व्यवस्था की गई है। श्री सिंह ने बताया कि रैन बसेरा में प्रायः लोग रोज रुक रहे हैं और यात्रियों से भरा रहता है।

पीसीएस लोअर मे चयन पर मेधावी को मिला सम्मान

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर के समीप सलेम भदारी स्थित मॉडर्न कान्वेंट स्कूल मे पीसीएस लोअर मे सफल मेधावी को सफलता पर समारोहपूर्वक सम्मानित किया गया। लालगंज क्षेत्र के उमापुर निवासी रमेश यादव को पीसीएस लोअर मे इस वर्ष सफलता मिली है। विद्यालय परिसर मे आयोजित समारोह मे चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी तथा ब्लाक प्रमुख इं. अमित प्रताप सिंह पंकज ने रमेश यादव को अंगवस्त्रम तथा माल्यार्पण कर सम्मानित किया। कार्यक्रम मे क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना की ओर से मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने रमेश को प्रशंसा पत्र प्रदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान मो. जावेद तथा संचालन प्रधानाध्यापक अरविंद शर्मा ने किया। कार्यक्रम का संयोजन प्रबंधक इमरान खॉन ने किया। चयनित रमेश यादव ने कहा कि उनकी सफलता ग्रामीण क्षेत्र के मेधावियों के लिए प्रेरणादायक साबित हो सकेगी। इस मौके पर महमूदआलम, आलोक सिंह, राजेन्द्र यादव, शैलेन्द्र तिवारी, सोनू मिश्र आदि रहे।

शिक्षकों व आंगनवाडी कार्यकत्री के साथ चलेगा पूरा समाजः कुन्दन सिंह

हमारा आंगन-हमारे बच्चे उत्सव सम्पन्न

उत्सव कार्यक्रम में मौजूद आंगनबाड़ी कार्यकत्री

अखंड भारत संदेश

कटरा गुलाब सिंह, प्रतापगढ़। हमारा आगंन हमारे बच्चे उत्सव का शुभारंभ सहायक विकास अधिकारी पंचायत विजय शुक्ला, आशीष कुमार पांडेय बी ई ओ और कलावती मौर्या तथा समाज सेवी वरिष्ठ भाजपा नेता कुन्दन सिंह द्वारा द्वीप प्रज्वलित करके किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान संघ के अध्यक्ष बबऊ सिंह ने किया। विशिष्ट अतिथि राजेंद्र सरोज सदस्य जिला पंचायत रहे इस मौके पर मुख्य अतिथि कुन्दन सिंह ने कहा गुरु समाज का निमार्ता व मार्गदर्शक होता है माता प्रथम गुरु तथा प्रेम वात्सल्य और शक्ति का श्रोत है इस लिए समाज के लिए पूज्यनीय है। बीडीओ मान्धाता ने कहा कि आंगनवाडी केंद्रों और विद्यालयों को आर्कषक तथा शैक्षणिक माहौल के लिए पंचायत द्वारा उनका कायाकल्प किया जा रहा है आज जहां पर हम है गुरुओं के आर्शिवाद से है। बीईओ आशीष कुमार, कलावती मौर्य ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए ए आर पी राजेश प्रताप सिंह ने नई शिक्षा नीति के बारे में बताया। ए आर पी वीरेन्द्र, रिजवान सत्यजीत कौशल प्रताप ने अपने अपने विषय को बड़ी कुशलता के साथ प्रदर्शित किया। सत्यजीत ने आभार प्रकट किया जिला पंचायत सदस्य राजेंद्र ने कार्यक्रम की सराहना की। कार्यक्रम मे विनय सिंह जिला मंत्री प्राथमिक शिक्षक संघ रामानन्द मिश्रा ब्लाक मंत्री ने भी अपने विचार रखे तथा प्रदीप शर्मा कम्प्यूटर आपरेटर, जय प्रकाश लेखाकार का विशेष सहयोग रहा। आंगनवाडी कार्यकत्री शिक्षक/शिक्षिकाओं सहित कर्मचारी व अभिभावक उपस्थित रहे।

विज्ञान केंद्र ऐठू के वैज्ञानिक डॉ यतेंद्र कुमार को राज्यपाल ने किया सम्मानित

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर के 36वें दीक्षांत समारोह का आयोजन बुधवार को विश्वविधालय ऑडिटोरियम मे हुआ इस समारोह की अध्यक्षा श्रीमती आनन्दीबेन पटेल विश्वविधालय कुलाधिपती एवं राज्यपाल उत्तर प्रदेश सरकार तथा मुख्य अतिथि डॉ सुधांशु त्रिवेदी राज्य सभा सांसद एवं विशिष्ट अतिथि नीलिमा कटियार मंत्री उच्च शिक्षा विभाग तथा कुलपति प्रोफेसर विनय पाठक द्वारा किया गया।

इस कार्यक्रम मे विभिन्न कालेज के प्राध्यापक, प्राध्यापिका साहित स्नातक, स्नाकोत्तर एवं डॉक्टरेट उपाधियों के प्राप्तकर्ता छात्र व छात्राएँ उपस्थित रहे। समारोह की अध्यक्षा श्रीमती आनन्दीबेन पटेल ने आये उपस्थित सभी लोगो को शिक्षा व स्वाथ्य सम्बंधी जानकारी के साथ महिलाओ के स्वाथ्य के लिए किशोरी ऐप लांच किया एवं सभी को दहेज न लेने और न देने की शपथ दिलायी। कार्यक्रम संचलन के क्रम मे सभी उपाधिधारको को उपाधि दीक्षा शपथ दिलायी। इस विश्वविध्यालय समारोह में डॉ यतेंद्र कुमार को डॉक्टर ऑफ फोइलोसोफी की मानधि उपाधि से सम्मानित श्रीमती आनन्दीबेन पटेल विश्वविधालय कुलाधिपती एवं राज्यपाल उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किया गया। ये वर्तमान में कृषि विज्ञान केन्द्र प्रतापगढ़ में सहायक उद्यान वैज्ञानिक पद पर कार्यरत हैं। ये अपने इस सम्मान का श्रेय माता पिता, गुरूजन तथा कृषि विज्ञान केंद्र की अध्यक्षा माननीया राजकुमारी रत्ना सिंह व समस्त स्टाप कृषि विज्ञान केंद्र को देते हैं।

पूर्व गृह राज्य मंत्री का कुंडा डाक बंगले में भाजपा कार्यकताओं ने किया स्वागत

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रदेश के पूर्व गृह राज्य मंत्री एवं वन मंत्री राजेन्द्र त्रिपाठी के भाजपा में शामिल होने पर बुधवार को लखनऊ से प्रयागराज जाते समय कुंडा डाक बंगले में भाजपा कार्यकताओं ने फूल मालाओं से स्वागत किया।

कार्यकर्ताओ के स्वागत से गदगद हुए त्रिपाठी ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सेना द्वारा अदम्य साहस से की गई सार्जिकल स्ट्राइक एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की माफियाओं और कुख्यात अपराधियो के खिलाफ भाजपा सरकार की कार्य शैली से खुश होकर पार्टी में शामिल हुआ हूँ। बता दें कि राजेन्द्र त्रिपाठी प्रयागराज जिले के हंडिया विधानसभा क्षेत्र के विधायक चुने जाते हैं। इस मौके पर भाजपा युवा मोर्चा के कार्यालय जिला प्रभारी ज्ञान प्रकाश शुक्ल उर्फ गोलू, मण्डल अध्यक्ष सिद्धार्थ शंकर श्रीवास्तव, महेश सिंह फौजी, राजेश शुक्ला, अमित पटेल, रूपा गौतम सहित अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

महिला की मौत पर चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या की रिपोर्ट दर्ज

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सीएम की जनसभा मे पति के साथ शामिल होने घर से निकलीं महिला की दुर्घटना मे मौत को लेकर पुलिस ने आरोपी टैज्क्टर चालक के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का केस दर्ज किया है। महेशगंज थाना के अरूआरी निवासी सुनील कुमार कोरी ने दी गई तहरीर मे कहा है कि सत्ताईस दिसंबर को वह अपनी पत्नी संजना को बाइक से लेकर लालगंज क्षेत्र मे सीएम की जनसभा मे आ रहा था। कोतवाली लालगंज के कटरा तिराहे पर टैज्क्टर ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। दुर्घटना मे उसकी पत्नी संजना की मौत हो गयी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने सोमवार की रात लालगंज कोतवाली के हरनाहर पूरे वासी का पुरवा निवासी टैज्क्टर चालक नर्मदा तिवारी पुत्र रामसनेही के खिलाफ लापरवाहीपूर्वक वाहन चलाने तथा गैरइरादतन हत्या का केस दर्ज किया है।

पेयजल समूह परियोजना का प्रमोद तिवारी ने किया भूमिपूजन

विधायक मोना द्वारा स्वीकृत कराई गई परियोजना

पेयजल समूह परियोजना का भूमिपूजन करते सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी।

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी डभियार पूरे मुरली पेयजल योजना का भी समारोहपूर्वक भूमिपूजन किया। संचालन घुइसरनाथ व्यापार मण्डल अध्यक्ष व अधिवक्ता अखिलेश मिश्र ने किया। जनसभा मे ग्रामीणों ने प्रमोद तिवारी को लोकमंगल सम्मान से प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित भी किया।

इस दौरान आयोजित जनसभा में प्रमोद तिवारी ने कहा कि आरोप प्रत्यारोप की जगह भाजपा की जिम्मेदारी बनती है कि वह देश की जनता को बताये कि नोटबंदी के बाद पूंजीपतियो की तिजोरी से काली कमाई के सच के पीछे वह कहां तक संलिप्तता से बचने का किस हद तक का हथकण्डा अपना रही है। डभियार मे आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने कहा कि प्रदेश की मौजूदा सरकार पहले सरकारी रेट पर गरीब किसानो का धान नही खरीद सकी। जनसभा की अध्यक्षता करते हुए जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डा. लालजी त्रिपाठी ने कांग्रेस की प्रतिज्ञा यात्रा से लोगों को अवगत कराया। वहीं शहर अध्यक्ष इरफान अली, पूर्व जिलाध्यक्ष नरसिंह प्रकाश मिश्र तथा डा. वीके सिंह ने अपने भाषण मे किसानो की समस्याओं पर सरकारी असफलता के आरोप मढे। इस मौके पर संयुक्त अधिवक्ता संघ के उपाध्यक्ष संतोष पाण्डेय, संजय पाण्डेय, दिनेश मिश्र, बृजबहादुर सरोज, बबलू वर्मा, आशुतोष मिश्र, धर्मेन्द्र मिश्र, रामशिरोमणि पाण्डेय, ज्ञानप्रकाश शुक्ल आदि मौजूद रहे।

देश को बचाने के लिए समाज में लाएं समरसताः धमार्चार्य

सदभावना दिवस के रुप में मनी शीतला प्रसाद की पुण्यतिथि

असहाय लोगों को कम्बल वितरित करते धमार्चार्य ओम प्रकाश पाण्डेय।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। दानपुर में आयोजित बैकुंठ वासी पंडित शीतला प्रसाद तिवारी की पुण्य स्मृति में सद्भावना दिवस एवं समरसता समारोह का आयोजन कुंदन सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि के रुप में पधारे धमार्चार्य ओम प्रकाश पांडे अनिरुद्ध रामानुज दास ने स्वर्गीय तिवारी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन कर माल्यार्पण किया।

उन्होंने कहा कि स्वर्गीय तिवारी ईमानदारी और कर्मठता की साक्षात प्रतिमूर्ति थे। आपने सदैव क्षेत्र में समाज के उन्नयन के लिए कार्य किया। इस अवसर पर विगत वर्ष कोरोना काल के समय जनता की सेवा करने एवं दंत रोग के मरीजों को मुफ्त में परामर्श, दवाएं इत्यादि देने के कारण डॉ अवंतिका पांडे दंत चिकित्सक तथा डॉक्टर विवेक पांडे एवं समाज में समरसता के लिए कार्य करने के कारण कुंदन सिंह, राम अंजोर मिश्र व श्याम नारायण सिंह को अंगवस्त्रम तथा माल्यार्पण करके सम्मानित किया गया। इस दौरान समस्त जाति धर्म वर्ग के गरीब असहाय लोगों को भारी संख्या में कंबल वितरित किया गया। बढ़ती ठंड में कंबल पाकर महिलाएं हर्षोल्लासित हो गई। कार्यक्रम में गौरा देवी तिवारी, राजकुमार तिवारी, धीरेंद्र बहादुर सिंह, प्रधान रणजीत तिवारी, प्रदीप तिवारी, उजागर तिवारी, पवन कुमार, ज्ञानेंद्र प्रसाद, कमलेश दुबे, मकसूद आलम सहित भारी संख्या में उपस्थित लोगों ने स्वर्गीय तिवारी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए एक महामानव बताया। अंत में कार्यक्रम के आयोजक वेद प्रकाश तिवारी ने आए हुए सभी जनमानस एवं अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

पुलिस को महिलाओं ने पीटा, साथी ने बनाया वीडियो

प्रतापगढ़। फतनपुर थाने की पुलिस पर पैसा लेकर खेत में हेराफेरी करने से परेशान महिलाओं ने पुलिस की जमकर पिटाई की जिसका वीडियो वायरल हो रहा है। महिला बार-बार यह कहकर मार रही है कि पैसा लेकर जमीन में हेराफेरी करते हो, हम बर्बाद हो जाएंगे तो तुमको छोड़ेंगे नहीं। खास बात यह थी कि खाकी वर्दी पिटती रही और साथी उसको छुड़ाने के बजाय वीडियो बना रहे थे। यह वीडियो वायरल होने से खाकी की एक बार फिर किरकिरी हो रही है। यह खाकी कब सुधरेगी, अच्छे पुलिस अधिकारी प्रतापगढ़ में तैनात होते हैं लेकिन ऐसे ही पुलिस जन उनकी किरकिरी कराने में कभी कोई कोताही नहीं करते।

एमबीएस स्कूल में गायत्री महायज्ञ का हुआ समापन

नारी सशक्तिकरण पर दिया गया जोर

एमबीएस स्कूल में दीपदान करते आयोजक डा0 धर्मवीर सिंह।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एमबीएस स्कूल भुपियामऊ में शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वावधान में चल रहे तीन दिवसीय नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं रामचरित्र मानस का समापन दीप महायज्ञ के साथ हुआ। इस दौरान विद्यालय परिवार और गायत्री परिवार के परिजन शक्ति कलश एवं महाकाल भगवान को अपना दीपदान कर नव वर्ष का आगाज किया।

इस दौरान कथाव्यास पंडित विजयकांत तिवारी एवं उपाचार्य गिरीश चंद्र शुक्ल ने युग ऋषि पं0 श्रीराम शर्मा का संदेश जन मानस को दिया। लोगों को यज्ञीय जीवन जीने, नौनिहालों को भारत की गौरव गाथा सुनाते तथा पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण रोकने हेतु सजग रहने की सलाह दी। एक अच्छा इंसान बनाना माता-पिता का प्रमुख कर्तव्य है। इस अवसर पर नारी सशक्तीकरण पर बोलते हुए कार्यक्रम की संयोजक सीमा सिंह ने नारियों का राष्ट्र निर्माण में आगे आने की प्रेरणा दी। इस मौके पर गायत्री परिवार की बहन प्रीति सिंह को सम्मानित किया गया। अंत में आयोजक डा0 धर्मवीर सिंह ने सभी के प्रति आभार जताया तथा विद्यालय के वालेंटियर, बच्चों व शिक्षकों को सम्मानित किया। इस अवसर पर डा0 प्रभात शर्मा, अरविन्द श्रीवास्तव, शैलेन्द्र मिश्र, संजीव आहूजा, रतन जैन, शरद केसरवानी, इं0 संजय सिंह, ट्रांसपोर्ट यूनियन के अध्यक्ष विजय सिंह, कमला श्रीवास्तव, ओम प्रकाश मंछानी, ओम प्रकाश सेठ, विवेक दत्त मिश्र, दुर्गेश योगी, राम सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

चाचा को मौत के घाट उतारने वाले भतीजे को पुलिस ने किया गिरफ्तार

जितेन्द्र हत्याकाण्ड का आसपुर देवसरा पुलिस ने किया खुलासा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना क्षेत्र आसपुर देवसरा में हुए जितेन्द्र कुमार उर्फ सुनील हत्याकाण्ड का सफल अनावरण करते हुये घटना से सम्बन्धित अभियुक्त को गिरफ्तार कर घटना में प्रयुक्त आलाकत्ल धारदार गड़ासा को बरामद करने में सफलता मिली है।

गिरफ्तार अभियुक्त सूरज कुमार पुत्र महेन्द्र कुमार गौतम नि0 ग्राम चिलावां थाना आसपुर देवसरा का निवासी है। उसक पास से एक धारदार गड़ासा बरामद हुआ है। बता दें कि 24 दिसम्बर को जितेन्द्र कुमार उर्फ सुनील नि0 चिलावां थाना आसपुर देवसरा का शव गांव के पास एक नाले में पाया गया था, जिसकी धारदार हथियार से गला रेत कर हत्या की गई थी। इस सम्बन्ध में मृतक के पिता की तहरीर पर अज्ञात अभियुक्तों के विरूद्ध मुकदमा पंजीकृत किया गया था। इसी क्रम में प्रभारी निरीक्षक आसपुर देवसरा सर्वेश कुमार सिंह मय हमराह द्वारा थानाक्षेत्र आसपुर देवसरा के हाइवे नहर पुलिया के पास से अभियुक्त सूरज कुमार उपरोक्त को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस द्वारा की गई पूछताछ में गिरफ्तार अभियुक्त सूरज कुमार उपरोक्त ने बताया कि लगभग दो वर्ष पूर्व एक बारात में गया था जहां पर हुई हर्ष फायरिंग में मुझे गोली लग गई थी, जिसके बाद मेरे चाची ने मेरी काफी देखभाल/सेवा की थी, उनके सेवा भाव से मुझे उनसे काफी लगाव हो गया था, इस कारण मै उनसे फोन पर भी काफी बात करता था।

दो वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना कन्धई से प्रभारी निरीक्षक सत्येन्द्र सिंह मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र के बोझी मोड़ के पास से थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 28/21 धारा 147, 148, 149, 323, 504, 506, 307, 336, 427 भादवि 3(1)द/ध व ध व 3(2)5 एससी/एसटी एक्ट से सम्बन्धित एक वांछित अभियुक्त देवेन्द्र मणि पाण्डेय उर्फ दद्दू पुत्र स्व0 बृजकिशोर पाण्डेय नि0 बोझी थाना कन्धई को गिरफ्तार किया गया। उधर थाना कन्धई से व0उ0नि0 जिलेदार पाल मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर थाना क्षेत्र के ताला के पास से थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 94/21 धारा 363, 366, 504, 506 भादवि 3(1)द/ध, 3(2)5 एससी/एसटी एक्ट व 7/8 पाक्सो एक्ट से सम्बन्धित एक वांछित अभियुक्त कुलदीप वर्मा पुत्र कन्हैया लाल नि0 ताला थाना कन्धई को गिरफ्तार किया गया।

दुर्घटना में युवक की मौत, दो रेफर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। अज्ञात वाहन की टक्कर मे युवक की दर्दनाक मौत हो गयी। घटना से परिजनों मे कोहराम मच गया। कोतवाली के लखनऊ वाराणसी हाइवे पर लीलापुर के समीप मुल्तानीपुर के पास अज्ञात वाहन ने बाइक को टक्कर मार दी। दुर्घटना मे जेठवारा थाना के डांडी निवासी जहीर के पुत्र रियासत 27 की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गयी। वहीं हण्डौर निवासी अली अहमद की पत्नी जरीना 34 तथा डांडी के जाबिर के पुत्र दिलावर 30 भी गंभीर रूप से घायल हो गये। दोनों घायलो को पुलिस ने इलाज के लिए प्रतापगढ़ मेडिकल कालेज भेजवाया। बुधवार की सुबह रियासत बाइक से जरीना तथा दिलावर के साथ प्रतापगढ़ जा रहे थे। बारिश के कारण मिश्रपुर बस स्टैण्ड के पास अचानक बाइक असंतुलित हुई। इसी बीच पीछे से आ रही एक अज्ञात मैजिक लोडर रियासत को कुचलते निकल गयी। रियासत ने मौके पर ही दम तोड दिया। इधर पुलिस ने मृतक रियासत का शव कब्जे मे लेकर पीएम के लिए जिला मुख्यालय भेजवाया। दुर्घटना मे रियासत की मौत से परिजनों मे कोहराम मच गया। वहीं घायलो के परिजन भी बदहवाश देखे गये।

खबर संक्षेप

लेखपाल के स्थानांतरण के बाद नए लेखपाल की नहीं हो सकी तैनाती

कौशांबी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के ऊनो ग्राम सभा में लेखपाल का स्थानांतरण जिला अधिकारी ने सिराथू तहसील कर दिया था लेकिन वह ऊनो ग्रामसभा नहीं छोड़ना चाहता था ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से शिकायत कर स्थानांतरण आदेश के बारे में अवगत कराया जिस पर लेखपाल को ऊनो ग्राम पंचायत से हटा दिया गया है लेकिन लेखपाल के स्थानांतरण होने के महीनों बाद मंझनपुर तहसीलदार ने नए लेखपाल की तैनाती ऊनो ग्राम सभा में नहीं की है ऊनो गांव में लेखपाल की तैनाती न होने से किसानों को खसरा खतौनी अभिलेखों के संबंध में कठिनाइयां होती हैं बिना लेखपाल के तैनाती के चल रहे ऊनो ग्राम में लेखपाल की तैनाती को लेकर किसानों ने कई बार अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराया लेकिन बताया जाता है कि ऊनो ग्राम सभा में दूसरे लेखपालों की तैनाती जिम्मेदार नहीं कर पा रहे हैं पूर्व में तैनात लेखपाल का कहना है कि इस गांव में उनका स्थानांतरण फिर हो जाएगा अधिकारियों का कहना है कि नए लेखपाल ऊनो गांव में जाने को तैयार नहीं है अब आम जनता किसान की समस्या कैसे समाधान होगी किसानों ने लेखपाल की तैनाती की मांग डीएम से की है।

अधिकारियों के साथ बैठक करते नोडल अधिकारी तथा बैठक में उपस्थित विभिन्न विभाग के अधिकारी

नोडल अधिकारी ने की कर-करेत्तर एवं विकास कार्यों की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

गौशालाओं में गोवंशों को ठण्ड से बचाव हेतु सभी आवश्यक व्यस्थायें सुनिश्चित किया जाय

सामुदायिक शौचालयों का संचालन प्रभावी तरीके से कराया जाय, कोविड के नये वैरिएण्ट के दृष्टिगत जनपद में सभी आवश्यक तैयारियॉ सुनिश्चित करने के निर्देश

कौशाम्बी। जनपद के नोडल अधिकारी प्रमुख सचिव, उच्च शिक्षा सुभाष चन्द्र शर्मा की अध्यक्षता में बुधवार को कलेक्टेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में कर-करेत्तर एवं विकास कार्यों की समीक्षा बैठक संपन्न हुई। बैठक में नोडल अधिकारी ने राशन वितरण की समीक्षा के दौरान कहा कि लाभार्थियों को शासन के निदेर्शानुसार समय पर राशन का वितरण किया जाय तथा शेष रह गये पात्र लोंगो का राशन कार्ड बनाया जाय। उन्होंने संरक्षित गोवंशों की समीक्षा के दौरान कहा कि गोवंशों को ठण्ड से बचाव हेतु सभी आवश्यक व्यस्थायें सुनिश्चित किया जाय। उन्होंने निमार्णाधीन गौआश्रय स्थलों को तेजी से पूर्ण कराने के निर्देश दिये। इसके साथ ही उन्होंने गौआश्रय स्थलों में चारा आदि की व्यवस्थायें सुनिश्चित करने तथा छुट्टा गौवंशो को संरक्षित करने के भी निर्देश दिये। नोडल अधिकारी ने सामुदायिक शौचालयों की निर्माण की प्रगति की समीक्षा के दौरान कहा कि सामुदायिक शौचालयों का संचालन प्रभावी तरीके से कराया जाय तथा पानी की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाय। उन्होंने डी0पी0आर0ओ0 को सामुदायिक शौचालयों के संचालन की स्थिति की नियमित निगरानी करने के निर्देश देते हुए कहा कि कोई भी समस्या आने पर तत्काल निस्तारण कराया जाय। बैठक में अधिशासी अभियंता जल निगम ने बताया कि जल जीवन मिशन के तहत 21 परियोजनाओं पर कार्य होना है, इन सभी परियोजनाओ के लिए डी0पी0आर0 शीघ्र बना लिया जायेगा, जिस पर नोडल अधिकारी ने अधिशासी अभियंता सिचाई को विशेष प्रयास कर कार्यों को तेजी से पूर्ण कराने के निर्देश दिये।

नोडल अधिकारी ने स्वास्थ्य व्यवस्थाओं की समीक्षा के दौरान सी0एम0ओ0 से कहा कि कोविड के नये वैरिएण्ट के दृष्टिगत जनपद में बेड, ऑक्सीजन, टेस्ट, ऑक्सीजन सिलेण्डर की पर्याप्त तैयारियॉ सुनिश्चित कर लिया जाय तथा निगरानी समितियों को सक्रिय रखा जाय। सी0एम0ओ0 ने बताया कि जनपद में कोविड का एक मरीज मिला है, जिसका इलाज जिला अस्पताल में किया जा रहा है। जनपद में कोविड टीकाकरण की प्रथम डोज 92.65 प्रतिशत थी तथा द्वितीय डोज लगभग 44 प्रतिशत हो गयी है, जिस पर नोडल अधिकारी ने टीकाकरण में तेजी से प्रगति हेतु कार्ययोजना बनाकर कार्य करने के निर्देश दिये। नोडल अधिकारी ने जनपद में ठण्ड के दृष्टिगत कम्बल का वितरण सुनिश्चित करने के साथ ही बस स्टैण्ड, टैक्सी स्टैण्ड, धार्मिक स्थलों सहित आदि स्थलों पर अलाव की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। उन्होंने रैन बसेरों में बेहतर व्यवस्थायें भी सुनिश्चत करने के निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि आई0जी0आर0एस0 के तहत प्राप्त शिकायतों का निस्तारण गुणवत्तापूर्ण एवं समयान्तर्गत किया जाय। इसके साथ ही निवेश मित्र पोर्टल एवं झटपट पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों का निस्तारण भी समयान्तर्गत किया जाय। उन्होंने ए0एम0ए0, जिला पंचायत को निर्देशित किया कि स्वीकृत कार्यों को तत्काल शुरू कराया जाय। उन्होंने निमार्णाधीन सड़कों सहित सभी परियोजनाओं को गुणवत्तापूर्ण समयान्तर्गत पूर्ण कराने के निर्देश दिये। उन्होंने डिप्टी आर0एम0ओ0 को लक्ष्य के सापेक्ष धान की खरीद में प्रगति लाने के निर्देश के साथ ही कहा कि धान खरीद के सम्बन्ध में किसानो को कोई परेशानी न होने पाये। नोडल अधिकारी द्वारा सरकारी ट्यूबबेल में विद्युत की आपूर्ति, प्राथमिक विद्यालयों में विद्युत की व्यवस्था, खाद की उपलब्धता, दवाओं की उपलब्धता एवं दैवीय आपदा से प्रभावित लोंगो को सहायता राशि के वितरण की जानकारी के साथ ही मनरेगा, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना एवं कौशल विकास मिशन आदि की प्रगति की भी समीक्षा की गयी। बैठक में डी0सी0 एन0आर0एल0एम0 द्वारा बताया गया कि स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा अन्य कार्यो के साथ ही बैंक सखी एंव विद्युत सखी के रूप में भी कार्य किया जा रहा है। नोडल अधिकारी ने सभी अधिकारियों एवं कार्यदायी संस्थाओं से कहा कि जो भी परियोजनायें धनाभाव के कारण प्रभावित हैं, उनकी मांग कर कार्य को समयान्तर्गत पूर्ण कराया जाय। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना, किसान सम्मान निधि सहित आदि योजनाओं में छूटे हुए पात्र लोगों को लाभान्वित करने के निर्देश दिये।नोडल अधिकारी ने कर-करेत्तर एवं राजस्व की समीक्षा के दौरान वाणिज्यकर अधिकारी को लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व वसूली में प्रगति लाने हेतु विशेष प्रयास करने तथा प्रवर्तन कार्य करने के निर्देश दिये। उन्होंने आबकारी, परिवहन, स्टॉम्प एवं रजिस्टेज्शन, विद्युत आदि में राजस्व वसूली में प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

बैठक में मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी, अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय एवं जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी श्रवण कुमार सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सड़क हादसे में बाइक सवार युवक की मौत दो अन्य साथी घायल

अखंड भारत संदेश

चरवा थाना क्षेत्र के पनोई मोड़ के पास हुआ भीषण हादसा

हादसे में घायल लोगों को अस्पताल पहुंचाती एंबुलेंस

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के महगाव पुलिस चौकी अंतर्गत पन्नोई मोड़ के समीप बाइक सवार तीन युवकों को तेज गति वाहन ने टक्कर मार दिया है जिससे बाइक सवार एक युवक की मौके पर मौत हो गई है और दो बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हैं घायलों को इलाज के लिए स्थानीय मूरतगंज अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां हालत गंभीर होने पर घायलों को इलाज के लिए जिला अस्पताल रेफर कर दिया है हादसे के बाद मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई है मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई है मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटनाक्रम के मुताबिक पूरामुफ्ती थाना क्षेत्र के कुशवा गांव निवासी प्रदीप कुमार उम्र लगभग 30 वर्ष पुत्र बंशीलाल अपने साथी मंगली पुत्र बृजलाल निवासी मनौरी और नीरज पुत्र बचाई लाल निवासी मनौरी के साथ बाइक से मूरतगंज आ रहे थे जैसे ही बाइक सवार महगांव पनोई मोड़ के पास पहुंचे तभी तेज गति एक वाहन ने बाइक सवारों को टक्कर मार दिया हादसे के बाद बाइक सवार बीच सड़क पर गिर पड़े आसपास के लोगों ने घायलों को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मूरतगंज में भर्ती कराया जहां चिकित्सकों ने प्रदीप कुमार को मृत घोषित कर दिया है और दोनों घायलों को इलाज के लिए जिला अस्पताल रेफर कर दिया है घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर परिजन भी पहुंच गए हैं हादसे का दृश्य देखकर मौके पर कोहराम मचा हुआ है पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

सेऊढा रसूलपुर बिउर देवनरा औधन बालू घाट पर पिपरी थाना पुलिस मेहरबान

कौशाम्बी। बालू के अवैध कारोबार पर पिपरी थाना पुलिस और उसके थाना क्षेत्र की पड़ने वाली पुलिस चौकी की पुलिस पूरी तरह से मेहरबान है पिपरी थाना क्षेत्र के सेऊढा रसूलपुर बिउर देवनरा औधन बालू घाट से गुजरने वाले वाहनों पर रोक लगाने का प्रयास करने के बजाए अवैध वाहनों से वसूली कर उन्हें जाने का आदेश थाना पुलिस पकड़ा देती है पिपरी थाना पुलिस की मेहरबानी के चलते इलाके में दिन रात देखो तरीके से बालू का अवैध खनन माफिया कर रहे हैं। सरकार की तमाम कवायदों के बावजूद बालू के अवैध खनन पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। सैकड़ों ट्रैक्टर-ट्रॉलियां इस अवैध कारोबार में लगी हुई हैं। इस गोरखधंधे पर अंकुश लगाने में पिपरी पुलिस पूरी तरह असफल नजर आ रही है। गौरतलब है कि पुलिस की गश्त व यूपी-112 की गाड़ियां घूमने के बावजूद बालू का अवैध खनन होने से पिपरी थाने की पुलिस की भूमिका भी संदेह के घेरे में है लोगों का कहना है कि कुछ रसूखदार तथा प्रशासन के ही कुछ लोग रेत माफिया को संरक्षण दे रहे हैं। रेत माफिया अवैध ढंग से बालू का खनन करके जहां मालामाल हो रहे हैं, वहीं मंहगे दामों में बालू बिक रहा है पिपरी थाना क्षेत्र में बालू खनन का अवैध कारोबार अधिक हो रहा है।

जिन्हें कभी ढूंढती थी पुलिस आज दूसरे को दे रहे धमकी !

अकूत संपति अर्जित करने वाले बालू माफिया के कारनामों की जांच कराते हुए 14 ए गैंगस्टर एक्ट की कार्यवाही बालू माफिया पर कब करेंगे डीएम

कौशांबी। योगी सरकार के राज में माफियाओं का भी बर्चस्व बढ़ता जा रहा है कभी जिन्हें थाना पुलिस ढूंढते थी और अपराधी की तरह गांव छोड़कर फरार होने वाले लोग इन दिनों एक बालू माफिया के शरण में पल रहे हैं इस बालू माफिया का लंबा अपराधिक इतिहास है लंबे समय से चर्चित हत्याकांड में जेल में बंद करवरिया बंधु से बालू माफियाओं से कई दशक पुराने रिश्ते हैं बालू माफिया और उसके भाइयों के नाम कौशांबी से लेकर हरिद्वार तक मुकदमा दर्ज है इन दिनों इस माफिया के शरण में तमाम अपराधी पल रहे हैं दो वर्ष पूर्व जिसे सराय अकिल थाना पुलिस खोज रही थी दर दर पर माथा पटक कर पुलिस से मदद की गुहार लगा रहे थे इन दिनों वह बालू माफियाओं के शरण में पड़े हैं और बालू माफिया विधायकी का ख्वाब देख रहा है एक बड़े मुकदमे में नामजद होने के बाद बालू माफिया को राहत देने के नाम पर राजनीतिक दल के लोगों ने उसकी दौलत चूसना शुरू कर दिया है राजनीतिक दल के लोगों के मजबूत मकड़जाल में बालू माफिया फंस चुका है चर्चित मुकदमे से बालू माफिया को राहत मिलती तो नहीं दिख रही है लेकिन नेता जी उसको मदद का झांसा देकर मोटी रकम वसूल रहे हैं और बालू माफिया के साथ लगे लोग छोटी-छोटी बातों पर लोगों को फोन पर जेल भेजने की धमकी देकर रौब गांठ रहे हैं आखिर बालू माफियाओं के गैंग में शामिल इन अपराधियों के कारनामों पर पुलिस अधिकारी कब मामले को संज्ञान लेंगे संगठित अपराध के जरिए अकूत संपत्ति अर्जित करने वाले बालू माफिया के कारनामों की जांच कराते हुए 14 ए गैंगस्टर एक्ट की कार्यवाही बालू माफिया पर जिलाधिकारी कब करेंगे यह तमाम सवाल आम जनता योगी सरकार से पूछ रही है(

न्यूज झरोखा

नोडल अधिकारी ने धान खरीद केन्द्र नवीन मंण्डी ओसा का किया निरीक्षण

किसानों की समस्याओं को निस्तारित करने के निर्देश

कौशाम्बी। नोडल अधिकारी ने धान खरीद केन्द्र नवीन मण्डी, ओसा के निरीक्षण के दौरान रजिस्टर की जांच की तथा अब तक हुई धान खरीद आदि की जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के दौरान उपस्थित किसानों द्वारा नोडल अधिकारी को जानकारी दी गई कि एक माह पूर्व टोकन लिया गया था, अभी तक तौल नहीं हुई है सहित आदि समस्यायें बतायी गयी, जिस पर नोडल अधिकारी ने नाराजगी प्रकट करते हुए डिप्टी आर0एम0ओ0 को आज ही समस्याओं को निस्तारित करने के निर्देश दिये।

दलितों के कब्रिस्तान में हो रहे कब्जे से ग्रामीणों में रोष, आक्रोशित ग्रामीणों ने निर्माण को ढहाया

अझुवा कौशाम्बी। सिराथू तहसील के ग्राम सभा केन के दलितों की आबादी हेतु सुरक्षित खाता संख्या 758 की गाटा संख्या 575/548 पर किसी अमित द्वारा अवैध कब्जा कर निर्माण किया जा रहा था जिसे आज सुबह ग्राम प्रधान केन गुलाब सिंह के नेतृत्व में सैकड़ों ग्रामीणों ने ढहा कर स्थानीय पुलिस को सूचना दी है! कनवार बॉर्डर के पास स्थित इस बेशकीमती जमीन का विवाद पुराना है इस भूमि पर कई बार विवाद हो चुका है जिसे जिम्मेदार सुलझा नही पा रहे हैं जिम्मेदारों की निष्क्रियता से किसी दिन गम्भीर स्थिति हो सकती है मौके पर रहे ग्राम प्रधान केन ने बताया इस 4 बीघे कुछ बिस्वे के रकबे को कोई अमित अवैध रूप से कब्जा करना चाहता है जबकि उससे बात भी हुई थी सबसे पहले पैमाइश हो जाये तो अपना निर्माण करे! लेकिन कुछ स्थानीय लोगों की दबंगई ,शोरे पुस्ती धनबल कुछ लोगों का सहारा लेकर जबरिया निर्माण कराना चाहता है,वहीं सूचना पर पहुंची अझुवा चौकी पुलिस ने बताया कि कुछ लोगों ने अपनी जमीन बेंची है उन्होंने कहा कि किसी प्रकार का उपद्रव भीड़ भाड़ बर्दास्त नही किया जाएगा न तो अवैध निर्माण करने दिया जाएगा।

गोसंरक्षण के लिए ग्राम प्रधान ने किया भूमिपूजन

कोखराज कौशाम्बी। सिराथू तहसील के ग्राम पंचायत ककोढ़ा में गौ संरक्षण के लिए ग्राम प्रधान द्वारा गौशाला हेतु भूमि पूजन किया गया इस दौरान एडीओ पंचायत सिराथू ग्राम विकास अधिकारी ककोढ़ा लेखपाल व ग्राम प्रधान बिदनपुर तथा गांव के तमाम सम्मानित नागरिक पप्पू शुक्ल नीरज मिश्रा राम जी दीक्षित सहित तमाम लोग उपस्थित रहे इस दौरान एडीओ पंचायत ने कहा कि योगी सरकार का निर्देश है कि गाय को संरक्षित किया जाए और सरकार के निर्देश पर गो संरक्षण केंद्र अब ककोड़ा गांव में खोला जा रहा है आवारा पशुओं को गौ संरक्षण केंद्र में संरक्षित किया जाएगा।

किसान समाधान कैम्प का किया जाएगा आयोजन

कौशाम्बी। उप मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार की अध्यक्षता में 22 दिसम्बर 2021 को आहूत की गयी बैठक में दिये गये निर्देश के क्रम में जनपद के प्रत्येक पात्र कृषकों को प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना से लाभान्वित किये जानें हेतु 29 दिसम्बर 2021 से 07 जनवरी 2022 तक प्रत्येक ग्राम पंचायत में पीएम किसान समाधान कैम्प का आयोजन सम्बन्धित ग्राम प्रधान की उपस्थिति में कृषि विभाग एवं क्षेत्रीय सहज जनसेवा केन्द्र के संचालक द्वारा आयोजित किया जायेगा।

राष्ट्र को मजबूती प्रदान करने मे अतुलनीय सहयोग प्रदान करती हैं महिलाएं : केसरी देवी

भाजपा महिला मोर्चा विधानसभा चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका के साथ पुनः पूर्ण बहुमत की भाजपा सरकार बनाने के लिए कमर कसकर तैयार है

अखंड भारत संदेश

सांसद केसरी देवी पटेल का स्वागत करती महिला मोर्चा की महिलाएं

महिला कार्यक्रम में उपस्थित महिलाओं की भीड़

कौशाम्बी। भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा का जिला सम्मेलन जिलाध्यक्ष अनिता त्रिपाठी के अध्यक्षता मे कलश गेस्ट हाउस मे बुधवार को समपन्न हुआ कार्यक्रम में मुख्य अतिथि फूलपुर सांसद केशरी देवी पटेल ने कहा कि यह जनपद वीर उर्वरा भूमि है जो देश और समाज के प्रति महान विभूतियों और सेनानियों को राष्ट्र के प्रति समर्पित किया है उन्होंने कहा कि महिलाएं परिवार के निर्माण और राष्ट्र को मजबूती प्रदान करने मे अपना अतुलनीय सहयोग प्रदान करती है।

उन्होंने कहा कि महिलाएं आर्थिक रुप से मजबूत और सशक्त हो इसके लिए उ प्र सरकार द्वारा 10 लाख स्वयं सहायता समूह के माध्यम से एक लाख महिलाओं के रोजगार का मार्ग प्रशस्त किया है गांव गांव मे मजबूत बैंकिंग व्यवस्था के लिए प्रदेश मे 56 हजार बीसी सखियों को जो जिम्मेदारी सौप कर उनके लिए निर्धारित मानदेय की व्यवस्था दी है। उन्होंने कहा कि समाज मे बालिकाओं के सुरक्षा और सम्मान के लिए भारतीय जनता पार्टी की सरकारों ने समर्पित होकर कार्य किया है उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा महिला मोर्चा उ प्र के आगामी विधानसभा चुनाव मे महत्वपूर्ण भूमिका के साथ पुनः उत्तर प्रदेश मे पुर्ण बहुमत की भाजपा सरकार बनाने के लिए कमर कस कर तैयार है। विशिष्ट अतिथि भाजपा उत्तरप्रदेश महामंत्री डॉ कृतिका अग्रवाल ने कहा कि आजादी के बाद महिलाओं के समृद्धि और उत्थान के साथ साथ सम्मान देने का अगर किसी सरकार ने काम किया है तो वह भाजपा के नेतृत्व की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सरकारों ने महिलाओं को सम्मान दिया है। जिला अध्यक्ष संगीता सरोज ने कहा की आजादी के बाद महिलाओं की दशा और दिशा दोनो के प्रति भाजपा ने सकारात्मकता के साथ प्रयास किया है ।उन्होंने कहा की महिलाएं शक्ति का स्रोत हैं जिला पंचायत की अध्यक्ष कल्पना सोनकर ने कहा कि सरकार की हर योजनाओं से महिलाओं को लाभ मिला है। मुख्य अतिथि का महिला मोर्चा की नेताओं ने स्मृति चिन्ह एवं अंगवस्त्र देकर स्वागत सम्मान किया कार्यक्रम में मुख्य रूप से सिराथू विधानसभा के विधायक शीतला प्रसाद पटेल भी उपस्थित रहे साथ ही डिप्टी सीएम पुत्र योगेश मौर्य भी उपस्थित रहे। सम्मेलन की शुरूआत भाजपा महामनिषियों के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर पुष्पार्चन व वंदेमातरम गायन से हुई। अतिथियों के प्रति धन्यवाद आभार कविता केसरवानी सहित जिला उपाध्यक्ष तारा देवी वर्मा शिप्रा चौरसिया अर्चना चौरसिया विनीता प्रतिभा उषा मिश्रा शोभिता उर्मिला सुषमा केसरवानी रिचा पांडेय आदि अन्य सैकड़ों महिलाएं उपस्थित थी।मंच का संचालन महिला मोर्चा की महामंत्री कविता केसरवानी ने किया।

खुले आसमान के नीचे ठंड से ठिठुर रहे हैं बेजुबान पशु

अखंड भारत संदेश

योगी सरकार की गोसंरक्षण केंद्र योजना साबित हुई हवा हवाई

कौशांबी। पशुओं को संरक्षण देने के नाम पर सरकार ने जिले में करोड़ों की रकम पानी की तरह बहा दी है पूरे जिले में गौ संरक्षण केंद्र के नाम पर शासन सत्ता तक बैठे लोग को संरक्षण केंद्र की सफलता पर वाहवाही लूट रहे हैं लेकिन सच्चाई यह है कि पूरे वर्ष आवारा पशु सड़कों और खेतों में विचरण करते हैं किसानों की फसलें आवारा पशु चौपट करते हैं इतना ही नहीं आवारा पशु आबादी के बीच आम जनता पर हमला कर लहूलुहान भी कर देते हैं और गौ संरक्षण केंद्र के संचालन में लगे जिम्मेदार केवल वाहवाही लूटते हैं ताजा मामला सरसवा विकासखंड क्षेत्र के ऊनो और कुलौली गांव का है जहां सैकड़ों पशु खुले आसमान के नीचे भीषण ठंड में रात गुजार रहे हैं ठंड लगने से आए दिन पशुओं की मौत भी हो रही है इन पशुओं को 2 जून का चारा भी नहीं मिल पा रहा है लेकिन उसके बाद भी पशु स्वास्थ्य विभाग सरसवा के अधिकारी गौ संरक्षण केंद्र की सफलता पर अपना मुंह चीरकर भाषण दे रहे हैं। इसी तरह जनपद मुख्यालय मंझनपुर में पूरे दिन आवारा पशुओं का बिचरण लगा रहता है नगर की आबादी के साथ-साथ बीच चौराहे पर भी आवारा पशुओं को देखा जा सकता है खुले आसमान में भीषण ठंड में आवारा पशु सड़कों पर विचरण करते हैं 2 जून का उन्हें चारा नहीं मिल पा रहा है मौतें होती हैं और आम जनता पर आवारा पशु हमला कर उन्हें लहूलुहान कर देते हैं लेकिन नगरपालिका मंझनपुर के जिम्मेदार पशुओं को संरक्षित नहीं कर पाते हैं यह तो कुछ उदाहरण है पूरे जिले के गांव गांव क्षेत्र में सैकड़ों की संख्या में आवारा पशु घूम कर किसानों की फसलें बर्बाद कर रहे हैं आखिर गोसंरक्षण केंद्र के नाम पर करोड़ों की रकम खर्च किए जाने के बाद आवारा पशुओं को संरक्षित नहीं किया गया है तो इसकी जवाबदेही किसकी है आवारा पशुओं के खुले आसमान के नीचे घूमने पर किस अधिकारी को जिम्मेदार मानते हुए योगी सरकार दंडित

किसान नवजवान मिलकर लायेंगे चायल विधानसभा में बदलाव : सुशील जयहिंद

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के चायल विधानसभा के प्रत्याशी सुशील जयहिंद ने बुधवार को चायल विधानसभा के दर्जनों गांवों का भ्रमण किया और लोगों से मुलाकात की। इस दौरान कई गांवों जैसे सेवढ़ा,बलयेपुर, नूरपुर, पेरई, पेरवा आदि गांवों में चौपाल लगाई और लोगों से आगामी विधानसभा चुनाव में समर्थन करने की अपील की। ग्राम नूरपुर में आयोजित चौपाल में बोलते हुए समर्थ किसान पार्टी के प्रत्याशी सुशील जयहिंद ने कहा कि चायल विधानसभा की जनता बहुत समझदार और जागरूक है। आने वाले 2022 के विधानसभा चुनाव में यहां के किसान और नवजवान मिलकर बदलाव लाएंगे। उन्होंने आगे कहा कि भाजपा के मौजूदा विधायक से इस क्षेत्र के लोग खासे नाराज हैं और इस बार निश्चित ही चायल विधानसभा में परिवर्तन होगा। इस अवसर पर संजय यादव ने कहा कि चायल विधानसभा के किसान और नवजवान खासे परेशान हैं। इनकी कोई सुनने वाला नहीं है। न किसानों को समितियों से उर्वरक मिल रही है, न ही क्रय केंद्रों पर किसानों से धान क्रय किया जा रहा है। वहीं नवजवान भी रोजगार की तलाश में दर दर भटक रहे हैं। किसानों व नवजवानों के साथ भारी छलावा किया गया है। मिलकर एक नया बदलाव लाएंगे और एक नए क्रांतिकारी और उनके हक की लड़ाई लड़ने वाले जनकार्यकर्ता को विधायक बनाने का काम करेंगे। इस अवसर पर सुशील जयहिंद ने चायल क्षेत्र के किसानों एवं नवजवानों से वादा किया कि अगर आने वाले चुनाव में चायल विधानसभा के किसानों और नवजवानों ने मिलकर उन्हें चायल का विधायक बनाया तो किसानों और नवजवानों के हक के लिए सड़क से लेकर प्रदेश की सदन तक संघर्ष करने का काम करूंगा और किसानों व नवजवानों की समस्यायों का मौके पर ही समाधान कराऊंगा। इस दौरान महेश सरोज, शनि यादव, राजकुमार पटेल, विजय मिश्रा, राजू मौर्य,

सम्पादकीय

चुनौतियों के बीच कांग्रेस का स्थापना दिवस

देश में जिस वक्त असहिष्णुता और नफरत अपने चरम रूप में दिखाई दे रही है, जब राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को सार्वजनिक तौर पर अपशब्द कहे जा रहे हैं और प्रधानमंत्री इस बात की आलोचना भी नहीं कर रहे, जब प्रधानमंत्री कार्यालय को एक पार्टी के दफ्तर की तरह चलाया जा रहा है और संसद को तमाशेबाजी के मंच की तरह इस्तेमाल किया जा रहा है, लोकतंत्र के लिए जब परिस्थितियां हर ओर से प्रतिकूल दिखाई पड़ रही हैं, ऐसे चुनौतीपूर्ण माहौल में कांग्रेस ने 28 दिसम्बर को अपना 137वां स्थापना दिवस मनाया। लोकतंत्र में हरेक राजनैतिक दल की अपनी भूमिका है, सबका अलग स्थान है। स्थानीय मुद्दों पर आधारित कुछ क्षेत्रीय दल बने, जो बाद में राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचे। जाति और धर्म विशेष के सरोकारों को लेकर भी राजनैतिक दलों का गठन हुआ, जिन्होंने लोकतंत्र में विविधता को बनाए रखने की चुनौती पेश की। कुछ दलों का गठन वैचारिक आधार पर हुआ और कई बार ये भी हुआ कि विभिन्न विचारधारा के दलों ने साथ आकर सरकार बनाई। लेकिन इन सबके बीच कांग्रेस की अपनी एक विशिष्ट भूमिका देश के लोकतंत्र को संभाले रखने में चलती रही। देश की इस सबसे पुरानी पार्टी को अभी भले अपने अस्तित्व के लिए जूझना पड़ रहा है, लेकिन सच्चाई यही है कि भारतीय राजनीति पिछले 137 सालों में कभी कांग्रेस मुक्त नहीं रही। भले ही कांग्रेस को एक परिवार के इर्द-गिर्द चलने वाली पार्टी कहा जाए, भले उसमें आंतरिक लोकतंत्र पर सवाल उठाए जाएं, लेकिन फिर भी देश की जनता का बड़ा हिस्सा किसी न किसी तरह कांग्रेस की राजनीति और उसकी नीतियों से प्रेरित रहा है। यह बात हम पहले भी लिख चुके हैं कि कांग्रेस महज एक राजनैतिक पार्टी नहीं है, एक विचार है, एक आंदोलन है, जो भारत को उसकी असली पहचान देता है। आजादी के पहले स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में कांग्रेस की भूमिका अवर्णनीय है ही, आजादी के बाद भी भारत को एक लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष, प्रभुत्वसंपन्न गणराज्य बनाने में कांग्रेस ने अहम भूमिका निभाई। लेकिन इस गौरवशाली इतिहास के बरक्स यह सवाल अगर उठता है कि आज कांग्रेस कहां है, तो उसका जवाब तलाशना ही होगा। और यह जिम्मेदारी कांग्रेस पार्टी के नेताओं, पदाधिकारियों और कार्यकताओं की अधिक है।

सत्ता के मद और सत्ता के लालच में कांग्रेस के मूल्यों से विचलन की कीमत जितनी कांग्रेस ने अपना जनाधार खोकर चुकाई है, उससे कहीं अधिक नुकसान इस देश को हुआ है। कांग्रेस के खाली स्थान को भरने जो राजनैतिक दल आगे आए हैं, उनमें से बहुत से दलों की संकुचित और स्वार्थपरक राजनीति के कारण देश के लोकतंत्र का बहुत नुकसान हुआ है। 90 के दशक के बाद भूमंडलीकरण की आंधी में देश की आर्थिक नीति तो कमोबेश सभी दलों की एक जैसी ही हो गई है। पूंजीवाद के आगे राजनैतिक शक्तियां नतमस्तक हैं। लेकिन इनके साथ भारत जैसे बहुविध देश में धर्म और जाति के नाम पर जो खाई गहरी हुई है, उसे पाटने का काम वही दल कर सकते हैं, जिनका इस देश के संविधान में यकीन हो। और उस यकीन को धरातल पर लागू करने का जज्बा भी हो। यह देखना दुखद है कि दूसरे दलों के साथ-साथ खुद कांग्रेस में एक नेताओं की एक बड़ी जमात शामिल हो गई, जिन्होंने सत्ता की राजनीति के लिए संविधान के मूल्यों को तिरोहित कर दिया। इसी वजह से आज देश में अल्पसंख्यकों, दलितों, आदिवासियों और निचले तबके के लोगों के लिए हालात पहले से कठिन हो गए हैं। विचारों की स्वतंत्रता पर अघोषित पहरेदारी हो गई है और कलम के सिपाही, दरबारी बन कर धन्य हो रहे हैं। ऐसे में जब कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी कह रही हैं कि हमारी गंगा-जमुनी संस्कृति को मिटाने की कोशिश हो रही है। देश का आम नागरिक असुरक्षित और भयभीत महसूस कर रहा है। लोकतंत्र व संविधान को दरकिनार किया जा रहा है, और तानाशाही की जा रही है। ऐसे में कांग्रेस चुप नहीं रह सकती। तो उनकी इन बातों का मर्म कांग्रेसियों को समझना होगा और कांग्रेस के साथ-साथ भारत को संभालने के लिए आगे आना होगा।

ओमिक्रॉन का सामना करने को सेवाओं का निर्यात

भरत झुनझुनवाला

माल का भौतिक उत्पादन जिस देश में होता है यदि वह देश निर्यात न कर सके तो आयात करने वाले दूसरे देश पर संकट आ पड़ता है। इसलिए कोविड के कारण सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था चरमरा रही है। तुलना में सेवा क्षेत्र की स्थिति अच्छी है। कारण यह है कि सेवायें जैसे आनलाइन ट्यूशन, टेली मेडिसिन, अनुवाद, सिनेमा, संगीत, साफ्टवेयर, इत्यादि के माल की ढुलाई समुद्री अथवा हवाई जहाज से करने की जरूरत नहीं होती है। इसकी ढुलाई इन्टरनेट के माध्यम से हो सकती है। अतः किसी देश में यदि लाकडाउन लगा भी है तो कर्मी अपने घर में बैठकर इंटरनेट से इनका उत्पादन और सप्लाई अनवरत कर सकते हैं। कोविड के ओमिक्रॉन वैरिएंट के उत्पन्न होने से एक बार पुनः विश्व अर्थव्यवस्था पर संकट आ पड़ा है। अलग-अलग देशों में अलग-अलग समय पर लाकडाउन की स्थिति बन रही है। ऐसी स्थिति में जो देश दूसरे देशों से कच्चे माल के आयात अथवा उत्पादित माल के निर्यात पर निर्भर रहते हैं, उनका संकट बढ़ जाता है। हाल में एक कार निमार्ता के एजेंट ने बताया कि अपने देश में गाड़ियों की खरीद की इस समय लगभग 6 से 8 महीने की वेटिंग लिस्ट हो गई है। कारण यह है कि कार के उत्पादन में लगने वाला एक छोटा सा 'सेमी कंडक्टर' जिसका मूल्य मात्र 2,000 रुपये है, वह भारत में नहीं बन रहा है और उसका आयात भी नहीं हो पा रहा है क्योंकि निर्यात करने वाले देशों में कोविड का संकट आ पड़ा है। इससे दिखाई पड़ता है कि कोविड के कारण उत्पादित माल का विश्व व्यापार संकट में है। यदि एक भी कच्चा माल उपलब्ध नहीं हुआ तो पूरा उत्पादन ठप्प हो जाता है।

इसलिए अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष की पत्रिका 'फाइनांस एंड डेवलपमेंट' में एक लेख में कहा गया है कि कोविड संकट के कारण तमाम देश उत्पादित माल वैश्वीकरण से पीछे हटेंगे। इसी क्रम में अपने देश में दवाओं के उद्योग पर भी वर्तमान में संकट है क्योंकि चीन से आयातित होने वाले कुछ कच्चे माल उपलब्ध नहीं हैं। दूसरी तरफ हमारे निर्यात भी संकट में हैं क्योंकि इंग्लैण्ड और नीदरलैंड जैसे देशों में कोविड के कारण लाकडाउन की स्थिति बन रही है और उनके द्वारा हमारा माल खरीदा नहीं जा रहा है। इन संकटों की विशेषता यह है कि ये माल अथवा भौतिक वस्तुओं के व्यापार से उत्पन्न हुए हैं जैसे सिलिकान चिप या दवा के कच्चे माल जिनकी ढुलाई एक देश से दूसरे देश में समुद्री जहाज अथवा हवाई जहाज से करनी होती है। माल का भौतिक उत्पादन जिस देश में होता है यदि वह देश निर्यात न कर सके तो आयात करने वाले दूसरे देश पर संकट आ पड़ता है। इसलिए कोविड के कारण सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था चरमरा रही है। तुलना में सेवा क्षेत्र की स्थिति अच्छी है। कारण यह है कि सेवायें जैसे आनलाइन ट्यूशन, टेली मेडिसिन, अनुवाद, सिनेमा, संगीत, साफ्टवेयर, इत्यादि के माल की ढुलाई समुद्री अथवा हवाई जहाज से करने की जरूरत नहीं होती है। इसकी ढुलाई इन्टरनेट के माध्यम से हो सकती है। अतः किसी देश में यदि लाकडाउन लगा भी है तो कर्मी अपने घर में बैठकर इंटरनेट से इनका उत्पादन और सप्लाई अनवरत कर सकते हैं। इसलिए वर्तमान ओमिक्रॉन के संकट को देखते हुए हमें भी सेवा क्षेत्र पर ध्यान देने की जरूरत है। मैन्युफैक्चरिंग और सेवा में दूसरा मूल अंतर सूर्योदय और सूर्यास्त का है। आज औद्योगिक देशों में सेवा क्षेत्र का अर्थव्यवस्था में हिस्सा लगभग 90 प्रतिशत, मैन्युफैक्चरिंग का 9 प्रतिशत और कृषि का मात्र 1 प्रतिशत है। भारत में इस समय सेवा लगभग 60 प्रतिशत, मैन्युफैक्चरिंग लगभग 25 प्रतिशत और कृषि 15 प्रतिशत है।

दोनों की तुलना करने से स्पष्ट है कि अपने देश में भी सेवा का हिस्सा 60 प्रतिशत से आगे बढ़ेगा तो मैन्युफैक्चरिंग का हिस्सा 25 प्रतिशत से घटेगा। अथवा हम कह सकते हैं कि सेवा क्षेत्र में सूर्योदय होगा जबकि मैन्युफैक्चरिंग में सूर्यास्त रहेगा। इस परिस्थिति में विश्व बाजार में सेवाओं जैसे आनलाइन ट्यूशन की मांग में वृद्धि होगी जबकि उत्पादित माल की मांग में तुलना में कम वृद्धि होगी अथवा गिरावट भी हो सकती है। जाहिर है की जिस क्षेत्र में मांग बढ़ने की संभावना है उस क्षेत्र में यदि हम प्रवेश करेंगे तो अपने माल को आसानी से बेच पायेंगे। सूर्यास्त वाले क्षेत्र में हमको अपना माल बेचने में आगे तक कठिन समस्याएं आएंगी। सेवा और मैन्युफैक्चरिंग का तीसरा अंतर है कि मैन्युफैक्चरिंग में उत्तरोत्तर रोबोट और ऑटोमेटिक मशीनों का उपयोग बढ़ता जा रहा है। इतना सही है कि सेवा क्षेत्र में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से भी रोजगार में गिरावट आ सकती है। लेकिन सेवा के तमाम ऐसे क्षेत्र हैं जिनका काम कम्प्यूटर से नहीं हो सकता है जैसे आन लाइन ट्यूशन को लें। यदि जर्मनी में बैठे किसी युवा को आपको गणित की शिक्षा देनी है तो वह साफ्टवेयर प्रोग्राम से कम ही सफल होगी। उसके लिए सामने एक अध्यापक बैठा होना चाहिए जो छात्र अथवा छात्रा के प्रश्नों का उत्तर दे सके और उनकी कठिनाइयों का निवारण कर सके। लगभग एक दशक पूर्व एनीमेटेड फिल्मों का जोर था। कम्प्यूटर से बनाई गई फिल्में कुछ आईं। समयक्रम में अब इनका चलन समाप्त होने लगा है और आज एनिमेटेड सिनेमा का उत्पादन कम हो रहा है। इसका अर्थ यह है कि कुछ विशेष सेवा क्षेत्रों को छोड़ दें तो ऑनलाइन ट्यूशन जैसे तमाम स्थान हैं जहां कम्प्यूटर अथवा रोबोट मनुष्य का स्थान नहीं ले सकेंगे। इसलिए सेवा क्षेत्र तुलना में सुरक्षित रहेगा। चौथा अंतर यह है कि अपने देश में प्राकृतिक संसाधनों का अभाव है। प्रति हेक्टेयर भूमि में हमारी जनसंख्या दूसरे देशों की तुलना में अधिक है। अपने देश में कोयला, बिजली और अन्य खनिज भी दूसरे देशों की तुलना में कम ही पाए जाते हैं। मैन्युफैक्चरिंग में इन प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग अधिक होता है। जैसे आपको स्टील बनाने के लिए कोयला और लौह खनिज की भारी मात्रा में आवश्यकता होती है।

यदि आपके पास कोयला नहीं है तो आपको उसका आयात करना होगा और जो कि महंगा पड़ेगा और आयातित कोयले से आपके द्वारा निर्मित स्टील महंगा पड़ेगा। ये चार कारण बताते हैं कि आने वाले समय में सेवा क्षेत्र में हमारी स्थिति अच्छी हो सकती है। पहला कि मैन्युफैक्चरिंग का वैश्वीकरण पीछे हटेगा, दूसरा सेवा क्षेत्र का हिस्सा उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, तीसरा सेवा क्षेत्र में रोजगार तुलना में सुरक्षित हैं और चौथा सेवा क्षेत्र के लिए प्रमुख कच्चा माल शिक्षा है जो हमारे पास उपलब्ध है और प्राकृतिक संसाधनों का अपने यहां अभाव है। इन चारों कारणों को देखते हुए हमको ओमिक्रॉन वैरिएंट का सामना करने के लिए उत्पादित माल के निर्यात के स्थान पर सेवाओं के निर्यात पर विशेष ध्यान देना चाहिए। यह आश्चर्य की बात है कि इन तमाम तथ्यों के बावजूद सरकार का ध्यान उत्पादित माल के निर्यात पर ही अधिक दिखता है। इसका एक मात्र कारण यह दिखता है कि उत्पादित माल की फैक्ट्री लगाने में जमीन का आबंटन, बिजली का कनेक्शन, पोल्यूशन का अनापत्ति पत्र, जंगल काटने की स्वीकृति, ड्रग लाइसेंस, फूड प्रॉडक्ट का लाइसेंस इत्यादि इत्यादि तमाम सरकारी लाइसेंसों की जरूरत पड़ती है जिसमें नौकरशाही को भारी लाभ होता है। इसलिए सरकार को विचार करना चाहिए कि क्या वे नौकरशाही के हितों की रक्षा करने के लिए मैन्युफैक्चरिंग को ही बढ़ाएगी अथवा जनता के हित को साधने के निर्यात पर विशेष ध्यान देगी। यह आज की चुनौती है।

चंडीगढ़ में आप की जीत : बीजेपी से नाराज दिखी जनता, कांग्रेस से नहीं

प्रेम कुमार

किसानों ने पंजाब में राजनीतिक दल जरूर खड़ा किया है। लेकिन, एक बात साफ है कि किसान आंदोलन कांग्रेस की सरकार के खिलाफ नहीं था इसलिए राजनीतिक दल के रूप में किसानों की पार्टी को कांग्रेस के खिलाफ कोई सफलता मिलेगी- ऐसा दावा नहीं किया जा सकता। अगर यही किसानों की पार्टी अगर आम आदमी के साथ गठबंधन कर चुनाव में उतरती तो निश्चित रूप से कांग्रेस के लिए मुश्किलें खड़ी हो सकती थी। लेकिन, अलग-अलग चुनाव लड़कर ये दल कांग्रेस की मुश्किलें आसान ही कर रहे हैं। चंडीगढ़ नगर निगम चुनावों में आम आदमी पार्टी की जीत और बीजेपी की हार ने सबको चौंकाया है। लेकिन, क्या 'आप' प्रमुख दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के इस बयान में वजन है कि ये चुनाव नतीजे पंजाब में बदलाव का संकेत दे रहे हैं 2016 में चंडीगढ़ के 26 वार्डों में से 20 पर जीत हासिल करने वाली बीजेपी 2021 में परिसीमन के बाद 35 वार्डों में से महज 12 सीटों पर जीत हासिल कर सकी है। एक तिहाई सीट भी नहीं जीत सकी है बीजेपी। दूसरी ओर पहली बार चुनाव लड़ते हुए आम आदमी पार्टी ने 16 सीटों पर जीत हासिल की है और सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। अरविंद केजरीवाल का बयान इसी सफलता के आलोक में है।

पंजाब में बीजेपी से नहीं, कांग्रेस से है आप का मुकाबला- पंजाब में आम आदमी पार्टी का मुकाबला बीजेपी नहीं, कांग्रेस से होगा। पंजाब में कांग्रेस सरकार के खिलाफ विपक्ष बिखरा हुआ है। कोई गठबंधन नज़र नहीं आता है, न ही कोई मजबूत विपक्ष दिखता है। जिस तरह अखिल भारतीय स्तर पर बीजेपी के सामने विपक्ष की चुनौती कमजोर नजर आती रही है उसी तरह पंजाब में कांग्रेस के सामने विपक्ष की चुनौती दिखाई नहीं पड़ती। चंडीगढ़ नगर निगम चुनावों में कांग्रेस के प्रदर्शन में कोई गिरावट नहीं आई है। पिछले चुनाव में जहां कांग्रेस को 4 वार्डों में जीत मिली थी, ताजा चुनाव में उससे दुगुनी संख्या में वार्डों पर जीत मिली है। कांग्रेस के खाते में 8 सीटें आई हैं। चंडीगढ़ नगर निगम चुनाव में सबसे ज्यादा वोट कांग्रेस के खाते में गया है 29.9 प्रतिशत तो दूसरे नंबर पर बीजेपी है 29.3 प्रतिशत आम आदमी पार्टी को सबसे अधिक सीटें जरूर हासिल हुई हैं लेकिन उसे महज 27.1 प्रतिशत वोट मिले हैं।

किसानों की बीजेपी से है नाराज़गी-चंडीगढ़ में बीजेपी को किसान आंदोलन के दौरान सिख समुदाय से पैदा हुई खटास का खामियाजा स्पष्ट तौर पर भुगतना पड़ा है। लेकिन, इसका फायदा कांग्रेस को जितना मिलना चाहिए था, नहीं मिला है। जबकि, आम आदमी पार्टी को बीजेपी से वोटरों की नाराज़गी का भरपूर फायदा मिला है। चंडीगढ़ जैसे शहर में बीजेपी के प्रति वोटरों का आकर्षण कम होना बीजेपी के लिए चिंता की बात है और आम आदमी पार्टी के लिए समर्थन बढ़ना उसके लिए उत्साहजनक है। लेकिन, इससे यह मतलब हरगिज नहीं निकलता कि कांग्रेस को पंजाब में कोई नुकसान होने वाला है क्योंकि चंडीगढ़ में भी कांग्रेस के लिए समर्थन बढ़ा है घटा नहीं। बीजेपी-अकाली दल को नुकसान पहुंचाएगी आम आदमी पार्टी- चंडीगढ़ की जनता ने आम आदमी पार्टी को बीजेपी का विकल्प माना है लेकिन पंजाब की जनता आम आदमी को कांग्रेस का विकल्प मानेगी- यह दावे से नहीं कहा जा सकता। इसका सबसे मजबूत तर्क यह है कि बीते चुनाव में बीजेपी 26 में से 20 वार्डों में जीत के बावजूद पंजाब में फिसड्डी साबित हुई थी। यहां तक कि बीजेपी के साथ गठबंधन करने वाले शिरोमणि अकाली दल का प्रदर्शन भी बुरा रहा था। दूसरा उदाहरण 2011 में चंडीगढ़ नगर निगम के चुनाव नतीजे को ले सकते हैं। तब कांग्रेस का प्रदर्शन शानदार रहा था लेकिन पंजाब विधानसभा चुनाव में शिरोमणि अकाली दल-बीजेपी गठबंधन की सरकार बनी थी। चंडीगढ़ में नगर निगम चुनाव के नतीजे से एक बात पूरी तरह स्पष्ट है कि पंजाब के चुनाव में बीजेपी की लुटिया डूब चुकी मान ली जाए। शिरोमणि अकाली दल की भी दुर्गति होने वाली है जिसका संकेत चंडीगढ़ में उसकी महज एक वार्ड पर जीत के रूप में दिख रही है। इसका मतलब साफ है कि कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच सीधा मुकाबला होगा। अरविंद केजरीवाल के बयान को इस हिसाब से सटीक समझा जाना चाहिए कि पंजाब की सियासत में बदलाव का संकेत चंडीगढ़ के चुनाव नतीजे दे रहे हैं। चंडीगढ़ में कांग्रेस के खिलाफ नहीं दिखा वोटरों का रुझान-चंडीगढ़ नगर नगम के चुनाव में कांग्रेस के खिलाफ वोटरों का रुझान नज़र नहीं आता। लेकिन, कांग्रेस वोटरों का पहला प्यार भी नहीं है यह साफ हो चुका है। मगर, इसकी वजह चंडीगढ़ की जनसांख्यिकी है। चंडीगढ़ में हिन्दुओं की आबादी 80 फीसदी है तो सिखों की 13 फीसदी। चंडीगढ़ की तुलना दिल्ली से हो सकती है जहां बीजेपी से मुकाबले में आम आदमी पार्टी लगातार भारी पड़ रही है। पंजाब के भीतर भी कई शहर हैं जहां हिन्दी भाषियों की आबादी ज्यादा है। लुधियाना, जालंधर और बठिंडा में हिंदू बहुसंख्यक हैं तो अमृतसर में सिख और हिंदू करीब-करीब बराबर हैं। इन इलाकों में चंडीगढ़ की तरह आम आदमी पार्टी बीजेपी-अकाली दल को नुकसान पहुंचा सकती है। मगर, पंजाब के बाकी हिस्सों में स्थिति अलग है। किसान आंदोलन के प्रति मोदी सरकार के रवैये ने पंजाब में बीजेपी और मोदी सरकार के साथ रहे अकाली दल का भरपूर नुकसान किया है। हालांकि अकाली दल ने मोदी सरकार से अलग होकर अपना वजूद बचाने की कोशिश की है। फिर भी बीजेपी-अकाली दल के समर्थक वोटर जो कांग्रेस की तरफ नहीं जा सकते, उनके लिए आम आदमी पार्टी विकल्प के तौर पर सामने आई है।

पंजाब में घटती चली गई है आप की ताकत-2017 के विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी ने 20 सीटों पर जीत हासिल की थी लेकिन 2021 आते-आते पार्टी की ताकत 11 विधायकों की रह गयी है। सांसद और विधायक लगातार पार्टी छोड़ते रहे हैं। ऐसे में आम आदमी पार्टी के लिए कांग्रेस को हरा पाना मुश्किल होगा। मालवा में आप जरूर कांग्रेस को टक्कर दे रही है। लेकिन, दोआब और माझा में कांग्रेस को टक्कर दे पाने में शिरोमणि अकाली दल की हालत पतली हो रही है। कैप्टन अमरिंदर सिंह कांग्रेस को नुकसान कर सकते थे लेकिन बीजेपी के साथ गठबंधन कर उन्होंने अपने पैर में कुल्हाड़ी मार ली है। पंजाब में बीजेपी के खिलाफ लहर है जिसकी बानगी चंडीगढ़ में देखने को मिली है। किसानों ने पंजाब में राजनीतिक दल जरूर खड़ा किया है। लेकिन, एक बात साफ है कि किसान आंदोलन कांग्रेस की सरकार के खिलाफ नहीं था इसलिए राजनीतिक दल के रूप में किसानों की पार्टी को कांग्रेस के खिलाफ कोई सफलता मिलेगी- ऐसा दावा नहीं किया जा सकता। अगर यही किसानों की पार्टी अगर आम आदमी के साथ गठबंधन कर चुनाव में उतरती तो निश्चित रूप से कांग्रेस के लिए मुश्किलें खड़ी हो सकती थी। लेकिन, अलग-अलग चुनाव लड़कर ये दल कांग्रेस की मुश्किलें आसान ही कर रहे हैं। चंडीगढ़ में नगर निगम के चुनाव नतीजे कांग्रेस के लिए डराने वाले कतई नहीं हैं। पंजाब में कांग्रेस के सामने न कोई गठबंधन और न ही विपक्षी एकता का प्रदर्शन हो पाया है। इसलिए आम आदमी पार्टी भले ही अपने प्रदर्शन में थोड़ा सुधार करने में कामयाब हो जाए, लेकिन वह कांग्रेस को सत्ता से उखाड़ फेंकेगी- चंडीगढ़ के चुनाव नतीजों से ऐसे संकेत तो कतई नहीं मिलते।

योगी की सत्ता वापसी के नुकसान

अनिल सिंह

उत्तर प्रदेश समेत पांच राज्यों के चुनाव अगले साल की शुरूआत में होने वाले हैं। इन राज्यों में सबसे महत्वपूर्ण राज्य है उत्तर प्रदेश, जहां इस समय योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा की सरकार है। यूपी की हार और जीत तय करेगी कि 2024 में ऊंट किस करवट बैठेगा। केंद्र की कुर्सी उत्तर प्रदेश से होकर जाती है, और 2014 एवं 2019 के आम चुनावों ने इस बात को साबित भी किया है। उत्तर प्रदेश पर उन पार्टियों की नजर भी है, जिनका यूपी की सियासत से कोई लेना-देना नहीं है, पर दूसरे राज्यों में भाजपा की विरोधी हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बाद विपक्षी दलों के सर्वाधिक निशाने पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ हैं। कड़क, ईमानदार एवं अपराध विरोधी छवि की बदौलत पांच साल सरकार चलाने के बावजूद योगी के खिलाफ सत्ता विरोधी लहर नजर नहीं आ रही है। उत्तर प्रदेश को लेकर हुए कई सर्वे में आंकड़े अब भी भाजपा और योगी आदित्यनाथ के पक्ष में हैं। पांच साल सरकार चलाने के बाद भी मुख्यमंत्री के रूप में योगी जनता की पहली पसंद बने हुए हैं। हालांकि मुट्ठीभर, लेकिन ताकतवर लॉबी हर मुमकिन कोशिश में जुटी है कि योगी आदित्यनाथ की सत्ता में वापसी ना हो। भाजपा की वापसी हो भी तो योगी आदित्यनाथ किसी कीमत पर मुख्यमंत्री ना बनें। बड़ा सवाल है कि आखिर ये कौन लोग हैं, जो भाजपा से ज्यादा बड़ा दुश्मन योगी आदित्यनाथ को मानकर उन्हें सत्ता से बेदखल करने में जुटे हुए हैं! इस ताकतवर लॉबी के इको सिस्टम को समझना है तो फिर आपको साल 1985 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी के दिये गये उस वक्तव्य को याद करना होगा, जिसमें उन्होंने कहा था कि सरकार की तरफ से भेजे जाने वाले एक रुपये में मात्र पंद्रह पैसे ही जनता तक पहुंच पाते हैं, शेष पच्चासी पैसे सिस्टम के भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाते हैं। यह पच्चासी पैसे को खा जाने वाले लोग ही नहीं चाहते कि योगी दुबारा सीएम के रूप में उत्तर प्रदेश में वापसी करें। पच्चासी पैसे के लीकेज को रोकने की वजह से ही योगी आदित्यनाथ मजबूत लॉबी के निशाने पर हैं, जिसमें उत्तर प्रदेश के नौकरशाहों से लेकर सत्ता की दलाली में मुंह काला करने वाले लॉबिस्ट, पत्रकार, नेता, बिल्डर, व्यवसायी तक शामिल हैं, जिनकी भ्रषटाचार की कमाई किसी ना किसी तरह से प्रभावित हुई हैं।

योगी ने ऐसे लोगों को भी अपने से दूर रखा है, जिसके चलते बीते साढ़े चार साल में उन पर भ्रष्टाचार का एक आरोप तक नहीं लग पाया है। डीबीटी यानी डाइरेक्ट बेनफिट ट्रांसफर के जरिये योगी ने पच्चासी पैसे निगल जाने वालों को दरकिनार कर दिया है। अखिलेश यादव की सरकार में जो उत्तर प्रदेश डीबीटी यानी लाभार्थी के खाते में सीधे धनांतरण के मामले में फिसड्डी हुआ करता था, योगी ने उस राज्य को टॉप टू में लाकर खड़ा कर दिया है। 85.2 प्वाइंट के साथ सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश डीबीटी के मामले में दूसरे स्थान पर है, जबकि ढाई करोड़ आबादी वाला हरियाणा 88.8 प्वाइंट के साथ पहले स्थान पर है। देश के सर्वाधिक जनसंख्या वाले पांच राज्यों में महाराष्ट्र 26वें, बिहार 9वें, पश्चिम बंगाल 36वें तथा मध्य प्रदेश 10वें स्थान पर है। टॉप दस में भी झारखंड को छोड़कर शेष एनडीए या भाजपा शासित राज्य ही शामिल हैं। डबल इंजन की सरकार का फायदा डीबीटी में साफ नजर आता है। जिस केरल का डंका पीटकर एक वर्ग रागदबारी गाता है, वह राज्य भी डीबीटी के मामले में टॉप ट्वेंटी से बाहर फिसड्डी राज्यों की लिस्ट में शामिल है। डीबीटी के मजबूत एवं पारदर्शी तंत्र के जरिए उत्तर प्रदेश ने भ्रष्टाचार करने वाले अधिकारियों-नेताओं-दलालों के सिंडिकेट को पूरी तरह हाशिये पर डाल दिया है। योगी आदित्यनाथ के इसी कदम के चलते वह लॉबी नाराज है जो पिछली सरकारों में जनता के लाभांश हिस्से का बड़ी रकम गटक जाती थी। इस वर्ग को बसपा या सपा की सरकार में इस तरह की परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता था इसलिये यह लॉबी पूरी तरह प्रयासरत है कि योगी की वापसी ना हो। योगी सरकार ने चालू वित्तीय वर्ष में अब तक 75, 984 करोड़ रुपये सीधे लाभार्थियों के खाते में आंतरित कर पच्चासी पैसे खा जाने वाली आबादी को नाराज कर दिया है। योगी ने भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाने वाली ज्यादातर योजनाओं में सरकारी सिस्टम के सीधे हस्तक्षेप को खत्म कर दिया है। अब लाभार्थी को एक बार डीबीटी में रजिर्स्ड हो जाने के बाद ना तो किसी विभाग का चक्कर काटना है और ना ही किसी सरकारी कर्मचारी-अधिकारी के दर पर भटकना है। योगी सरकार ने बीते पांच सालों में भ्रष्ट अधिकारियों एवं कर्मचारियों के खिलाफ बड़े पैमाने पर कार्रवाई करते हुए उन्हें सेवा से बर्खास्त करने तक का कठोर कदम भी उठाया है, जिसने जनता को बहुत राहत दी है। संभावना है कि अगर योगी दुबारा सत्ता में वापसी करते हैं तो इन सुधारों का दायरा और बढ़ायेंगे, इसी वजह से भ्रष्टाचार का इको सिस्टम और इससे जुड़े लोग किसी भी कीमत पर उनकी वापसी नहीं होने देना चाहते हैं। ये लॉबी जानती है कि योगी की सत्ता में वापसी का सीधा मतलब है कि अब भी सिस्टम में जो लीकेज बचे हैं, उन पर भी आफत आना तय हो जायेगा। बीते एक साल से योगी आदित्यनाथ को कुर्सी से हटाने से लेकर उनके पर करतने, कैबिनेट सहयोगियों से छत्तीस का आंकड़ा बताकर उनके खिलाफ माहौल बनाने, उनकी छवि को ध्वस्त किये जाने की कोशिश लगातार जारी है। संभव है कि यह प्रयास विधानसभा चुनाव के रिजल्ट आने के बाद तक भी जारी रहे।

योगी सरकार के सुधारवादी कदमों एवं भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के चलते ही उत्तर प्रदेश की छवि राष्ट्रीय स्तर पर बदली है। योगी ने व्यक्तियों की बजाय तकनीक को सुधार का माध्यम बनाया, जिसका असर नजर आने लगा है। इज ऑफ डूइंग बिजनेस के मामले में अखिलेश यादव के कार्यकाल में उत्तर प्रदेश 12वें स्थान पर था, परंतु 186 बिजनेस रिफार्म, कानून-व्यवस्था में सुधार, संगठित अपराध का खात्मा तथा सिंगल विंडो स्स्टिम लागू कर योगी आदित्यनाथ की सरकार में दूसरे स्थान पर आ चुका है। निवेश का माहौल बनाने के साथ योगी ने सिंगल विंडो सिस्टम लागू कर उस सिंडिकेट को कमजोर कर दिया, जो राज्य में निवेश की दिलचस्पी लेने वाले निवेशकों की राह में भ्रष्टाचार का बाधा पैदा करता था।

खटारा कार से भी बेकार हुए मिग विमान

योगेश कुमार गोयल

24 दिसंबर की रात राजस्थान के जैसलमेर जिले में सुदासरी नेशनल डेजर्ट पार्क के पास वायुसेना का लड़ाकू विमान मिग-21 गिर गया। पायलट विंग कमांडर हर्षित सिन्हा ने अभ्यास के लिए उड़ान भरी ही थी कि तकनीकी खराबी के कारण हुई दुर्घटना में उनकी मौत हो गई। वायुसेना मामले की जांच कर रही है, लेकिन मिग-21 के साथ यह कोई पहला हादसा नहीं है, लगातार इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। इससे पहले 25 अगस्त को प्रशिक्षण उड़ान के दौरान राजस्थान के बाड़मेर जिले के भूरटिया गांव में एक मिग-21 एक झोपड़ी पर जा गिरा था। विमान तो जल गया, गनीमत रही कि पायलट बच गया। 20 मई को भी पंजाब के मोगा जिले के लंगियाना खुर्द गांव के पास एक मिग-21 दुर्घटनाग्रस्त हुआ था। उसे उड़ा रहे स्क्वॉड्रन लीडर अभिनव चौधरी की मौत हो गई थी। इसी साल दो और मिग-21 दुर्घटनाग्रस्त हो चुके हैं, जिनमें एक पायलट बच गया तो दूसरे की मौत हो गई थी। पिछले करीब पांच वर्षों में 483 से भी ज्यादा मिग हादसों के शिकार हो चुके हैं, जिनके साथ हम अपने 170 से ज्यादा जांबाज पायलटों को खो चुके हैं। बढ़ रहे हैं मिग हादसेकरीब ढाई साल पहले तत्कालीन वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल बीएस धनोआ ने इन विमानों पर कहा था कि हमारी वायुसेना जितने पुराने मिग विमानों को उड़ा रही है, उतनी पुरानी तो कोई कार भी नहीं चलाता। उन्होंने कहा था कि भारतीय वायुसेना की स्थिति बिना लड़ाकू विमानों के बिल्कुल वैसी ही है, जैसे बिना फोर्स की हवा। उनके मुताबिक मिग बनाने वाला रूस भी अब इसका इस्तेमाल नहीं करता। मिग-21 लगातार गिर रहे हैं, लगातार वायुसेना कोर्ट ऑफ इन्क्वॉयरी कराती रही है, और लगातार ही यह सवाल उठता रहा है कि फिर वायुसेना इन्हें ढो क्यों रही है

बता दें कि वायुसेना को 1964 में पहला सुपरसोनिक मिग-21 विमान मिला था। भारत ने रूस से 872 मिग विमान खरीदे थे। इन विमानों ने 1971 के युद्ध और करगिल की लड़ाई सहित कई विपरीत परिस्थितियों में अपना लोहा मनवाया। बहुत पुराना होने के बावजूद फरवरी 2019 में पाकिस्तान के एफ-16 लड़ाकू विमान को गिराकर इसने अपनी सफलता की कहानियों में एक और अध्याय जोड़ दिया। भारतीय वायुसेना के पास इस समय मिग-21 के अलावा सौ से ज्यादा मिग-23, मिग-27, मिग-29 और 112 मिग बाइसन हैं। मिग बाइसन में एक बड़ा सर्च एंड ट्रैक रेडार लगा है, जिससे गाइडेड मिसाइल फायर होती है।

अधिकतम 2230 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार वाले मिग विमान में दो हजार किलो तक गोला-बारूद ले जाया जा सकता है। यह केमिकल, क्लस्टर जैसे वॉरहेड भी प्रयोग कर सकता है और इसके कॉकपिट के बाईं ओर से 420 राउंड गोलियां बरसाने का भी इंतजाम है। मिग बाइसन अपग्रेड किए हुए मिग विमान हैं, इसलिए उनका इस्तेमाल जारी रहेगा। बाकी सभी मिग विमानों को चरणबद्ध तरीके से वायुसेना से बाहर किया जाना है। रक्षा विशेषज्ञों की मानें तो मिग विमान 1960 और 70 के दशक की तकनीक से बने थे। सही मायनों में मिग विमानों को 1990 के दशक में ही सैन्य उपयोग से बाहर कर दिया जाना चाहिए था, क्योंकि इनकी उम्र दो दशक से ज्यादा समय पहले ही पूरी हो चुकी है। इनकी इतनी दुर्घटनाएं हो चुकी हैं कि अब इन्हें ह्यहवा में उड़ने वाला ताबूतह्ल भी कहा जाता है। मिग का न तो इंजन विश्वसनीय रहा, और न इनसे सटीक निशाना लग पाता है। लेकिन हम इन्हें अपग्रेड कर इनकी उम्र बढ़ाने की कोशिश करते रहे हैं और तमाम ऐसी कोशिशों के बावजूद इनकी कार्यप्रणाली धोखा देती रही है। ये चल इसलिए रहे हैं क्योंकि इनके पुर्जे भारत में बन जाते हैं और मरम्मत भी यहीं हो जाती है। कोई कह सकता है कि राफेल, सुखोई और तेजस भी तो हैं, फिर मिग-21 ही क्यों दरअसल भारतीय वायुसेना को अभी तक इन विमानों की खेप पूरी नहीं मिली है और इसमें लंबा समय भी लगेगा। सवाल है, क्या तब तक मिग गिरता रहेगा, मिग से भी कीमती हमारे जांबाज पायलट गिरते रहेंगे।

जसप्रीत बुमराह ने घर से बाहर 100 विकेट लेकर बनाया नया रिकॉर्ड, ऐसा करने वाले पहले खिलाड़ी बने

नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने बुधवार को एक नया रिकॉर्ड अपने नाम किया। बुमराह ने सेंचुरियन के सुपरस्पोर्ट पार्क में दक्षिण अफ्रीका और भारत के बीच पहले टेस्ट के चौथे दिन के अंत में एक शानदार स्पेल के दौरान मील का पत्थर हासिल किया। उन्हें घर से बाहर खेलते हुए अपने 100 टेस्ट विकेट लिए। बुमराह ने आखिरी सेशन के अंतिम 30 मिनट में दक्षिण अफ्रीका के कप्तान डीन एल्गर और रैसी वैन डर हसन के बीच तीसरे विकेट के लिए चल रही एक मजबूत साझेदारी को तोड़ा। बुमराह ने उन्हें 11 रन पर क्लीन बोल्ड किया। रैसी वैन डर हसन घर से बाहर बुमराह का 100वां टेस्ट शिकार बने। 28 साल के बुमराह के नाम टेस्ट में 105 विकेट हैं। जिसमें से 101 विकेट उन्होंने ओवरसीज में लिए हैं। साल 2018 में टेस्ट क्रिकेट में डेब्यू करने वाले बुमराह ने कुल 25 टेस्ट मैच खेले हैं। इनमें से 23 घर से बाहर है। उन्होंने घर से बाहर 100 विकेट लेने में सबसे कम टेस्ट विकेट लिए हैं। उनके 104 टेस्ट विकेट में से 100 घर से बाहर है। वहीं पाकिस्तान के तेज गेंदबाज मोहम्मद आमिर के 118 टेस्ट विकेट में 100 विकेट घर से बाहर थे। उन्होंने आमिर का रिकॉर्ड तोड़ा।

बुमराह ने चौथे दिन 2 विकेट चटकाए। भारत अब जीत से 6 विकेट दूर है। भारत के पास दक्षिण अफ्रीका में पहली टेस्ट सीरीज जीतने का शानदार मौका है। वो आज तक साउथ अफ्रीका में कोई टेस्ट सीरीज नहीं जीत पाई है। बुधवार को दिन की अंतिम गेंद में नाइटवॉचमैन केशव महाराज को बुमराह ने शानदार यॉर्कर पर आउट किया। साउथ अफ्रीको को मैच जीतने के लिए 211 रन बनाने हैं और उसके पास 6 विकेट हाथ में हैं। भारत दूसरी पारी में 174 रनों पर ऑलआउट हुई। । साउथ अफ्रीका की तरफ से कगिसो रबाडा और मार्को जेनसन ने 4-4 विकेट लिए।

भारत को टेस्ट मैच जीतने के 5वें दिन लेने होंगे 6 विकेट, साउथ अफ्रीका लक्ष्य से 211 रन दूर

नई दिल्ली। साउथ अफ्रीका के कप्तान डीन एल्गर के संघर्ष के बावजूद जसप्रीत बुमराह के आखिरी क्षणों में लिए गए दो विकेट की मदद से भारत ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट क्रिकेट मैच के चौथे दिन बुधवार को यहां जीत की अपनी संभावनाओं को पंख लगाए। दक्षिण अफ्रीका ने 305 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए चौथे दिन का खेल समाप्त होने तक अपनी दूसरी पारी में एक विकेट पर 94 रन बनाए हैं। वह अब लक्ष्य से 211 रन दूर है। भारत ने अपनी दूसरी पारी में 174 रन बनाए थे। सेंचुरियन में सबसे बड़ा लक्ष्य हासिल करने का रिकार्ड इंग्लैंड के नाम पर है जिसने 2000-01 में चौथी पारी में 251 रन बनाकर जीत दर्ज की थी। मौसम विभाग ने हालांकि गुरुवार को मैच के पांचवें दिन बारिश की भविष्यवाणी की है। भारत ने पहली पारी में 327 रन बनाकर दक्षिण अफ्रीका को 197 रन पर आउट करके 130 रन की बढ़त हासिल की थी। सुपरस्पोर्ट पार्क में चौथे दिन भी गेंदबाजों की तूती बोली। दिन भर में 13 विकेट गिरे लेकिन वह एल्गर थे जिन्होंने ऐसी परिस्थितियों में खेलने के लिए जरूरी एकाग्रता का अच्छा नमूना पेश किया। वह अभी 52 रन पर खेल रहे हैं। बुमराह (22 रन देकर दो) ने हालांकि उनकी मुश्किलें बढ़ा दी हैं। मोहम्मद शमी (29 रन देकर एक) ने बुमराह के साथ नई गेंद संभाली और अपनी तीसरी गेंद पर ही एडेन मार्कराम (एक) को बोल्ड किया। कीगन पीटरसन (17) आउट होने वाले अगले बल्लेबाज थे। पीटरसन ने एल्गर के साथ 12 ओवर तक विकेट नहीं गिरने दिया था लेकिन मोहम्मद सिराज (25 रन देकर एक) की आउटस्विंगर उनकी समझ से परे थी जिस पर उन्होंने विकेट के पीछे कैच दिया।

एल्गर के साथ रैसी वैन डर डुसेन ने अगले 23 ओवर तक मजबूत से बल्लेबाजी की। इस बीच कुछ गेंदें बल्ले का किनारा लेकर स्लिप में आगे गिरी। ऐसे में बुमराह की तेजी से अंदर आती गेंद ने डुसेन (65 गेंदों पर 11 रन) का ऑफ स्टंप थर्राकर भारत को महत्वपूर्ण सफलता दिलाई। इसके बाद उन्होंने नाइटवाचमैन केशव महाराज (आठ) को बोल्ड किया। इससे पहले भारत की तरफ से दूसरी पारी में ऋषभ पंत ने सर्वाधिक 34 रन बनाए जबकि उसके बाद दूसरा बड़ा स्कोर अतिरिक्त रन (27) का था। दक्षिण अफ्रीका के लिए कगिसो रबाडा (42 रन देकर चार), मार्को जेनसन (55 रन देकर चार) और लुंगी एनगिडी (31 रन देकर दो) ने विकेट लिए। रन बनाने के लिए जूझ रहे भारत के तीनों मुख्य बल्लेबाजों कप्तान विराट कोहली (18), चेतेश्वर पुजारा (16) और अंजिक्य रहाणे (20) ने गैरजिम्मेदाराना शॉट खेलकर अपने विकेट गंवाए तो केएल राहुल (74 गेंदों पर 23 रन), पंत और रविचंद्रन अश्विन (14) शार्ट पिच गेंदों का शिकार बने। भारत ने सुबह एक विकेट पर 16 रन से आगे खेलते हुए पहले सेशन में टिककर बल्लेबाजी की। इस बीच उसने 63 रन जोड़े तथा नाइटवाचमैन शार्दुल ठाकुर (10) और पहली पारी के शतकवीर राहुल के विकेट गंवाए। उसने अपने बाकी बचे सात विकेट दूसरे सेशन में गंवाए और इस बीच 95 रन जोड़े। राहुल ने ऑफ स्टंप से बाहर की कई गेंदों को छोड़ा। इस बीच एनगिडी की तेजी से उठती एक गेंद उनकी उंगलियों पर लगी जिसके लिए उन्हें मेडिकल मदद लेनी पड़ी। इससे उनकी एकाग्रता भंग हुई और एनगिडी की ऑफ स्टंप से बाहर जाती गेंद पर उन्होंने पहली स्लिप में खड़े एल्गर को कैच दे दिया। कोहली अच्छी लय में दिख रहे थे लेकिन लंच के बाद पहली गेंद पर ढीला शॉट खेलकर उन्होंने जेनसन को अपना विकेट इनाम में दिया। पुजारा ने ऑफ स्टंप की बाहर की गेंदों को छोड़ा। उन्हें पहले सत्र में रबाडा ने जीवनदान भी दिया। पुजारा इसका फायदा नहीं उठा पाये और एनगिडी की लेग साइड की गेंद उनके बल्ले का किनारा लेकर क्विंटन डिकॉक के सुरक्षित हाथों में चली गयी।

मार्को जेनसन ने डेब्यू टेस्ट में लिया विराट कोहली का विकेट

3 साल पहले नेट में भी भारतीय कप्तान को किया था खूब परेशान

नई दिल्ली। भारत के टेस्ट टीम के कप्तान विराट कोहली का विकेट लेना हर गेंदबाज का सपना है। अगर किसी गेंदबाज को उसके टेस्ट डेब्यू में उनका विकेट मिल जाए तो इससे बेहतर ड्रीम डेब्यू क्या हो सकता है। साउथ अफ्रीका के तेज गेंदबाज मार्को जेनसन ने सेंचुरियन टेस्ट में भारत के खिलाफ अपना इंटरनेशनल टेस्ट डेब्यू किया। उन्होंने दूसरी पारी में विराट कोहली को आउट किया।

बॉक्सिंग डे टेस्ट की दूसरी पारी में जैनसन ने 18 रन पर विराट की पारी का अंत किया। दूसरी पारी में लंच-ब्रेक के बाद विराट ने जेनसन की गेंद पर ड्राइव लगाने की कोशिश की। बॉल उनके बल्ले का बाहरी किनारा लेकर सीधे विकेटकीपर क्विंटन डिकॉक के दस्तानों में समा गई। विराट का विकेट मिलने से वो काफी खुश दिखे। इसका असर 21 साल के युवा गेंदबाज के प्रदर्शन पर दिखा। उन्होंने दूसरी पारी में 4 विकेट लिए। ये बात बहुत कम लोग जानते हैं कि साल 2018 में जब भारत साउथ अफ्रीका के दौरे में आए थे तो प्रैक्टिस सेशन में मार्को जेनसन ने विराट को गेंदबाजी की थी। विराट ने तब इनकी काफी तारीफ की थी। उन्होंने विराट की कही बात को साबित करते हुए अपने डेब्यू से हर किसी को प्रभावित किया। विराट कोहली दो साल से इंटरनेशनल क्रिकेट में शतक के लिए तरस रहे हैं। उन्होंने नंवबर 2019 में अपना आखिरी टेस्ट शतक जड़ा था। विराट साल 2020 में भी शतक नहीं लगा पाए थे और इस साल भी वो शतक का सूखा समाप्त नहीं कर पाए। ऐसा पहली बार हुआ है जब विराट कोहली इंटरनेशनल क्रिकेट में लगातार दो सालों में कोई शतक नहीं लगा पाए हैं। टेस्ट मैच की बात करें तो भारत ने मैच में अपनी पकड़ मजबूत कर ली है। खबर लिखे जाने तक 305 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए साउथ अफ्रीका ने अपनी दूसरी पारी में 2 विकेट पर 69 रन बना लिए हैं। इससे पहले दूसरी पारी 174 रनों पर सिमट गई। दक्षिण अफ्रीका की पहली पारी 197 रनों पर सिमट गई थी।इससे पहले टीम इंडिया ने पहली पारी में 327 रन बनाए।

विराट कोहली लगातार दूसरे साल नहीं जड़ सके सेंचुरी, बॉक्सिंग डे टेस्ट में भी हुए फेल

नई दिल्ली। भारत के टेस्ट टीम के कप्तान विराट कोहली लगातार दूसरे साल इंटरनेशनल क्रिकेट में शतक नहीं जड़ पाए। बॉक्सिंग डे टेस्ट की दूसरी पारी में वो 18 रन पर पवेलियन लौट गए। उनका विकेट मार्को जेनसन ने लिया। मार्को जेनसन ने दूसरी पारी में 4 विकेट लिए। उन्होंने सेंचुरियन टेस्ट में डेब्यू किया। दूसरी पारी में विराट ने जेनसन की गेंद पर ड्राइव लगाने की कोशिश की। बॉल उनके बल्ले का बाहरी किनारा लेकर सीधे विकेटकीपर क्विंटन डिकॉक के दस्तानों में समा गई। लंच के तुरंत बाद विराट आउट हुए।

विराट कोहली ने अपना आखिरी इंटरनेशनल शतक बांग्लादेश के खिलाफ 2019 में लगाया था। उन्होंने नंवबर 2019 में अपना आखिरी टेस्ट शतक जड़ा था। वहीं कोहली ने अपना आखिरी वनडे शतक अगस्त 2019 में वेस्टइंडीज के खिलाफ लगाया था। विराट साल 2020 में भी शतक नहीं लगा पाए थे और इस साल भी वो शतक का सूखा समाप्त नहीं कर पाए। ऐसा पहली बार हुआ है जब विराट कोहली इंटरनेशनल क्रिकेट में लगातार दो सालों में कोई शतक नहीं लगा पाए हैं। विराट कोहली ने इस दौरान रन बनाए वो कई बार अच्छे लय में भी दिखे। अपनी पारी को वो दो सालों में शतक में नहीं तब्दील कर सके। टेस्ट मैच की बात करें तो भारत की दूसरी पारी 174 रनों पर सिमट गई। खबर लिखे जाने तक 305 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए साउथ अफ्रीका ने अपनी दूसरी पारी में एक विकेट पर 12 रन बना लिए हैं।

भारत के दिग्गज स्पिनर रविचंद्रन अश्विन का दबदबा कायम, गेंदबाजों और ऑलराउंडर की लिस्ट में दूसरे नंबर पर

नई दिल्ली। भारतीय ऑफ स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) की बुधवार को जारी ताजा वर्ल्ड रैंकिंग में अपना दबदबा बरकरार रखा है। उन्होंने गेंदबाजों और ऑलराउंडरों की सूची में अपना दूसरा स्थान बरकरार रखा। रविंद्र जडेजा टेस्ट ऑलराउंडरों की सूची में तीसरे स्थान पर बने हुए हैं। रोहित शर्मा और कप्तान विराट कोहली ने भी बल्लेबाजों की सूची में क्रमशः पांचवां और सातवां स्थान बरकरार रखा है। रोहित के 797 और कोहली के 756 प्वॉइंट हैं। बल्लेबाजों की सूची में ऑस्ट्रेलिया के मार्नस लाबुशेन (915 अंक) शीर्ष पर काबिज हैं। इंग्लैंड के कप्तान जो

रूट (900) दूसरे स्थान पर हैं जबकि न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन (879) ने स्टीव स्मिथ (877) को तीसरे स्थान से हटा दिया है। रोहित, डेविड वॉर्नर, कोहली, दिमुथ करुणारत्ने, बाबर आजम और ट्रैविस हेड शीर्ष 10 में शामिल हैं। टेस्ट गेंदबाजों में अश्विन टॉप 10 में शामिल एकमात्र भारतीय हैं। वह 883 रेटिंग प्वॉइंट के साथ दूसरे स्थान पर बने हुए हैं। ऑस्ट्रेलिया के टेस्ट कप्तान पैट कमिंस टॉप पर काबिज हैं जबकि पाकिस्तान के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी तीसरे स्थान पर हैं। उनके बाद टिम साउदी और और जेम्स एंडरसन का नंबर आता है।

ऑस्ट्रेलिया की तरफ से मेलबर्न टेस्ट में डेब्यू करने वाले स्कॉट बोलैंड ने इंग्लैंड की दूसरी पारी में सात रन देकर छह विकेट लिए थे जिसके दम पर उन्होंने 271 रेटिंग अंक हासिल किये और 74वें स्थान पर जगह बनाई। ऑलराउंडरों की सूची में जेसन होल्डर टॉप पर हैं। उनके बाद अश्विन, जडेजा, शाकिब अल हसन, मिशेल स्टार्क और बेन स्टोक्स का नंबर आता है। टेस्ट टीम रैंकिंग में भारत 124 अंक के साथ चोटी पर है। न्यूजीलैंड दूसरे, आस्ट्रेलिया तीसरे और इंग्लैंड चौथे स्थान पर है।

मशहूर क्रिकेट कमेंटेटर हर्षा भोगले ने चुनी साल 2021 की बेस्ट टी-20 इलवेन

नई दिल्ली। दुनिया के मशहूर क्रिकेट कमेंटेटर हर्षा भोगले ने साल 2021 की अपनी बेस्ट टी-20 इलेवन चुनी है। उन्होंने अपनी टी-20 इलेवन में भारत के एकमात्र क्रिकेटर को शामिल किया है। भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को उनकी बेस्ट टी-20 प्लेइंग इलेवन में जगह मिली है। भोगले ने पाकिस्तान के मोहम्मद रिजवान और इंग्लैंड के जोस बटलर को बतौर ओपनर अपनी टीम में शामिल किया है। भोगले ने कहा कि पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम और रिजवान दोनों ने साल 2021 में टी-20 में शानदार प्रदर्शन किा है। लेकिन वो रिजवान के साथ इसलिए गए क्योंकि उनका पावरप्ले में स्ट्राइक रेट बाबर से बेहतर था। क्रिकबज से बातचीत में हर्षा ने मिचेल मार्श और ग्लेन मैक्सवेल की ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी को चुना। इंग्लैंड के मोईन अली को भी उन्होंने अपनी प्लेइंग इलेवन में चुना। भोगले में अपनी टीम में दो ऑलराउंडर के तौर पर वेस्टइंडीज के सुनील नारायण और आंद्रे रसेल को चुना।

आईसीसी ने बेस्ट टी-20 वर्ल्ड प्लेयर के लिए इन 4 खिलाड़ियों को नॉमिनेट

नई दिल्ली। इंटरनेशनल क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) ने बुधवार को मेंस कैटेगरी में टी-20 प्लेयर ऑफ द ईयर पुरस्कार के लिए नामित खिलाड़ियों की घोषणा की, जिसमें दो विकेटकीपर बल्लेबाज और दो ऑलराउंडर शामिल हैं। इंग्लैंड के जोस बटलर, श्रीलंका के वानिंदु हसरंगा, ऑस्ट्रेलिया के मिचेल मार्श और पाकिस्तान के मोहम्मद रिजवान को 2021 में टी-20 क्रिकेट में उनके शानदार प्रदर्शन के लिए इस प्रतष्ठिति पुरस्कार के लिए नामित किया गया है।बटलर ने इस कैलेंडर वर्ष में 14 मैचों में 65.44 के औसत से 589 रन बनाए हैं, जिसमें एक शतक और 13 बार बतौर विकेटकीपर विपक्षी बल्लेबाजों को आउट करना शामिल है। बटलर ने हाल ही में यूएई में संपन्न आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप में शानदार फॉर्म के साथ 269 रन बना कर इंग्लैंड के प्रमुख रन-स्कोरर के रूप में टूर्नामेंट का समापन किया था। वहीं श्रीलंका के गेंदबाजी ऑलराउंडर हसरंगा ने 20 मैचों में 11.63 के औसत से 36 विकेट लिए और बल्ले के साथ 196 रन बनाए, जिसमें एक

अर्धशतक शामिल है। उन्होंने अपने टी-20 वर्ल्ड कप अभियान को भी 16 विकेटों के साथ सर्वाधिक विकेट लेने वाले गेंदबाज के रूप में समाप्त किया और बल्ले के साथ कुछ शानदार पारियां भी खेलीं, जिसमें आयरलैंड के खिलाफ 71 शामिल हैं। ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर मार्श ने इस वर्ष 27 मैचों में 36.88 के औसत से 627 रन बनाने के अलावा 18.37 के औसत से आठ विकेट भी लिए। वह टी-20 वर्ल्ड कप में शानदार रहे और फाइनल में न्यूजीलैंड के खिलाफ नाबाद 77 रन की यादगार पारी खेली, जिसके लिए उन्हें 'प्लेयर ऑफ द मैच' चुना गया। पाकिस्तान के स्टार विकेटकीपर बल्लेबाज रिजवान भी इस वर्ष लाजवाब रहे।

रिजवान 29 मैचों में 73.66 के औसत से एक शतक के साथ 1326 रन बना कर इस वर्ष टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट सर्वाधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी रहे हैं। वहीं उन्होंने बतौर विकेटकीपर 24 बार विपक्षी बल्लेबाजों को आउट करने में योगदान दिया।

चौथे दिन कैसी होगी टीम इंडिया की रणनीति, मोहम्मद शमी ने बताया

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम ने सेंचुरियन टेस्ट पर पकड़ मजबूत भले कर ली है, लेकिन चौथे दिन पहले दो सेशन मैच के रिजल्ट के लिहाज से काफी अहम साबित होंगे। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच सेंचुरियन के सुपरस्पोर्ट पार्क स्टेडियम में तीन मैचों की सीरीज का पहला टेस्ट मैच खेला जा रहा है। तीसरे दिन का खेल खत्म होने तक भारत की बढ़त 146 रनों की हो चुकी है, जबकि अभी नौ विकेट उसके खाते में बचे हुए हैं। तीसरे दिन के हीरो रहे मोहम्मद शमी ने बताया है कि चौथे दिन टीम इंडिया किस रणनीति के साथ खेलने उतरेगी। शमी ने तीसरे दिन का खेल खत्म होने के बाद प्रेस कॉन्फ्रेन्स में कहा, 'मैच के दो दिन बचे हैं। मुझे ऐसा लगता है कि चौथे दिन हम ज्यादा से ज्यादा समय तक बल्लेबाजी करना चाहेंगे। अगर हम करीब 250 रन बनाते हैं और 400 के आसपास टारगेट देते हैं, तो दक्षिण अफ्रीका को ऑलआउट करने के लिए हमारे पास चार सेशन होंगे।' टीम इंडिया ने पहली पारी में 327 रन बनाए, जबकि दक्षिण अफ्रीकी टीम 197 रनों पर सिमट गई।

धान खरीद केन्द्रों पर रात के समय ही होती है खरीदारी

कुछ पुराने दलाल बिचौलियों से 200 रुपए प्रति कुंतल लेकर कराते हैं धान की खरीद

अखंड भारत संदेश

किशनी। जब किसी पशु के मुंह मनुष्य का खून लग जाता है तो वह आदमखोर होजाता है। इसी प्रकार वर्षों से खरीद केन्द्रों पर दलाली करके उदरपूर्ति करने बालों के साथ हो रहा है। ये दलाल दिन में मण्डी में धान की खरीद सस्ती कीमत पर कर लेते है।

बाद में उसे रात के अंधेरे में आईएफसी गोदाम किशनी पर लाकर सैटिंग कर आननफानन में बेच देते है। पर जब गाँवों से कोई किसान अपना धान लेकर आता है तो उससे कहा जाता है कि धानमिल बाले धान नहीं ले रहे हैं।इसलिए कुछ दिन रुको। किसान महीनों तक चक्कर काटता रहता है पर फसल बेच नहीं पाता है। रविवार की रात भी यही हुआ। एक किसान देर रात एफसीआई खरीद केन्द्र पर हालात देखने गया। वहां करीब दस ट्रेक्टर ट्रॉली धान से भरी खडीं थी। उसने जब वीडियो बनाया तो उसका एक कर्मचारी से वादविवाद होगया। किसान ने एसडीएम को फोन पर सारी बातें बताई तो एसडीएम तुरन्त ही मौके पर जा पहुंचे पर एसडीएम को वहां पर एक भी ट्रॉली खडी नहीं मिली। दरअसल बिचौलियों को सूचना मिलगई थी कि एसडीएम आ रहे हैं।

तो उन्होंने एसडीएम के आने से पूर्व ही सारी ट्रॉलियों को वहां से हटा दिया।सूत्रों की मानें तो एमएसपी पर किसानों का धान न बिके इसके लिये कई गैंग सक्रिय हैं। किसान जब मण्डी में अपना धान बेच देता है तो ये दलाल उसी धान को 200 प्रति कुंतल कमीशन केंद्र प्रभारी को देकर खरीद केन्द्र पर ही धान बेच देते है। पर बेचारा किसान महीनों केन्द्र के चक्कर लगाता रहता है।

खरीद केन्द्रों पर किसानों की बजाय बिचौलियों का धान खरीदे जाने की शिकायत

अखंड भारत संदेश

धृष्टता इतनी कि नायब तहसीलदार के कहने पर भी केन्द्र प्रभारी ने धान नहीं खरीदा

किशनी। थाना बेबर के गांव सोवनपुर निवासी गौरव यादव पुत्र जयवीर ने एसडीएम को प्रार्थनापत्र देकर बताया कि खरीद केन्द्र टोडरपुर पर वह पिछले एक माह से चक्कर लगा

रहा है। पर उसका धान नहीं खरीदा गया। परेशान होकर उसने 06 दिसम्बर को एसडीएम जयप्रकाश से इसकी शिकायत की तो उन्होंने नायब तहसीलदार रोहित यादव को मौके पर भेजा। उन्होंने टोडरपुर जाकर आश्वासन दिया कि उसका धान 8 दिसम्बर को लेलिया जायेगा। उस दिन से वह रोजाना केन्द्र पर जाता है पर केन्द्र प्रभारी का कहना होता है कि उसके पास धान रखने की जगह नहीं है। उन्होंने बताया सत्यता इसके बिपरीत है। उन्होंने रहस्योद्घाटन किया कि खरीद केन्द्र पर शाम पांच बजे के बाद खरीद की जाती है। उन्होंने घटना को कैमरे में रिकॉर्ड कर लिया तो वह लोग कहने लगे कि उनके पास वारदाना नहीं है। एसडीएम ने एक बार फिर से नायब तहसीलदार को मौके पर जाकर मामले को सुलझाने का आदेश दिया है।

सीएम योगी ने की इलेक्ट्रिक बस की सवारी

गोरखपुर की बेटी पूजा ने संभाली स्टीयरिंग, बोली-एक दिन प्लेन भी उड़ाऊंगी

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार की शाम गोरखपुर में इलेक्ट्रिक बस की सवारी की। खास बात ये है कि इस बस को चलाने वाली गोरखपुर की पहली महिला बस ड्राइवर पूजा प्रजापति रहीं। इसके पहले सीएम ने नगर निगम के पास शास्त्री चौक से 15 इलेक्ट्रिक बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सीएम को करीब पांच किलोमीटर तक बस का सफर कराकर पूजा प्रजापति बेहद खुश नजर आईं। उन्होंने सीएम से कहा कि आपका आशीर्वाद रहा तो एक दिन प्लेन भी उड़ाऊंगी। पूजा ने बताया कि बस में सवार होने के बाद सीएम योगी ने उससे पूछा कि क्या तुम गोरखपुर की रहने वाली हो पूजा ने जवाब दिया कि हां वो गोरखपुर के ही खोराबार क्षेत्र की रहने वाली है। इस पर सीएम ने कहा कि शहरवासियों को बस में घुमाओगी। तब पूजा सीएम योगी से बोली-'हां महाराज जी, आपका आशीर्वाद रहा तो एक दिन प्लेन भी उड़ाऊंगी।' इसके बाद पूजा बस लेकर आगे बढ़ी। सीएम योगी इस बस से शास्त्री चौक से छात्रसंघ चौराहे होते हुए मोहद्दीपुर तक गए। उनके साथ गोरखपुर के सांसद और फिल्म अभिनेता रविकिशन, पूर्व मंत्री फतेहबहादुर सिंह, गोरखपुर नगर निगम के उप सभापति ऋषिमोहन वर्मा भी थे।

इसके पहले सीएम योगी ने नगर निगम परिसर में आयोजित कार्यक्रम में गोरखपुर की 520 करोड़ की विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। उन्होंने नगर निगम के नवनिर्मित सदन का लोकार्पण भी किया। इस मौके पर मंच से सीएम योगी ने पूजा की तारीफ की और कहा कि आज गोरखपुर को इलेक्ट्रिक बसों की सौगात मिली है। इसमें पहली बस गोरखपुर की बेटी पूजा ने चलाई है। पूजा प्रजापति गोरखपुर जिले की पहली महिला बस ड्राइवर हैं। उन्होंने यह पेशा किसी मजबूरी में नहीं, बल्कि लड़कियों को उनकी ताकत और क्षमता का संदेश देने के लिए चुना है। पूजा कहती है कि उनके इस कदम से लोगों की सोच भी बदलेगी। लड़कियां किसी भी क्षेत्र में लड़कों से पीछे नहीं हैं। उन्हें हर क्षेत्र में बढ़-चढ़कर काम करना चाहिए। पूजा सबसे पहले तब चर्चा में आई थीं जब उन्होंने गोरखपुर में ट्रायल रन के दौरान इलेक्ट्रिक बस दौड़ाई। इलेक्ट्रिक बसें गोरखपुर के लिए नई हैं लेकिन इसमें एक बस की ड्राइविंग सीट पर महिला ड्राइवर का होना लोगों का विशेष ध्यान खींच रहा था। इससे पहले गोरखपुर में कोई महिला बस ड्राइवर नहीं थीं। पूजा ने हाल ही बस पायलट के तौर पर ज्वाइन किया है। पूजा के पिता बेचन प्रजापति सहजनवां में एक पेट्रोल पंप के मालिक हैं। बताते हैं कि पूजा के परिवार की एक ट्रांसपोर्ट एजेंसी भी है। पूजा ने राजनीति विज्ञान से एमए की पढ़ाई भी कर रही हैं। परिवार में कोई आर्थिक समस्या न होते हुए भी ड्राइविंग के पेशे को चुनने के सवाल पर वह कहती हैं- 'मैं महिलाओं और लड़कियों को केवल यह संदेश देना चाहती हूं कि लड़कियां किसी भी मामले में किसी से कम नहीं हैं।

पीयूष जैन के घर खजाना मिलने पर बोले ओवैसी

इसका मतलब नोटबंदी फेल है

नई दिल्ली। अक्टक्ट प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने यूपी के कानपुर में एक व्यापारी के यहां से करीब 196 करोड़ रुपये कैश बरामद किए जाने को लेकर पीएम मोदी से सवाल पूछा है। ओवैसी ने कहा कि नोटबंदी के बावजूद 180 करोड़ रुपए कैश कैसे मिला बता दें कि हाल ही में जीएसटी खुफिया महानिदेशालय (डीजीजीआई) की अहमदाबाद इकाई ने बिजनेसमैन पीयूष जैन के कानपुर आवास और अन्य परिसरों पर छापेमारी की थी, जिसमें कानपुर और कन्नौज में उससे जुड़ी फैक्ट्रियां भी शामिल थीं। इस दौरान जीएसटी टीम को बिजनेसमैन के यहां से 196 करोड़ रुपये की नकदी, सोना और अन्य कीमती सामान मिला। इस मामले पर अक्टक्ट प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने कहा, ₹पीएम बताएं कि नोटबंदी के बावजूद यूपी में एक बिजनेसमैन के घर पर 180 करोड़ रुपए कैश कैसे मिल सकता है पीएम को स्वीकार करना चाहिए कि उनके दिमाग की उपज नोटबंदी पूरी तरह से विफल हो गई है और इसने छोटे उद्योगों और नौकरियों को नष्ट कर दिया है।

गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश के इत्र व्यवसायी पीयूष जैन को रविवार को कानपुर में उनके आवास और कारखाने से करोड़ों रुपये नकद जब्त किए जाने के बाद गिरफ्तार कर लिया गया। आयकर विभाग द्वारा पीले कागज में लिपटे नकदी के ढेर की तस्वीरें वायरल होने के बाद व्यापारी के परिसरों पर आयकर छापेमारी चर्चा का विषय बन गई। जीएसटी इंटेलिजेंस, अहमदाबाद के महानिदेशक के अनुसार, तलाशी के दौरान लगभग 187 करोड़ रुपये नकद बरामद किए थे, जबकि अन्य 10 करोड़ रुपये बाद में जब्त किए गए। इसमें कन्नौज में उसके कारखाने से 5 करोड़ और उसके आवास से 5 करोड़ की जब्ती शामिल है। जैन की फैक्ट्री से बेहिसाब चंदन का तेल, करोड़ों का इत्र जब्त किया गया। खबरों के मुताबिक तलाशी के पहले दिन जब डीजीजीआई और लोकल सेंट्रल जीएसटी की टीम जैन के परिसर में पहुंची, तो वह भाग गया और जांच अधिकारियों के कई कॉल पर दो घंटे बाद वापस आया।

हमने अनुच्छेद 370 हटाया, अयोध्या और काशी में मंदिर बनाए इसलिए नहीं मिलता मुस्लिम वोटः भाजपा सांसद

कन्नौज। भाजपा सांसद का कहना है कि उनकी पार्टी को मुस्लिम वोट इसलिए नहीं मिलते क्योंकि उनकी पार्टी ने अनुच्छेद 370 हटाया और अयोध्या व काशी में मंदिर बनवाए हैं। कन्नौज में एक सभा को संबोधित करते हुए भाजपा सांसद सुब्रत पाठक ने ये बात कही। उन्होंने कहा कि भाजपा उन लोगों का वोट नहीं चाहती जो आतंकवाद का समर्थन करते हैं, पाकिस्तान समर्थक नारे लगाते हैं। कन्नौज से ही भाजपा सांसद ने कहा, ₹हमें (मुस्लिम) वोट नहीं मिलेंगे क्योंकि हमने अनुच्छेद 370 को हटा दिया, अयोध्या और काशी में मंदिर बनाए और मथुरा में भी मंदिर बनाएंगे। भाजपा उन लोगों का वोट नहीं चाहती जो आतंकवाद का समर्थन करते हैं, पाकिस्तान समर्थक नारे लगाते हैं और भारत में शरिया कानून का सपना देखते हैं। समाचार एजेंसी एएनआई द्वारा शेयर किए वीडियो में भाजपा सांसद कहते हुए दिख रहे हैं कि 'मथुरा में भी मंदिर बनाएंगे, किसी को वोट देना है तो दे नहीं तो मत दे।' इससे पहले सांसद ने कहा, ₹भारतीय जनता पार्टी ने अगर मकान दिए हैं तो ये नहीं पूछा कि तुम्हारा धर्म क्या है। भारतीय जनता पार्टी ने यदि शौचालय बनवाए हैं तो किसी की जाति नहीं पूछी, किसी का धर्म नहीं पूछा।उन्होंने कहा, ₹यदि संख्या की बात करें तो 100 मकान बने होंगे तो उनमें से 30 मकान मुसलमानों के भी बने होंगे लेकिन उसके बावजूद भी अगर वोट नहीं देते हैं तो क्या कारण है कि वोट नहीं मिलेगा?₹ सांसद ने कहा कि इसका कारण है वोट नहीं मिलेगा क्योंकि आप लोगों ने धारा 370 को समाप्त कर दिया। सांसद ने कहा, ₹हम लोगों ने अयोध्या में राम का मंदिर बना दिया, काशी में भव्य मंदिर बना दिया।

हम तो वर्चुअल रैलियों के लिए तैयार हैं, बाकी जो आयोग कहे, ओमिक्रॉन पर बोली भाजपा

नई दिल्ली। एक तरफ जहां देश में कोरोना वायरस के नए वैरिएंट ओमिक्रॉन के मामलों में बढ़ोतरी हो रही है, दूसरी ओर देश के पांच राज्यों में अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर राजनीतिक दलों की रैलियां आयोजित हो रही हैं। इस बीच ओमिक्रॉन को लेकर भारतीय जनता पार्टी का बयान सामने आया है। केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा है कि चुनाव आयोग चुनाव रैलियों पर जो हमें दिशानिर्देश देगी उसका हम पालन करेंगे। बीजेपी वर्चुअल चुनावी रैलियों के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि हमने पश्चिम बंगाल चुनाव के दौरान वर्चुअल चुनावी रैलियां की थीं। एक समाचार एजेंसी के मुताबिक शेखावत ने कहा कि चुनाव आयोग हेल्थ सेक्रेटरी और एक्सपर्ट्स के साथ बात कर रहा है। चुनाव कैसे, कब और किन नीतियों के साथ होगा और क्या पांबदियां होंगी ये फैसला करना चुनाव आयोग का काम है। आयोग जो फैसला करेगा वो सभी पार्टियों के लिए सामान्य रूप से लागू होगा। उन्होंने कहा कि कोविड के दौरान जब दुनिया की सभी राजनीतिक पार्टियां हाइबरनेशन में थी उस समय भी इखढ के कार्यकर्ता और पार्टी के सभी लोग वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर काम कर रहे थे।

मालूम हो कि प्रदेश में नेताओं की रैलियों का दौर भी शुरू हो चुका है। इन रैलियों में बड़े पैमाने पर कोविड प्रोटोकॉल का उल्लंघन हो रहा है। कांग्रेस हो, भाजपा हो या फिर समाजवादी पार्टी, सभी दलों की रैलियों में लोग सोशल डिस्टेंसिंग और मास्क की बाध्यता जैसी शर्तों का उल्लंघन करते नजर आ रहे हैं। गिने-चुने लोग ही मास्क पहने नजर आ रहे हैं। बता दें कि उत्तर प्रदेश में 30 प्रतिशत से भी कम आबादी को पूरी तरह से टीका लगाया गया है। वायरस की दूसरी लहर के दौरान यूपी सबसे बुरी तरह प्रभावित राज्यों में से एक था। गंगा के रेत के किनारे दफन और नदी में तैते हजारों शवों की तस्वीरें मीडिया में भी सुर्खियां बटोर चुकी थीं।

पिछले हफ्ते, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने चुनाव आयोग और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों को एक या दो महीने के लिए स्थगित करने और दूसरी लहर का हवाला देते हुए चुनाव से संबंधित सभाओं पर प्रतिबंध लगाने का अनुरोध किया था। जज ने कहा, ₹यूपी ग्राम पंचायत चुनाव और बंगाल विधानसभा चुनाव ने बहुत से लोगों को संक्रमित किया है, जिससे कई मौतें भी हुई हैं।₹ उन्होंने कहा, ₹अगर रैलियों को नहीं रोका गया, तो परिणाम दूसरी लहर से भी बदतर होंगे। हालांकि सूत्रों ने संकेत दिया कि चुनाव आयोग चुनाव कार्यक्रम पर कायम रह सकता है।

राजस्थान में कोरोना की नई गाइडलाइंस

रात 10 बजे रेस्टोरेंट बंद होंगे, समारोह में 200 लोगों को ही अनुमति

जयपुर (एजेंसी)। कोरोना के बढ़ते मामले को देखते हुए राजस्थान में पाबंदियों का नया दौर शुरू हो गया है। देर शाम गृह विभाग की ओर से जारी गाइडलाइंस के मुताबिक नए साल के जश्न पर छूट रहेगी, लेकिन किसी भी तरह के समारोह में 200 से ज्यादा लोगों के इकट्ठा होने पर रोक रहेगी। सिनेमा, ऑडिटोरियम और प्रदर्शनी स्थलों पर क्षमता के 50 प्रतिशत लोगों को जाने की अनुमति होगी, लेकिन कोरोना वैक्सीन की दोनों डोज लगवाने वालों को ही एंट्री मिलेगी। रेस्टोरेंट में रात 10 बजे के बाद बैठकर नहीं खा सकेंगे। हालांकि 24 घंटे होम डिलीवरी की सुविधा रहेगी। इसके अलावा नाइट कर्फ्यू का सख्ती से पालन करने के निर्देश दिए गए हैं। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में करीब 2 घंटे चली मंत्रिपरिषद की बैठक के बाद नई गाइडलाइंस को मंजूरी मिली। स्कूलों को लेकर इसमें कोई चर्चा नहीं हुई। रात 11 बजे से सुबह 5 बजे तक नाइट कर्फ्यू जारी रखने का फैसला हुआ, लेकिन इसे अब सख्ती से लागू किया जाएगा। शादी, समारोह समेत किसी भी सार्वजनिक कार्यक्रम में कलेक्टर की इजाजत के बिना 200 से अधिक लोग शामिल नहीं हो पाएंगे। नए साल के जश्न के लिए नाइट कर्फ्यू में 2 घंटे की छूट दी गई है। यानी 31 दिसंबर की रात को लोग एक बजे तक न्यू ईयर सेलिब्रेट कर सकेंगे। सभी शिक्षण संस्थानों में 18 साल से अधिक आयु के छात्रों को कोरोना की दोनों डोज लेनी अनिवार्य होगी। 31 जनवरी के बाद संस्थाओं और कार्यालयों में दोनों डोज लेने पर ही प्रवेश की अनुमति होगी।

जम्मू-कश्मीरः सुरक्षाबलों और आतंकवादियों के बीच एनकाउंटर, एक पुलिसकर्मी घायल

अनंतनाग। जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले में बुधवार को सुरक्षा बलों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ में एक पुलिसकर्मी घायल हो गया। यह जानकारी पुलिस ने दी। पुलिस के एक अधिकारी के मुताबिक आतंकियों की मौजूदगी के बारे में मिली गुप्त सूचना के आधार पर जिले के दूर के नौगांम शाहबाद में सुरक्षा बलों द्वारा घेराबंदी और तलाशी अभियान शुरू किया गया और इस दौरान आतंकियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ हुई। अधिकारी ने कहा कि तलाशी अभियान के दौरान छुपे हुए आंतकवादियों ने सुरक्षाबलों पर गोलीबारी की। उन्होंने कहा कि बलों ने जवाबी कार्रवाई की जोकि मुठभेड़ में बदल गई। उन्होंने कहा कि शुरूआती गोलीबारी के दौरान एक पुलिसकर्मी घायल हो गया, जिसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अधिकारी ने बताया कि मुठभेड़ जारी है और आगे के विवरण का इंतजार है। कश्मीर में आतंकवाद पुरानी और एक गंभीर समस्या है, जिसमें हाल के कुछ वर्षों में सुधार हुए हैं। आतंकवाद, नागरिकों और सुरक्षा बलों की हत्याओं और आतंकवादी रैंकों में भर्ती की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है। इस साल आतंकवादी रैंक में शामिल होने वाले लगभग 70% युवा या तो मारे गए या गिरफ्तार जा चुके हैं। कश्मीर ने इस साल भारत के राष्ट्रपति, केंद्रीय गृह मंत्री, लगभग 327 सांसदों और 75 केंद्रीय मंत्रियों की मेजबानी की है। इसके अलावा बिना किसी घटना के एयरशो सहित कई कार्यक्रम आयोजित किए हैं। यह दशार्ता है कि कश्मीर की स्थिति में सुधार हुआ है। यह कहना है आईजीपी विजय कुमार का।

'बिन दूल्हा कैसी बारात', अब सिद्धू ने उठाई पंजाब में सीएम उम्मीदवार घोषित करने की मांग

चंडीगढ़। पंजाब कांग्रेस में भले ही हाईकमान 'ऑल इज वेल' करने की कोशिश में जुटा है, लेकिन ऐसा होता नहीं दिख रहा है। अब नवजोत सिंह सिद्धू ने मांग कर दी है कि पार्टी को पंजाब चुनवा से पहले राज्य में सीएम फेस का ऐलान कर देना चाहिए। यही नहीं तंज कसते हुए नवजोत सिंह सिद्धू ने कहा कि बिना दूल्हे के कैसी बारात होगी। सिद्धू ने कहा कि आम आदमी पार्टी ने 2017 में सीएम फेस का ऐलान नहीं किया था और उसे इसका नुकसान उठाना पड़ा था। उन्होंने यह भी कहा कि इस बार हमारी स्थिति भी आम आदमी पार्टी जैसी ही हो सकती है। माना जा रहा है कि उनकी यह मांग पार्टी की चिंताएं बढ़ाने वाली है। न्यूज 18 पंजाबी चैनल से बातचीत में नवजोत सिंह सिद्धू ने कहा, 'कांग्रेस को सीएम फेस का ऐलान करना चाहिए। पंजाब के लोग जानना चाहते हैं कि कौन लीडरशिप करेगा। पंजाब के लोग जानना चाहते हैं कि आखिर किसका रोडमैप राज्य में काम करेगा। सिद्धू ने कहा कि 2017 में आम आदमी पार्टी ने सीएम फेस का ऐलान नहीं किया था और उसे इसका नुकसान हुआ था। इस बार भी कांग्रेस को सीएम फेस का ऐलान करना चाहिए। अब इस बार लोग हमसे भी पूछेंगे कि आखिर बताओ कि आपका लाडा (दूल्हा) कौन है। दो ही चीजें अहम होती हैं कि या तो चेहरा होना चाहिए या फिर मुद्दा होना चाहिए।'

सिद्धू ने कहा, 'पिछली बार आप ने सीएम फेस तय नहीं किया था और उन्हें नुकसान हुआ था।' पिछली बार मैं ही आम आदमी पार्टी पर तंज कस रहा था कि आखिर आपका दूल्हा कहां है। इस बार लोग हमसे भी यही सवाल पूछ सकते हैं। हालांकि सिद्धू ने यह भी कहा कि चुनाव में दो चीजें अहम होती हैं मुद्दा या फिर नेता का चेहरा। यह कांग्रेस हाईकमान को तय करना है कि वह मुद्दे के साथ जाता है या फिर चेहरे के साथ। इसके अलावा उन्होंने पुलिस को लेकर दिए अपने विवादित बयान को लेकर भी कहा कि यदि मेरी बात किसी को गलत लगी है तो मैं माफी मांगता हूं।

गौरतलब है कि पंजाब में टिकटों के बंटवारे को लेकर भी खींचतान की खबरें आ रही हैं।

मुसलमानों के बाद अब ईसाई हैं हिंदुत्व ब्रिगेड के नए टारगेट... मोदी सरकार पर यूं बरसे चिदंबरम

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने बुधवार को मिशनरीज ऑफ चैरिटी के लिए एफसीआरए पंजीकरण को नवीनीकृत करने से सरकार के इनकार का हवाला देते हुए दावा किया कि मुसलमानों के बाद, ईसाई हिंदुत्व ब्रिगेड का नया लक्ष्य बन गए हैं। चिदंबरम, जो कि गोवा के लिए कांग्रेस के वरिष्ठ चुनाव पर्यवेक्षक हैं, ने यह भी दावा किया कि मुख्यधारा की मीडिया ने मिशनरीज ऑफ चैरिटी (एमओसी) से संबंधित गृह मंत्रालय की कार्रवाई की खबर को अपने पृष्ठों से हटा दिया। उन्होंने इसे ₹दुखद और शर्मनाक₹ करार दिया। उन्होंने ट्विटर पर कहा, ₹एमओसी के नवीनीकरण की अस्वीकृति उन गैर सरकारी संगठनों पर सीधा हमला है जो भारत के 'गरीब और मनहूस' के लिए जन सेवा कर रहे हैं।₹ चिदंबरम ने कहा, ₹एमओसी के मामले में, यह ईसाई धर्मार्थ कार्यों के प्रति पूर्वाग्रह और पूर्वाग्रह को प्रकट करता है। मुसलमानों के बाद, ईसाई हिंदुत्व ब्रिगेड के नए लक्ष्य हैं। चिदंबरम ने कल ट्वीट कर कहा था, 'कोलकाता, पश्चिम बंगाल में मिशनरीज ऑफ चैरिटी के लिए भविष्य में विदेशी योगदान को नकारने से ज्यादा हैरान करने वाला कुछ नहीं हो सकता है। यह मदर टेरेसा की स्मृति का सबसे बड़ा अपमान है, जिन्होंने भारत के 'गरीबों और दुखियारो' की देखभाल के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।' उन्होंने आगे कहा, ' गृहमंत्रालय का दावा है कि उसे ₹कुछ प्रतिकूल इनपुट₹ मिले हैं। गृह मंत्रालय को अपने शेरलॉक होम्स जैसे कौशल का इस्तेमाल सांप्रदायिक हिंसा और आतंकवादी गतिविधियों को दबाने के लिए करना चाहिए, न कि ईसाई दान और मानवीय कार्यों को दबाने के लिए।

कोरोना वायरस ने दुनिया में फिर मचाया हाहाकार, फ्रांस में 2 लाख से ज्यादा मामले सामने आए, अमेरिका में भी टूटा रिकॉर्ड

पेरिस। पूरी दुनिया में एक हफ्ते में कोरोना के रिकॉर्ड मामले दर्ज किए गए हैं। राष्ट्रीय डेटाबेस पर आधारित समाचार एजेंसी एएफपी के अनुसार, अत्यधिक ट्रांसमिसिबल वैरिएंट ओमिक्रॉन के चलते कई देशों में बड़ी संख्या में मामले दर्ज किए जा रहे हैं और 22 से 28 दिसंबर के बीच पिछले सप्ताह की तुलना में वैश्विक स्तर पर 37 प्रतिशत ज्यादा मामले दर्ज किए गए। ज्ञात हो कि कुछ ही समय पहले डब्ल्यूएचओ ने चेतावनी दी थी कि कोरोना का ओमिक्रॉन वैरिएंट ₹बहुत अधिक₹ जोखिम पैदा करने वाला वायरस है और दुनिया के हेल्थ सिस्टम को प्रभावित कर सकता है।

22-28 दिसंबर के बीच कुल 6.55 मिलियन मामले दर्ज किए गए, जो विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मार्च 2020 में महामारी घोषित किए जाने के बाद से सबसे अधिक है। वायरस का सबसे बड़ा संकट इस समय यूरोप में देखा जा रहा है। एएफपी के मुताबिक

यूरोप में कोरोना ने फिर एक बार हाहाकार मचा दिया है और सरकारों को अस्पतालों पर से लोड कम करने के लिए प्रतिबंधों को फिर से लागू करने के लिए मजबूर होना पड़ा है। अध्ययनों से पता चलता है कि ओमिक्रॉन से अस्पताल में भर्ती होने का जोखिम कम है, लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अभी भी सावधानी बरतने का आग्रह किया है। पिछले सात दिनों में यूरोप में 35 लाख से अधिक मामले दर्ज किए गए हैं, जिनमें ब्रिटेन, फ्रांस, ग्रीस और पुर्तगाल सभी रोज बड़ी संख्या में मामलों दर्ज कर रहे हैं।

यूरोपीय देश फ्रांस में 24 घंटे में कोविड-19 के 200,000 से अधिक मामले दर्ज किए हैं। स्वास्थ्य मंत्री ओलिवियर वेरन ने बुधवार को कहा कि यह एक नया डेली रिकॉर्ड है। वेरन ने एक संसदीय सुनवाई में बताया कि मंगलवार को 179,807 मामले दर्ज किए थे ।

इजरायली रक्षामंत्री से मिले फिलिस्तीनी राष्ट्रपति, शांति समझौते की ओर बढ़ रहे दोनों पक्ष?

फिलिस्तीन के राष्ट्रपति महमूद अब्बास ने सालों बाद इजरायल में किसी इजरायली नेता से मुलाकात की है। आखिरी बार अब्बास 2010 में इजरायल में इजरायली नेता से मिले थे। अब्बास ने इजरायल के रक्षामंत्री बेनी से मुलाकात की है और कई मसलों ओअर बातचीत की है। इजरायल के नए पीएम नफ्ताली बेनेट फिलिस्तीनी आजादी का विरोध करते हैं और औपचारिक शांति वार्ता से इनकार करते हैं। लेकिन उन्होंने कहा है कि वह फिलिस्तीनी अथॉरिटी के साथ टकराव को कम करना चाहते हैं और इजरायल के कब्जे वाले वेस्ट बैंक में रहने की स्थिति में सुधार करना चाहते हैं। हाल के दिनों में दोनों पक्षों के बीच फिर से तनाव बढ़ा है। वेस्ट बैंक और पूर्वी यरुशलम में दोनों पक्षों के बीच लगातार हिंसक झड़प हुई है। फिलिस्तीन के एक सीनियर अधिकारी ने कहा है कि देर रात हुई बैठक मध्य इजरायल में रक्षामंत्री बेनी गैंट्ज के घर पर हुई। अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा है कि दोनों नेता एक बंद कमरे में बैठक किए हैं।

अखंड भारत संदेश के लिए (स्वामी श्री योगी सत्यम योग सत्संग समिति) क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूसी प्रयागराज उत्तर प्रदेश 211019 से प्रकाशित एवं विपिन इंटरप्राइजेज 1/6C माधवकुंज, कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम योग सत्संग समिति पी.आर.बी .एक्ट के अंतर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदाई। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

UPHIN **29506**